प्राक्कथन

हमें वड़ी प्रसन्नता है कि धार्मिक शिक्षण के लिये कोन्परेम्स की और से नैवार की गई जैन पाठावली के साँतनें भाग की यह प्रथमायृत्ति थी तिलोक रान स्या जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाचर्डी द्वारा प्रकाशित की जा रही है। पाठ्य पुस्तक के रूप में जैन समाज में पाठायली का जो मुख्यांकन किया है यह हमारे लिये हुएं का विषय है। बालकों को जैन संस्कृति और जैन तस्वज्ञान का सरलता से बोधकराने के लिये देंसे मर्चमान्य पाठपक्रम की माँग कीन्परेन्स

से होती रहती थी। फळस्वहप यह पाठावली श्रीधार्मिक शिक्षण समिति हारा थी संतवाह जी से नैयार कराई गई है। जैनद्याला, छात्रालय भैर स्कूली में कमदाः शिक्षण दिया जा मके और उत्तरीत्तर बाहक धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकें इस तरह

इस पाडायली के ७ भाग किये गये हैं। हम आशा करते हैं कि जहाँ २ अभी तक इस पाठावली की अपने पाटपक्रम में स्थान नहीं दिया गया है वहाँ २ सभी स्कल, पाटशाला और छात्रालय यथा द्वीचर इसे अपना लेंगे और बालकों के कोमल

इत्य पर जैस संस्कृति की गहरी छात्र डालने में सहायक बनेंती। आनंदरांग सुराणा धीरजलाल के. तुर्राख्या खोमचंद मगनलाल बोरा. शांतिलाल व. सेठ

> रामनारायण जैन मानद संजी भी. भ. मा. दवे स्था, जैन कॉन्परेन

विघयानुक्रमणिका

दुवालमग-माइप्प समणीवासया

समणे भगवं महावीरे मंग्जे मिरिरोहै व š ٧ लोग-तत्त-सन ų

असंत्रय जीविय ٤ समय गोवम । मा वमावर का मधीगा

e असर राज

मेहकुमारस्य निकलमण

20 ŧ٤ কুণিয-সূত্র

95 युवे-करम भदमणे सेट्टी 83 26 बज्जुणए माजागारे महावारम्य गुणकित्तव 24 2.5

ममस्युत्ते गोमाले 23 योगालम्स भण्य पमाय-मुन 26 15 न माय-मुत्त

अप्यमाय-मुस 70 च उन्विहा समाही 28

88 28

ę i ₹0 24 26 \$ 5

4

80

१२

28 35 Ye

85 ٧¥

(३) विश्वकारची हारेखी स्थापी भीवीत्तीय स्थाप्तवर्गत् व कार्यस्य स्थाप्त संभीति त स्थाप्तवर्गत

ा जैन पाठावली । ॥ जैन पाठावली ॥

[सातवां माग] भूगानाम्म

दुवालसंग्र-माह्प्पे

- इच्चेर्यमि दुवासतमे गरिविडये मणेता भावा अस्ता समारा, मिर्मता हैक, अस्त्रा महेक, सम्ता प्रतिस्था अस्ता अकारसा, अस्ता सीवा घर्नता स्वीता, अस्ता मर्गेनिद्वमा, वर्गता समासिदिया, भागता निद्वा अस्ता असिदिया, वर्गता समासिदिया, भागता निद्वा स्वीता

मार्वमाया देउनदेऽ कार्यमकार्य चव । जीवाऽवीत मदियममदिया सिद्धा मतिद्धा य ।।

्रच्येस्यं द्वालमंगं श्रीमिरिटमं, श्रीष् बाल सर्वता द्वीता बायाव् साराहिषा चाउरते बंबारचंत्रारं यारेवरंतु । प्रस्पण्यकाले परिचा बीईरपुंति, न्यार् शासवों मार्ग (१)

निर्गिये पावयसे बहें बर्य परमहे, सेसे बाहरे बिसिय

फलिहा बर्यगुपद्वतारा विवर्षवेतस्यरप्यतेसा पहाँह सील-ध्वय-गुण्येरामण्-य-वेषसाण्-गोसहीववासिह चाउरस-म्राहिट पुण्यमासिखीस परिपुर्ल्ण वीसर्ड सम्मं अप्युशतेमाणा, समयि तिगरिय कासुप्मणिक्वेणं धासय-पाण-धास-माद-मेणं ध्वयपिडम्गह-मेजन पापपुँखणेलं गीठकत्वम-सिज्ञ संयारत्व्यं सोसह-मेजनेलं विडलामेनाला, अप्लिज्ञ अप्यारंमा बर्गासाहा परिम्या, पम्मालुपा लाव घरमेणं वेष विचि कप्पेमाला विहरित । सुसीसा सुष्ट्या सुर्वि-पानंदा सहाराहोगहिएहि वशेक्रमीहि सप्यार्थ मानेमाया

ामरो। मगवं महावीरे ऋजे सिरिरोहे य

ी प्रति । स्टब्स्ट्रीयुक्त

विद्रंति ।

तेर्पं कालेणं वेथं समर्थनं संग्यंस्य भंगवत्यो महानीरस्य क्रन्देशाती रोदे चार्मं अखगाते प्रमानस्य, प्रमानश्य क्रान्देशाती रोदे चार्मं अखगाते प्रमानस्य, प्रमानश्य क्रान्देशात्, प्रमानश्य क्रान्देशात् क

दिराग सातेसखादाखे उच्चारे समिई द्य । मखानुती वशनुत्ती कायनुत्ती य महमा ॥ एयाओ पंच समिईओ परणस्त य पत्रत्त्वो । गुत्ती नियत्त्वे पुत्ता महमस्येष्ठ सन्यते ॥ पुता पदमखागा जे समं आपरे सुखी । से खिप्पं सञ्चसंसारा, विष्मष्ठपद् पंडिए ॥

प्रहार **असंखयं जीवियं**

षसंखयं जीवियं मा पनायय, अरोबणीयसा हु निस्य नाणं।
एवं विज्ञाणाहि जले पनचे कं जु विद्धिता अज्ञया गाँदित ।
विचेण ताणं न लने पनचे हमेंनि लीए अदुषा परस्य।
दीवपण्यहे च क्ष्मचेनमोहे नेयाडमं दुष्टुबरहुनेव ।।
तेण जहां संपिष्टुदे गाँदीए सरुस्पुष्टा किच्यद पादकरारी।
एवं पपा पेच्च हुदंच लीए कहाण कम्माण्य नोमगु अविया।
संसारमावस परस्य अहा सम्माण्य नोमगु अविया।
संसारमावस परस्य अहा साहार्या जं च करेड फर्मं।
कम्मस्स ते तस्स ज वेयकाले न पंचना पंचनपं जवेति।
सुचेसु मा वि पडिचुद्वजीवी न वंसिसे पंडिए आसुपमे।
धोरा सुचुषाः अवतं सरीरं मार्रह्वस्थी न वरिष्टुमा

सन्ना इह काममुच्छिया मोहं जैति नरा व्यसंबद्धा ॥११॥ संयुज्यतः ! किं न युज्यतः ? संबोही खलु पेच दूलहा । मो ह्वयमंति सङ्ग्री नी सुलमं पुखरावि नीवियं ॥१२॥ दूष्परिश्वया इमे कामा नो सुजहा व्यघीर-पुरिसेहिं । बह संति सुव्यया साह जे तरीत बतर विखया वा ॥१३॥ श्रसरसं

बधुवं जीवियं नचा सिद्धियम्यं विषाणिया । वेखिद्यएउन भोगेसु आउं परिमिधमप्पणो ॥१०॥ पुरिसो रम पावकम्मुणा पलियंतं मणुपाण जीवियं ।

विचं पसवी न नाइमी तं वाले सर्गं वि मध्य । एए मन तेस वि आई नी ताणं सरशंन विज्ञह ॥१॥ जम्में दुक्खं जरा दुक्खं, रीगाणि मरणाणि य

बहो दुक्खो ह संसारो बत्य कीसंति जंतुलो ॥२॥ इमं सरीरं श्रिक्षां, श्रमुदं श्रमुद्दसंमवं ।

असासया वासविणं दुवल-केसाण मापणं ॥३॥ दाराणि सुपा चेव मित्ता य तह बंधवा । जीवंतमणुत्रीवंति सर्वं नाणुवयंति य ॥॥ मेया अंदीया न भवंति ताणं शुचा दिया नीति तमें तमेणं।

सन्ना इद कामप्रचिद्धया मोहं जंति नरा व्यसंत्रहा ॥११॥ संयुज्यह ! कि न युज्यह ? संबोही खल पेच दलहा। नो हुवलमंति राह्यो नी सुलमं पुलरावि नीत्रियं ॥१२॥ दुष्परिचया इमे कामा नो सुजहा अधीर-पुरिसेहिं । घह संवि सुन्यवा साह जे तरंति ध्वतरं विखया वा ॥१३॥

धपुर्व जीवियं नचा सिद्धिमर्गं विषाणिया । विशिद्यएउत्र मीगेसु बाउँ परिमिधमप्पशो ॥१०॥ पुरिसो रम पावकम्मुणा पलियंतं मसुयास लीवियं ।

श्रसरग्रां विचं पसवी न नाइमी तं वाले सरणं ति मझड ।

एए मम वेस वि बाई नी वाणे सरखेन विज्जा ॥१॥ जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य ।

श्रद्दो दुक्खो ह संसारी बस्य कीसंति जंत्रणो ॥२॥ इमं सरीरं अणियं, असुदं असुद्संगवं । श्रसासया वासविणं दुवल-केसाण मापणं ॥३॥ दाराणि सुवा चेत्र मित्ता य तह गंधता । बीवंतमणुत्रीवंति मयं नाणुत्रयंति य ॥४॥

षेपा श्रंदीयां न मर्वति ताणं मुचा दिया नीति तमं तमेणं !-

थप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहास य शहास य। थप्पा भित्तमितं च, दुप्पद्विय सुप्पद्विथी ॥२॥ थप्पा चेत्र दमेयन्त्रो, श्रप्पा ह खल दहमो। थ्यपा दंतो सुद्दी होह, श्रस्ति स्रोए परत्य य ॥३॥ वरं मे अप्पा दंतो, संजमेख तवेश य । माउई परेहिं दम्मंतो यंधगेहिं बहेहि य । ।।।। वो सहस्सं सहस्याणं संगामे दज्जए जियो । एगं जिलेज्ज अप्याणं एस से परमो जन्मो। ४।। श्राणाणमेव जुल्साहि, किंते जुल्मेख परमञ्जी । श्रणाणमेव श्रणाणं जहता सहमेहए ॥ ६॥ पंचिदियाणि कोई मार्ण मार्य तहेव लोई च ।

दूरजयं चेव अप्पाणं सव्यमप्ये जिए जियं ॥७॥ न वं बारी कंठच्छेचा करेइ, जं से करे अप्यक्तिया दुरप्या । से नाहिर मसपूरं त पचे पच्छाणुतावेण दयाविह्यो ॥=॥ षस्सेवमप्पा उ इवेज्ञा निन्धियो चइज्ज देई नहु धम्मसासर्ण। र्व तारिसं नो पथलेंति इंदिया उवेति वाया व सुद्रंसणं गिरि ।।६।।

अप्पा हु खलु सवयं रिक्लियन्त्री सन्तिदिएहि सुसमाहिएहि ।

अरिक्सभो बाहपहं उच्चेह सुरक्तिसभो सन्बद्दक्ताण

सुबह । १०॥

सरीरमाहुः नावति सीवो युव्दह . नाविभी ।

संसारी अपणवा बचा व वरंति महेसियो ॥१

सावयां भाग (१५)

तए पं से मेडे कुमारे समग्रस्स भगवको महाबीरस्स श्रन्तियाश्रो उत्तरपुरत्थिमं दिसिमार्गं श्रवक्कमति श्रवकः-मिचा सबमेव श्रामरणमञ्जालंकारं श्रोग्रयति ।

रूप णं से मेहकमारस्य माया इंसलक्ष्यक्षेणं पडसाड-

एएं भागरणमञ्जालंकारं पडिच्छति पडिच्छिता हारवारि-धार सिदंबार-छिलम्चावलिसगासाई अंस्थि विशिन्म-यमाणी विश्विम्ययमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी फंदमाणी, विलवमाणी विलवमाणी एवं वयासी-जितपन्त्रं जाया ! घडियन्त्रं जाया ! परक्रमियन्त्रं जाया । अस्मि च णं अड्डे नो पमादेपव्यं । अम्हं वि णं एमेव मांगे भवउ ति कड्ड मेहस्स क्रमारस्स व्यम्मापियरो

समणं मगर्व महावीरं बंदंति नमंसन्ति वन्दिचा नमंसिचा जामेव दिसि पाउच्यूया तामेव दिसि पहिगया । . तए णं से मेडे कमारे सबसेव पंचमुद्धियं लोयं करेति करिता जेणामेव समयो मगर्न महावीरे तेणामेव उवा-गिरिञ्चता समणं भगवं महावीरं तिक्खती आयाहिणं पया-दिणं करेति करिचा यन्दति नमंसति यन्दिचा नमंसिचा एवं वयासी-

क्रालिते में भीते! लोए, पलिचे में भेते! लोए, आलिच-पलिचे णं मंते लोए जराए मरखेख म । से जहा- सातवीभागः (१७)

वप् यां से चेडप राया इसीते कहाय लडिहे समायो नय महार नय चेड्छह कासीकीतलमा अद्वारस वि गया-रायायो सहीवित सहाविता एवं वपासीः—

ि एवं खुल देवाशुलिया ! बुद्धे ड्रंपारे इथियस्त रहो असंबिदिते यो सेयवार्ग अद्वासंवर्ध च हार गहाय् इहें हर्यमागते । उप यो क्षिपणे सेयवगस्य अद्वास्त्व केंद्र वे बीद्वीर्थ ततो दूर्या येसिया हो व अप हमेर्ग करवार्ण पिड़-सेहिया । तप यो से क्षियर मार्ग प्रयोग्द्रे अपहित्तवार्णा चाउरिमणीय सेवाय सहिरसंवरिवडे जुडक्सनके हुट हच्च-

मागच्छर । तं कि खंदेवाखुष्पिया ! सेयवार्ग अद्वारसर्वकं कृषियसस् कोः पर्यापिकामी वेदक्षं कृमार्प ऐसेमी उदाहु खुष्मित्या । राग तर्प खंनव महार्श्वनय लेच्छर कीसी-कोसलगा अद्वा-रस्त कि महार्यापिका चेटगरार्थ पूर्व वयासी-

न एपं साभी ! छुतं वा पत्यं वा रायम्सिसं वा उं पं सेयपारं अद्वारस्मर्वकं च कृषियस्स रहो पत्राप्तिखाति वहेद्वे च कुमारे सरणागते पेसिआति । तं वहंगं कृषिए

राया चाउर्रीगर्णीए सेट्याए: संदि संपर्खिडे ु

त्तर णंते दोन्ति वि रायायो रणभूमि सङ्जाविचा रणभूमि जयति ।

त्तर णं से कृष्णिए वेविसाए दंति-सहस्सेहिः ज्ञाव'मंखस्सकोडिहि गरूलवृहे रएवि रहचा गरूलवृहेख रहमूत्तं संगामं उनायाते ।

रदेशील सनाम उनायात । तर्प में ते चेड्रप राया सतायन्ताप मणुस्तकोडीहिं सनडबूट रपति संगडबूटण रहमूसलं संगाम उनायाते ।

तए ण से दोन्नि वि साईथं कविषया संन्यद्वा परिपा-उदयदरचा पगारपदि कवणेंदे निकडादि असीदि अंदागयदि द्वयदि समीदेदि च चण्दि समुन्तवचेदि सरेदि समुज्य स्विवादि बादादि ' जियानुरेण' चण्डमायेखं महत्या सक्कट्ट-

ालताह वाहाह 'कियानस्य वर्षमाध्य महाया जीवह-बीर्तावरील-कलंकल रवेणे, संह्यस्थपूर्य दिव वर्रेगांचा हैयोग्या हेय्यासीह पायप्या पायपजीह 'सहप्या रहेपजीहे पायजिया पायजिएहिं अन्तसन्तिहें सहि संपत्तागां यादि होरेया।

प्रधः हर्षः वं ते दोण्दः वि ताईणै व्यवीया खियगसामी साप्तश्रोखुरचा महया जयक्यपै जयपदे जयपदि जयपम्दर्य खण्डीवहरूपं री जर्वेवकर्षपवारमीमै हिंदरवदमै व्यवस्था अभागमेर्यं सर्वि खण्डम्बेंदे री रि स्थापक स्थापिक स्थाप श्सातवाँ माग (२१.)

, तए णं.तात्रो मर्पावीस्ट्राती बन्नग क्याई धरिगंसि ।चिरव्यमिपंति सुनिवाणः संकाणः पृत्रिरत्वपाणुतीत विसंत-पिडिणिसंतीत सभाणीत दुने कुन्मगः क्यादारत्यी त्यादारं ,पृत्रेसमाणाः सच्चिनं अर्थानं वृत्तरित, तस्सव पर्पगतीस्ट्रहस्स परिपंतिल सन्वर्ताः संभवा परिपोलेमाणाः विद्यं कन्येमाणाः ,विद्यति ।

्रविहरित । अन्य ने न्यायसिवालमा बाहारत्या चाहार्रे गयेत्याया मालुग कच्छामा विकासमाति पित्रकार्मित पित्रकार्मित पित्रकार्मित पित्रकार्मित पित्रकार्मित प्रतिक्राम भित्रा लेखे मुर्ग्यभीर तहे तेखेव उदागच्छति उदागिक्ष्या चर्सिय मर्ग्यभीरहरस्य विविद्यति परिचालेमाखा परिचाले-साखा विचि कृत्येताया विहरित ।

रिकार प्रति विकास के क्षेत्रय पासीव पासिया क्षेत्र के क्षम्मा विवेष पहीरित में मण्याए । क्षित के क्षम्मा विवेष पहीरित मण्याए । भारत पर वी के क्षमा वि पासियात्वर पत्रकाचे पासीव भारतिया मीतात्वरा वसिया अन्यामा संगतमा, इत्ये भूगविषा मीतात्वरा वसिया अन्यास संगतमा, इत्ये

निष्यं निष्यं विद्यालया विद्यालया स्वाधित्या है। स्वाधित्या हिन्द्र विद्यालया है। स्वाधित्या निष्यं निष्यं निष्यं है। स्वाधित्या निष्यं निष्य

सातर्वो मार्ग (२३)

शीखियं वातिव। वातिका तिग्यं चवलं तुरियं चंडं नहेर्दि दंतिह कंवालं विहार्जेति । विहार्द्धिया वं सुम्मगं जीवि-याचो वयरोजेति वयरोतिचा गंगं च सोखियं च खाहारिति । प्यामियं सम्याउसो । जो बान्हं निग्गंबी वा निगांबी वा बावरियउरज्जावाणं कंतिए प्रजातिए समाखे पंच य

से देशियाई अगुत्ताई भवित से खं हह भवे चेव पहुर्ण सम-धार्ष यहणं सम्बंधिं साववाधं साविवाधं हीसियाजे वर-स्रोमे वि च में आगच्छति बहुणं इंडमाणं संसारसंतारं स्राधुरित्वहित, बहा से कुम्मण अगुर्धिद्ध । तर खं से पावसियालगा जेथेव से दोगण् कुम्मण् सेवेद दवागच्छति उजागच्छित्वा तं कुम्मणं सब्दासी सर्मश

जन सेति अस्पुडिवि
जाव यो चेद में संवादित करेता ।
तेद में ते पार्टियासमा होने पि तर्च पि
जाव यो ते पार्टियासमा होने पि तर्च पि
जाव मी संचादित तर्द्धा अस्पारस कियि आवाह पा
गागह पा आप अपिक्यों में सर्चाप ताह सेता तेना परितेता निर्देश्यों सुमान्ता आये हिसि पाउन्ध्रमा तामव
हिसि पहिनामा ।
हिस्स पहिनामा ।
हिसस पहिनामा ।

सातवाँ भाग (-२१)

विदरह । यं मन्द्रामि णं [0] यंदामि" । एवं संवेदह संविद्दिना जेखेर क्षम्माविषरो संवेत क्यानन्द्रह । उपागन्द्रिया करपद [0] क्यांति कड् पूर्व वपासी "पूर्व खतु क्षम्म— पाक्षो समय [तार] विदरह । सं गमन्द्रामि णं समयं भागं

याध्ये समये (जाव) विद्राह । सं मञ्ज्ञायि यां समयं मनार्थ सहावीरं पंदायि नर्मशायि [जाव] पञ्जावासायि ।" तए यां सुद्रीनणं सिद्धि व्यवमाविषरा एवं बयासी 'एवं खजु पुता ! व्यवस्थायां सालायारे (जाव) घाएमाखे विहरह । सं सा यें प्रचा ! समर्थं अगवं सहावीरं बंदए निमञ्ज्ञाहि ।

माणं तव सरीरयस्स वावची भविस्तह । तुम्वर्णं इह्याए चेव समणं मगर्यं महाबीरं चंदाहि नर्मताहि ।"

तए याँ सुर्दसखे सेट्टी अन्माधियाँ एवं ववासी—फिर्मा याई अम्मवाओ समर्ग अवर्ग सहावीर इहमावयं इह पर्च हह समोसर्व इह गए चेत्र वंदिन्सामि १ । तं गच्छामि यां यादे अम्मवाओ तुन्भेहि अन्माणुरखाए समाखे सगर्य सहावीर वंदए।" तए यां मुद्रसणे सेट्टि अम्मापियरी जाहे यां संवार्यते पहाँद आपत्रखाहि (आत) पहनेवय वाहे एवं वयासी ''आहा-

तंत् म से सुद्देसचे अन्मापिउदि अन्मणुषचाए समाचे पढाए सुद्वरपादेसाई (जान) भिचा पापनिद्वारचारेण रागगिई

मुद्दं देवाणुष्यिमा । मा पहिचंचं करेह ।"

रेणं सिद्धं समर्ग मनर्ग महावीरे सुर्दसणस्य समखोवासगस्य प्रजुलवस्स मालागारस्य वीसे व [०] पम्मकहा [०] सुर्दमखे पडिराए ।

तए पं से अजुलए मालागारे सम्रावस्य मगवामी महाधीरस्स कंतियं धर्म तीचा निसम्म [हहु.] "सरहामि र्ण कंति ! निग्गंचं पाचवर्ण [जाब] अन्धद्वेषि । श्रहासुर्ध देवास्स्पिया ! मा पडिबंचं करेह ।"

तए शं से अअ्षए मालागारे उत्तर [0] अपमेव

पंचहित्यं तीर्षं करें । करिया [जाव] क्यांगारे जाए [जाव] विदर्स । तए णं से करतुष्ण क्यांगारे जे चेव दिवसं सुत्रे [जाव] पत्नदर्श ते चेव दिवसं सुत्रं भावा महावीरं मंदर नर्मत्रः । विदेशा नर्मास्त्रा सुत्रं एपारूणं क्यांगायं होन्यदर्श । कप्पर में जावजीवाए क्ष्टुंकट्रंणं क्यांचित्रवर्षेण त्रोक्तम्मणं क्रप्याणं भावेशायस्य विदरि-षर । ति कट्टु व्यावेशास्त्रं व्यत्मित्रासं क्रांमीरिहशा जावजीवाए [जाव] विदरः । तए णं से क्षण्डेषण् क्यांगारे करें । व्यत्माप्ताण्यास्त्रं व्यत्मित्राणं क्यांचार्यं क्षरे स्वयं व्यवद्याप्त्रं क्यांचार्यं स्वयं स्वयं व्यवद्याप्त्रं भीरीसीए सण्क्रापं करें । वद्मांचार्यां विद्याप्त्रं भीरीसीए सण्क्रापं करें । वद्मां नेपास्त्राभी [जाव] क्यं ।

तए एं वं चन्त्रणयं अणुगारं रायगिहे नपरे उच

तप् पं से अरमुक्ष् अव्यारि तेषं भोरातेषं प्रवेषं परगहिष्णं महासुमागेणं तत्रोक्तम्मेणं अप्याणं मावेमाणे वह-पुण्णं सम्मासे आगण्यारियाणं पाउत्यह । पाउत्यिचा अद्ध-मामियाप् संतेहणाप् अपाणं कुतेह । कुनिया तीर्स मचाई अवश्याप् सेंदेहणा संतालकुतिहास् कीएह [बाय] सिद्धे ।



महावीरस्स गुराक्तित्तरां

तद में से गोसाले मंदालिवृत्ते सहालयुत्तेणं समयोदा-सदमं अयाहाइन्त्रमाणे अवरिताखिन्त्रमाणे पीत-फलग-सिन्त्रासंपारद्वपाद समयस्स अगाओ महावीरस्स ग्रुय-किचर्णं करेनाणे सहालयुत्तं समयोत्रासयं दर्भं यससीः—

'समणे भगनं महावीरे महामाहणे'

से प्रेराष्ट्रणं देवासुणिया ! एवं युच्यद्-'समये मार्ग महाबीरे महाबाहणे, वर्ण खनु सहाराष्ट्रचा ! समये मार्ग महाबीरे महाबाहणे उपण्यावत्यव्यव्यव्य वाय महिय-दृष् वाय वधकम्मर्धयवार्थयत्रचे से वेखट्टेणं देवासुण्या ! 'एवं युवर-

(1,25,)

स्रातवीं भाग

विवण्यं ६.रञ्जनस्याभिभृष् अष्टविह्यस्मयवभवहलप्रिटल्क्स्रे यहिंद्दं बहेदि य जाय वायास्टादि य जाउरना यो संमारसंजा-राबो साहत्या मिल्यादि, से सेल्ड्रेणं देवस्पुर्त्या ! एवं पुतार्—'समणे भगर्यं महायीरे सद्दायम्मक्दी' । के णं देवासुर्णिया ! महानिस्नाकष् !

भिङ्जमारो लुप्रमाणे विजुष्पमासे :उमग्मपटिश्चे सप्पह-

नंखिनपुत्ते गोसाक्षे

तेणं कारोणं तेणं ममएणं सावस्यां नामं नमरी दीस्या, समझो । तीते पं सादत्योए नगरीए वद्दिया उचरपुरच्छिने दिक्षिभाए तस्य यां बंद्दिए नामं चृरए दीत्या, वसझो । सातवाँ भाग (\$4)

तए वं से गोसाले मंत्रलि पुत्ते तेवं अहंगरम महानिमि-त्तरम केण्डउद्वीयमेचेणं सावत्थीए नगरीए श्रविखे तिराध-लावी अलगहा अरहणलाती अफेनली केनलिणलाती, श्रमध्यन्त् सब्बन्द्रश्लायी अजिखे जिखसर् वगासेमाखे

विहरह । तर में सावस्थीए नगरीए सिंघाडम आव पहेंस बहुजगी

श्रमममस्स एवमाइक्खर जाव एवं परूर्वति -- 'एवं खल देवाणुष्यिया ! मोमाले मंखलिपुचे त्रिये त्रियपलाबी आय-पगासमाणे विहरति, से कहमेयं मन्ने एवं' ? तेथं कालेखं रोगं सनएगं सामी समोसरे, जाब परिसा पडिगया । तेणं

कालेणं तेणं समर्गं समयस्य भगवन्नो महावीरस्य जेट्रे श्रंतेवासी इंदभूती सामं श्रसपारे गोयनगोत्तेणं जाय छुट्ट जहेर्ण एवं जहा विवियमण वियहदेसए जान-प्रहमासे षरुअणसर्'निसामेति, बहुत्वणो अध्ययसम एवगाःस्यः। एवं खलु देशाणुष्पिया ! मोसाले मैखलिपुचे जिए

जियापलावी जाव-प्रमासेमाखे विहरति, से कहमेर्प मझे पर्य १ तए हो समर्थ नोपसे बहुउख्सम कंतिय एकई सीखा निसम्म जाद-जामझड्डे जाद-मचनाणं पढिदंसिन, जाव पज्जासहारों एवं नेपासी—"एवं खलु बाई येचे ! छहुं० तं चेत्र जात-जिणसद् पगावेमाणे विहरति । हे बहुमेर्प

वेशेत्र उतागच्छा, ते० २-च्छिचा गीनहत्त्वस माहणस्य गोसालाए एगरेग्रंम मंडनिक्सेर्रं करेति, मंड० २ करेचा मरवर्षे संनिचेसे उच-शीय मजिक्रमाई ब्रह्माई घरमप्रदाश-श्मभिवतायरियाए श्रद्धमाणे चमढीए गव्यद्यो सर्मता मग्गण-गवीसर्ण करेति, वसडीए सुव्यक्षी समैता मम्मख-गवीसर्ण करेमाणे बदस्य धमहिं बलममाणे तस्मेव गोपहुस्स-माहणस्य गोसःलाए वगदेर्यमि वासावासं उपागए । तए गं सा महामारिया नवण्डं सासाणं बहुपिडाइनार्खं श्रद्धदुमाण राइंदिवाणं धीनिकर्द्रशाणं सक्तवालः लाव पडिस्पर्यं दाशां पपाया । तए में तस्य दारगस्य श्रम्माविषरी एकारसमे दिवस बीतिवदी जाव बारमाहे दिवसे अधमेष हवे गाण गुण्निपहरनं नामधेर्त्रं करेंति —''जम्हा वं ग्रम्हं इमे दाएए गीरहलम्म मार्थस्य गीमालाए जाए तं होड वं अर्म्ह इमेरन दारगरस नामधेर्ज 'मोशाले' 'गाताले' वि । सर र्णं तस्स दारगस्य ' ब्रम्याविवरी नावधेओं करेंति ' 'गीपाले'-ति । तए एं गांसाल दारए उम्प्रक्र्यालमाने निष्णाण परिसायमेलं जोव्यसमामायान्ने सम्मेव पाटिएकर्म चित्तपालगं कांति, सपमेप २ कांचा चित्तफलगहत्यगए मैखनणेणं थपाणं मानेमाणे विहरति ।

जान समुष्यजित्था यो राजु यह जिये, जिय्प्यलाबी, नाम जियसई परासिमाये निहरति । बहु में गोसाले चेत्र मंसलिपूर्व समयापायम्, समया-

मारए, समचपडिखीए, चायरियउँबङकावार्ण चायसकारए. श्रवनकारए, अकिचिकारए, बहुद्दि असम्मावुम्मावणार्दि मिच्छताभिनिगेसेहि व अप्याणं वा परं वा तदुभयं वा पुरादमाणे युप्पादमाणे विहरित्ता सदर्णं, लदर्णं अन्नाहट्टे समाणे झंती सत्तरत्तस्य वित्तदारवरिगयसरीरे दाहवक्कं-तीए छउमस्ये, चेव कालं करेस्सं । समणे भगवं महावीरे जिणे जियापालांकी जाव जिससदं प्रगासिमासे विहर्र'-एवं संपेहिति एवं संपेहिसा ब्राजीविए धेरे सहाबेह का० २ सद्दागेचा उद्यावयसवहसाविष्ट पकरेति । उद्या॰ २ पकरेचा एगं वयासी--'ना खलु आई जिणे जिलापलावी, जाय पगासेमाणे विहरह (विहरिए) बहुन्नं गोसाले मेंखलियुत्ते समग्रायायण, जाव छउमस्ये चेत्र कार्ल करेस्सं. समग्री मगर्न महार्वारे जिसे, जिसप्पलायी, बात्र-जिससदं पगासे-माणे विहरह, ते तुन्में णे देवाखुव्यिया ! समें कालगर्य जाणेता, बामे पाए सुंबेख बंधह, बा॰ २ बंधिता तित्रसुची मुद्द उच्युद्दण, ति॰ २ उच्युहित्ता, सावस्थीण नगरीण सिंघा-डग० जाव-पहेंसु आकरविकहिं करेमाणा महया महया

दिगं च कामा 'समिप्दर्गति, ;

दुर्भ बहा साउफले व बबली॥

रूने विरमी रेखमी विस्तानी, एएस दुक्खोंहवरवरेसा ।

म जिप्पर मवमञ्मे वि संती,

ं जलेग वा पीप्तरारिणी पलासं श युविदिपरया य अगरम 'श्ररथा,

दुमखस्स हेर्ड मणुपस्य समिया ।

ते चंव थोवंवि कवाह दूक्खं,

न वीपरागस्स करेति किथि ॥

न कामगोषा समर्थ छनिति, न यावि भोगा विवहं उर्वेति।

ने तप्रक्रोसी स परिमाही व,

सी तेत् वोहा विगर्ध उपेर ॥ पाषाइकालणसङ्गसः एसी,

सन्तरस दुनलस्य वजीवरागमा ।

वियाहिक्यों ज' सम्रविध सर्वा, क्ष्मेख कवंत सुदी सर्वति ॥ जहा साही तहा स्रोहो, स्राह्म सं

लाहा चोही पत्रहु६ (दो मास−कर्ष कर्ज.

कोडीए विन निष्टियं॥

ष्पद्दे वर्षति कोदेख,

माखेल भइमा मई ।

मापा गरपडिन्याओ,

सोहाको दृहको वर्ष ॥ सुवराग-रूपस्त उ वन्त्रवा महे,

सिया हु फेलाससमा असंख्या।

बरस सुद्वस न तेहि किंचि,

इन्द्रा हु आगाससमा अवंतिया॥

पुरवी साली जना चेन, दिरएषं पशुभिस्मद ।

पडिवृष्यं मालमेगस्म,

इंट् विक्रा तर्व परे ॥ ११ स मार्च म बहेब सार्यः

कोई न मार्ग म वहेर मार्ग, सोमं चउत्यं मनमत्यदीमा ।

शास पारत अन्यः वहाता युगस्य वंता अरहा-महेसी,

एमामि वंता कारहा-महेसी, संदुब्बड पावं न कारहेड ॥

न : इस्यह पापं न कार्रेह ।

17'-

एकोवि पाराई विवज्जपंती, विहरज्ज कामेसु आसज्जमायो। ॥ जाई च् चुड्डि च इहऽज्ज पास, भूपहिं मार्च पहिलंह जाले । तम्हा उरिवज्जो परमं ति नचा, मस्पचर्दसी न करेई पार्व ॥ न बम्मूला बम्म सुर्वेति पासा, ध्यवस्मुला बम्म स्वरंति पीरा। मेहावियो। सोमस्पावतीता, संतोसियो न पबर्देति पार्च ॥

चडिवहा समाही

सुर्ग में भाउमी । तेर्ग मगदया एवमक्वार्य । इह सन्तु थेरेदि मगवेरीहे चचारि विव्ययसमहिहाया पश्चमा । कपरे खन्न वे थेरेदि मगवेरीहि चचारि विव्ययसमहिहाया प्रमुख १ ।

स्मे वृत्तु ते वेर्रेहि भगवतिहि चचारि विवाय समाहि-इत्या पत्रचा । तंत्रहा — रिवयसमाही, सुब समाही, तव समाही, आयार समाही ।

विण्ए सुए व तने, चावारे निच पंडिया । श्रमिरामयंति अप्यार्ण, जे मर्वति जिहंदिया ॥१॥

चउन्दिहा खलु विखय समाही मन्द्र, तं जहाः—श्रख सामित्रजंतो सुम्मम् । सम्मं संपहित्रजह । वेयमाराहर्। न प

(81) ातवाँ भाग व्यक्षों विष्यमुक्ते। स्रमिगम चुरहे 🚎 े ऋषुखागर्म गए ॥ Ping . विउलिंदियं मुराचं 💌 Fee 17-1 बार मरखाओ हरू ! दुच्चरं । PRICE सिद्धे था इता 🚃 ाक्खुखो ॥ Htx. जगे । पत्रं ॥ त्यां दक्रर ॥ , जणं दुक्कर ॥ पालिए । पाए (सन्त्रणा । हाथीरस्त सद्बक्रं ॥ नेरगंधे वार क्टर्स ,मीयखवरत्रमा । गेएण ्र^{्टिक}्यो सुदुक्कर ॥ पेहुंडे वय 🗱 न्तरम् ं संसम् वेपणा वन्समेव च ॥ बह **⊣-परिसहा**ः ∤ पह अलामगाँ रो मेगा

द्विहं खरेऊरा य धुरायपार्व, निरंगये सम्बन्धी विष्यप्तकते । तरिचा सप्तरं व महामनोधं, 'सप्तरपार्वे' अपुष्यागर्म गए ॥

DODDEGGO

सामरासां

र्शं विवनम्मावियरो, सामवर्थं प्रच ! दुब्बरं । ग्रणाणं त सहस्ताई, घरियन्वाई मिक्खणी ॥ समया सञ्चभूएस्, सत्त्विसेस वा जमे। पाणाहवायविरह, जावज्जीवाय दक्तरं ॥ निच्चकालप्यमनेणं, ग्रुतावायविज्ज्ञणं । मासियव्यं हियं सच्चं, निचाउत्तेख दुकरं ॥ दंतसोहरामाइस्स. अदत्तस्स विचण्जणं । श्राचनजोसणिजनस्स, गियहणा अवि दक्कर्र ॥ विरई अर्थमचेरस्स, काममोगरसन्तुखा । उगर्ग सहरुदयं वीमी, घारेयर्ज्य सुदूबकरें ॥ चडविब्हे वि बाहारे, राहमीयखबज्जला । संतिही संबक्षी चेव, बज्जेयन्त्री सदस्कर ॥ छहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मंसग वेयणा । श्रकोसा दक्खसेका थ, तथाफासा बन्लमेव च ॥ तालना तजणा चेत्र, वह-वंध-परिसहा । दक्यं भिक्छायरिया, जायणा य भलामया।। श्रकरंडुयक्यागरूवगनिम्मलसुजायनिरूबहयदेहवारी, श्रह-सहस्मविडयुण्यवरपुरिसलक्खणवरे, सण्ययवासे, संगय-पासे, सुन्दरपासे, सुजायशासे, नियमाइयशीखरइयपासे. उज्ज्ञपमममदियज्ञचतश्चकसिया गिद्धभाइजलडहरमणिज्ञ-रोमराई, सत्तविहगसुजावपीयकुच्छी, ऋवीवरे, सुइकरणे, पडमविषहणामे, गंगावचगपयाहिणायचनरंगमंगुररवि-किरखनरुखबीहियमकोसायंतप्रतमं बीरविवडखाभे, साह-यसोर्णदग्रसत्तदय्यण शिकरियवरकणगच्छहसरिसवरवहर पिलयमञ्मे, पष्टर्यवस्तुरगसीहबस्बङ्घिकडी, बरतरगस्त्राय सुगुज्कदेसे, बाइएण्डउन्निखह्मलेथे, वरवारखतुल्ल दिक पिस्तियगई, गयससणासुत्राय संनिमोह्न, सम्रुग्गणिमग्य-गूरजाण्, एणीकुकविदावत्तरहाणुप्यवेषे, संदियसुति-लिहु (विसिष्ठ) गृदगुण्के, सुप्पद्दिवकुम्मचारुवलयो, श्रणु-पुच्यससंह्यंत्रसीय्, उच्छयवत्युतंत्रसिद्धस्थे, रचुप्पलग्य-मउपमुकुनाल-कोमलवले, बहुसहन्सनरपुरिसलक्खणधरे, मगरसागरचक्कं कदरंगतंत्रलंकियचलये विसिञ्जलने, हुमनहनिद्ध्यज्ञलिय तडिवाउम नरुखरवि किरख सरीरतेष, अशासवे, अममे, अक्रिचरी, विकसीए, निरुत-लेवे, ववगयपेमरागदीसमोहे, निम्पंथस्स पनयणम्सदेवए सत्यनायमे, परदावर, समलपई, समलेगविद्वरियद्विए, चउत्तीसबुद्धवपणाइसेसपचे,

(20)

तवाँ भाग

दंतमोहणमाइस्म ऋद्त्तस्स विवज्जणं । यणवन्त्रेसणिन्यस्य गिण्ड्या अवि दुक्तं ॥ विरई अवंगर्चेरस्स काममीगरसन्तुगा । रुग्गे महर्द्ययं चंभं घारेयन्त्रं सुदृद्धरं ॥ धण-धन्न-वेसवम्मेस परिमाहविवज्जणं। सन्वारं मपरिचाओं निम्ममर्च सुदुकर् ॥ चडिव्यहे वि ब्याहारे राईमोजखबन्धणा । संनिर्दिसंचक्री चेय पञ्जेयच्या सुदुखर ।। ·छुदा-तण्हा य सीउण्हं दंस-मसगवेपखा । सकोसा दूवसमेलां य तसफासा जल्लमेव य ।। सालया तसया चेव वह-बंब-परीसहा । · दुक्रां मिक्छापरिया जायमा य अलामवा ॥ फायोया जा इमा विची केसलोयी य दारुखी । दुवर्षं पंभन्त्रयं घोरं घारेउं य महत्वको ॥ सुद्दोइथो तुमं पुचा ! सुद्धमाली सुमजिश्रो । न हु सी पभू तुमं पूचा ! सामण्णमणुपालिया ॥ जावज्जीवमविस्सामी गुखार्खं तु महटमरो । गुरु उलोहमारून्य जो पत्ता ! होह दुन्बहो ॥ भागासे गंगसोउच्य पडिसोउच्य दुत्तरो । वाहाहि सागरो चेत्र तरियन्त्रो गुर्सोदही ॥ गोवतीः — चालीवणाए वां भंत ! जीवे (कं जनगर है पार्व महावीरोः — चालीवणाए वां माया-निगाण — विष्टादेवणण्यायं भोत्रग्रमाविष्यायं व्यर्वतर्वतार पंचायां उदार्वं करेह । उज्जुनावं च जाववह । उज्जाप-रहिवन्ने व वां जीवे चार्यह हस्वीवेवनवूर्णविषयं च म चंचह । प्रस्वदं च वां निजजरेह ।

गोपमो:- निद्ग्याएणं मंत ! जीवे कि बणयह !

मन्त्र महावीरे:—िन्द्रश्चयाय्वं बच्छासुतावं जम्पद्। वष्ट्रासुनावेणं विरक्षमाये करस्मुस्तावे विश्वयज्ञद् । वरस्मुसुस्तावेशीविष्यमे य व अस्यागारे मोहस्विशं करमे दरसायद् ॥

गोपमो:—अपडिवद्भवाम् वं संते ! सीवे कि नणपर् १

मगर्य महावीरे:-क्ष्मविहबद्धवाय निस्संबर्च खयायह । निरसंग्राचेणं अत्रि देशे एग्रग्गांचचे दिया च राब्रो य असल-मार्थ अव्यक्तियुँ वाचि विहरह ॥

गाय अप्पाडण्य, यात्र त्यहरह ॥ गोपमोः--विविचसवत्तासवयाण् वं मंते । जीवे किं

श्यायः १ मगर्व महावीरे:— विविचसम्बासस्यायः चरिचगुर्तिः जयवरः। चरिमगुचे व स्त्रं स्त्रीये विविचाहारे द्रवरिचे, एर्गतरए मीमसमात्र प्रदेवसे स्वर्शवस्त्रमार्गिर्डः त्रशासुर्वेषशासि य बोर्ड्स्टर्ड, मसुकामसुरनेस सर-प्रसंस-स्व-स्त-पंपेसु चेव विरस्बद्द ।। गोरमो:—संतीए णं संते । बीचे किं जसप्यद १ मनवं महादीरे:—संतीए परीतदे बिखद ।। गोपमो:—सुनीए वं संते ! बीचे किं जसप्यद १

मार्थ महार्थीरे:—मुशीर कार्रिक्चणं ज्ञवायह । क्रार्किः षणे प त्रीवे क्रत्यकोलाणं पुरिसाणं क्रपत्यक्तिं भवद ।। गोपमो:—क्राञ्चलपाए णं मंति । लीवि क्रिं ज्ञवायह ? भागं प्रकारिः

भागभा महावीर: — अजववाए का मत । जाव का जवन र भगमं महावीर: — अजववाए काउजुवर्य, भावुरुवयं, मातुरुवयं अविसंवायणं स्वयदः । अविसंवायया संवयवाए यं नीवे धम्मस्य आसाहण् भवह ॥

गोपमी:—महत्ववाए वां अंते ! बोबे कि जनवह ! मगपं महावीर:—महत्ववाए क्ष्मलुस्सवर्व जनवई । मणुस्सिवरोच जीबे मिडमहत्तरसंदशे ब्रह्मवठाखाई विद्वांवेह ।। गोपमी:—मानसचेर्ण अंते ! जीवे कि सम्बद्ध ?

भावभार्याः व्यवस्था भव । वाव । क्षाव । साव-म० म०: — भावसंबोधे भावविसीहि व्यवस् । साव-विसीदित पदमाये जीवे बसहेत्वश्वयस्य धम्मस्य आराह्ययार् अस्मेद्वेद् । आहेत्वभावस्य सम्मस्य आराह्ययार् अस्मृहित्, परलोगधम्मस्य आराह्य भवद् ॥ सारको सारा (50) गोगमो:-वयसमाहारखवाए भन्ते ! जीवे कि जखवह ?

म॰ म॰:-वयुसमाहारखयाए वयसमाहारखदंसखवजने निसोदेइ, वयसमाहारखदंसखपज्जवे विसोदिचा सुलह-.

पोहियत्तं निव्यत्तेः, दूल्लह्बोहियत्तं निज्जरेह् ॥ गोयमो:-कायसमाहारखवाए णं भंते ! बीवे कि लखयह ?

म॰ म॰:-कायसमाहारखवाए चरिचपञ्जवे विसोहैह । वरित्तपन्त्रवं विसोद्दिचा ब्रहक्खायचारिचं विसोदेह । महबखायचारित्तं विसोहेचा चत्तारि केवलिकम्मंसे खनेड । रमो पच्छा सिरम्मह, चुज्मह, मुचह, परिनिव्वायह सुव्व-दुस्साणमंतं करेह ॥

गोपमो:-नागसंपन्नगध् णं मेरी ! जीवे कि जगपह ? म्बर्भः-नाग्रसंपद्मपाए जीवे स्वन्धानाहिग्मं जग्यह नागसंपन्ने पं जीये चाउरवे संसारकंतारे स विस्तर ।। (महा धर्र ससुचा पिडमा न विखस्तह तहा नीवे ससचे .संसारे न विण्यस्यह । नायानिययतत्रचरित्रज्ञोमे संपाउणह

स्रभवपरसमयविसारणः 🗷 असंघायसिन्दे भन्दः ॥ गीयमी:-दंसणसंवनयाए णं मंते । बीवे कि जणवर १ म । म ः -दंसणसंपन्नवाण् मनमिञ्जनस्यणं करें। परं न विज्ञायह । परं अनिज्ञाएमार्ण अलुत्तरेण नाण्य

त हो हो अत्या हो संबोएमा हो सम्मं माने माने विहरह ।

म॰ ४०:—कालपिटलेडखयाए नाखावरखिजं कम्मं विद्या

गोयमो:--पायच्छिचकरखेणं अंते जीवे कि जण्यह ?

में ० में १ - पायरिक्ष्य करवेणं पायनिसीर्दि जययह, तर्भारे पायि मन्द्र ! सम्मं च णं पायष्टिक्षं पडिनक-चिं मार्गे च मामकर्त्तं च विसेर्देह् । साधारं च साधारफर्त | साराहेद्र !

गोपमी- समावसमाए णं मंते ! बीवे कि अस्यर ? ।

भ० प्रः :---खमावखायाए चं वन्ह्रां यद्यभावं वद्यपर् । न्ह्रां यद्यमावद्यप्राप् च सम्बदायम् वतीवसचेतु नेत्रीभाव-ग्रेपारह । मेत्रीभावसुवगए वावि जीवे भाववित्रोर्दि काळव नेन्मए सब्ह ॥



संवोहसाा इंगं इहा सत्य-विसारंयर्च

अग्रत्यहेऊ य किरापडुर्च ।

. विराणाण-वेहसमवश्युरं च नासाइम्रोऽज्यत्वज्ञहारसौ चे ॥१॥

दीर्थ सप्तुद्दिम सरुं मरुन्मि दीर्थ निसाद अगर्थि दिमे य १ काले कराले लहरू दूगर्व

काल कराल लहर हराव काल्क्यवर्च बहुआगचेशी ॥२॥

धाउमस्य सन्ते पसर्त-तेय समाध्यराय परिमासमाखे ।

कचो तमी समझ मीग-पंकी सिम्धं वलायंति कमाय-चोरा ॥३॥

मनी अटंनी मनवक्कनाले सुजीक मोगे बहुनी वर्षा।

रहावि दिसि अगरो श्यामि सर्प्यमोगेम् गरेमर सं ॥४॥

सन्वे पराधीण-दमा इहतिय को कं मतंतं पमनेम्ब काउं। सर्व दिलिहो हि कई समत्यो

स्वे दालदा विकास स्वाप्ताः इवेज्य काउं सिरिक्नमधं है ॥४॥

(to)

हों भाग

समूर्-मरमे निरियो गुहाए पायाल-देसे विश्वसालये या ।

काँद्र वि गच्छेत्र, न मच्चुको तु इवेज गुचो ति-जव-प्षह्यो ॥११॥

संसार-दावरिग-हहिज्जमाखे सयेज्ञ धम्मोबवर्ग जिल्लो चे ।

न तस्स दुक्खाणुमवावयासी समी तवन्ते तरसिम्मि कची १॥१२॥

पोम्मस्य विज्ञुचवला, इ.पफ-बुंमध्य देही, सिमियाच्य सङ्गा । मन्यू पुर्णो संनिहिमी विसन्नी, हुवेज्ञ ता धम्मनिहिच-विची ॥१३॥

जेगोय देहेग निचेगहीया संसारवी शस्त कृणंवि पोसं । देहेण विवेगवन्ता

संसारवीत्रस्य इत्वंति सीसं ॥१४॥ सेगोव बा उसई चावनई च अत्य प्रत्तासस पावस्य च वस्मित्रं तं ।

पुष्णे समचे विद्वी अवेह

ता नस्सरे को ग्रु सुहम्मि मोहो 🛙 ॥१४॥

खण्या दरा कि मरणे मर्च कि गया हमा कि जुदमा सवा कि ? कि संवया निचल-उत्तवा या जंमोह-पासुच-मणी सवा सि ! ॥२१॥

स पत्र घीरी स च वर वीरते स पत्र वितर्ज स च पत्र साडू जैश्विदिवाणी उत्तरी स-सचा वित्वारिमा मायस-निजयेण । १२२।

> ें नहेंदियासा प्रश्-रूज-सबी , जुनई तेऽरथेसु तहा चर्चति । पार्डति शृहे गुरूपुदमर्च

डा ! केरिसं एस परासवर्च ! ॥२३॥

: सहाकंती सन्त्रों प्रवर्ष तथार्थ ति-हुमये । किलेशाशुक्तेश मन्द्र मणुहोन्तोतहिष सो। 'त पूर्व संसारं सुविध्य विसमं दूपस्वदृद्धं महत्या निस्संगी हविश्य निख-मण्यिस सुम् ॥२५॥



रवोनीमो निज-मंदिर्शम्म तो वीह सो अमब-सुओ । रीवाराण सहस्यं कयन्तुवर्चण से दिखं ॥३१॥ वि पत्य-दिशसे रायसुत्रो निगामी नयर-मज्मी। मादिवं च "संति जइ मज्यह रख-संविच-पुरुखाई ॥३२॥ वी रापहंतु वादं," मह तत्पुराखोद्रव्य तस्य खणे। क्या-रापा अनिनित्तमेव आशो मरख-सरखी ॥३३॥ पूर्वो प, पदचा गवेसचा रजजोग्ग-पुरिसस्स । नेनिविद्योगरही ठविद्यो स तस्य रज्ञम्म ॥३४॥ प्रवारि वि वो मिलिया प्रमणीत बरोध्वरं पहिट्ट-मचा । मामत्यमेचकिच्यमन्द्राणं, तो भवंति एवं ॥३४॥ 'दश्वचणपं पुरिसस्स पंचर्गं, सहपवाह सुदेरं ! देशी सहस्त-मुद्धा, सच-साहस्साई पुच्चाई ॥३६॥ सत्याह-मुमी दक्खचणेख सही-मुमी व रुरेय । रदीर समय-सुमी बीवर पुरावेदि राव-सुमी" ॥३॥।

पाइय-मासा

भिनमं पाइमक्ष्यं विदेउं सीउं च के न आखेति ! भागम पाइमकन्य पाठ । कामस्य उप-वर्षि कुर्यति, ते बह असन्वंति १ ॥ १ ॥ (नाया अस्तर्यः - १ म) पहनी सबक्त-बंधी पाऊच-बंधी वि होई मुडमारी । नत्मा सनक्ष्य अविक्रमिद्दर् तेविक्रमिद्दार्थं ॥ २॥

श्रद्द देवी मणः निवं "कि जोण्डा संसहरस्स वि परोक्खे । ' विद्वह १ कत्यह दिट्टा उ केण रवियो पहा मिला १ ॥१६॥ ता न सुपूर्ण कज्जं, तुब्धाणुमपं मुप्ति कायव्यं ।" इप नाउँ निष्यंधं तीसे ठविउँ सुवं रजने ॥१७॥ तापस-दिक्लं राया पहिचलह चारिलीह इहियी वि । थोद-दिवही च ठीए गुरुमे आसि चि तो समए ॥१८॥ वाधी पुत्ती सवमंतरं च सा आहसेसु मरिकाय । देविचेणुपन्ना काउँ वख-महिसि-रूपं च ॥१६॥ खित्रह कुमारस्स मुद्दे दुई नेहेख कहगकी विद्धि । सी बरुकलेडि टविश्रो हो बर्क्सल-चीरि-नामी चि ॥२०॥ बाह कहवय-वरिसंते रूपं ललियं बालुचरं तस्स । भिष्ठप' परायनंदेख राइका समो च पन्छानं ॥२१॥ वैक्षार्थ भ्यामी महिसार्वज्ञाय-कोञ्चरा-मराभी । बाइसप-रूपवर्दमी रावस-रूवाई कारविउ' ॥२२॥ संजोधक्य एंडाई परर-दब्वेडि मीयए ताय । इत्ये दाऊण तथी यह-पाइक्डर-क्रलियाओ ॥२३॥ संपेतिपाउ रहियाँ सनिहाईएाँ गए कलवडस्मि । वक्रत्वीरिस्स कलाणुगारियां मोयए ताउ ॥२४॥ टेन्ति तभो सुँबेउँ पुच्छर कत्यासगरिम लायन्ति । एरिस-महर-फलाई ?' वो वाश्री मर्पनि ''एपाई

नेमितिएस कहियो पुर्वं पि हु सो पलोइयो साहि। पत्याहरणेहि विहसियो च ण्हाको विलिचो य ॥३७।-उपरण-अगुरायार घ्याए कारियो स स्यणीए । पाणिगाहणं तसो गिज्जह वाहण्डण घणियं ॥३८॥: रेश्रो वि तयं फडियं ववलचीरी जहा व्यरएक्रिय । धन्द्रेडि सह विज्ञो पिपरेण च ममद रएखम्मि ॥३०॥ त्तवी य भार-महतै दुक्वे आयै पमाय-समए य । इफारिक्य मणिया गणिया इविषय नरवर्षा ॥४०॥ ग मह परिमम्मि दुक्ते नृष् मधीरहा प्रणा । जं एवं बाह्य्बह गाह्य्बह इहतुहेदि " ॥४१॥ हों हीए गणियाए फहियें नेमिलियाई-इयर्ख में 1 सावस इमरस्य य कार्यमाइ परिवादियं सुन्दं ॥४२॥ " देवस्स कुम्र-दृक्तं अम्देदि न आगिय तथी समह " । पुन्ति वि बेर्डि दिही से रुका पेलिया पुरिसा ॥४३॥ प्याभिनाउ वेदि वि मासीर मह बहुए मी लेदि। बालिंगिको य स्का सहरित्रमदानसे द्विकी शहरा। ब्रामार्थं वि दु नरवर-पृषायं शाहिको तको पादि । जुरराय-पए टविको बुँदा दिउते हमी बीए शप्रधा-

वेसाए एकाए छोय-पसिद्धाए सिद्धि-किछिपाए । नर-वेसिणी य एका धृषा तीसे घरे व्यस्यि॥३६॥

पिडियोहर य विश्वर पसल्चंदे च सावर्ष फूण्ह'। विरिनीर-जिल-समासे सभी तम्मी गिण्डिं विषयं।।४६१। दिक्खाविद्यो य सिक्साविद्यो-य सिरि-भीर-जिल-वरेलेतो। वक्कल्चीरी सिद्धो विश्वा वि गंत्ल दिव-लोगं।।४७। सिक्सिस्टर प्रवस्मी मोच्ल सुरेव-स्लूब-लोक्लाई।। द्व बर-दुद-ग्राख्यं सिरि-गीर-जिल्डिय-पय-कर्मा

श्रमय-दागां

धन्त्रया च मेहरही सम्मुक-धृसणाहरणी पोसह-सालाए पोसह-जोग्ग-ब्रासण-निसप्यो-सम्मच-र्यण-मूखं, जग-जीवहिषं सिवास्तरं फल्रपं । राईसां परिकादेद, दूबसा-विश्वकर्त तर्दि धरमं ॥ एयम्मि देस-काले. भीओ पारेवओ मरमरेन्तो । पोसह-साल-भारगधी, 'रायं ! सरणं' ति 'सरखं' ति 1 'झमझी' चि मण्ड्राया।'मा भाहि'चि मण्डि द्विभो भह सी। तस्य य दाणुकगको पची, विरिष्णे सी वि वणुप-मासी। नह-तल-त्यी नापं मखर्-"मुवाहि एयं पारेनयं एस मध भक्तो ।" मेहरहेण मणियं-"न प्स दायव्यो सर्खायको।" तिरिएस मणियं-"नगवर ! जह न देखि में सं खहियों के सरखप्तवगन्छामि रै चि ।" मेहरहेख मिएप-"जह जीवियं त्रव्मं वियं निस्तंत्रयं वहा सन्त्रजीवाणं। अधियं च-- सातवाँ भाग (६१)

बहू-चतुरत्तरां

प्रभवा मम्म-त्ते पढ घेवला मिहाओ सीलमई निम्मवा। हिनिय-वेलाए आगवा सक्ष्येल दिहा। चिविय 'नूर्ण एसः पूर्णील' चि । गोसे गहिली समझले चुची पुत्तो 'ग्वड्ल ! वृद्धि स्व । गोसे गहिली समझले चुची पुत्तो 'ग्वड्ल ! वह एसा परिणी कु-सीला। अभी आज सञ्च-त्ते निम्मेत्स कस्य वि गया आसि । वा युसा च जुज्ज गिहे धरित'। वशे—

यग्-रम वसकी उम्मन्तगामिया भगगुण-दूमा कलुमा (

महिला दो वि इलाई क्लाई नहव्व पादेद ।। १ ।।

ता पराणित पण विरहरं?'

पुनेया पूर्व-''वाव ! अं जुर्च चं करेतु ।'' मणिया

महुमा-''मह र आमको शीलवह निम्मं विश्वसु 'शि तृह

काय-नरिसमी । वा चल्हा केब तृत सर्च पराणिते'। । सा

वि'दाणि-निम्ममकेब भर्म इसीलं संबमाबो प्यवादंभद समुरो

विक्लानि वाव पर्च पि' चि चिन्तिकण चिल्या रहारुदेख

सिहुया सर्म ।

वर्च से से वेते नहें । सेहिल्या चुना वह-पायहाओ

सुन्य नई कोवरम । तीए न सुन्दहाओ वालां । सेहिला

सुन्य नई कोवरम । तीए न सुन्दहाओ वालां । सेहिला

कारामी दिहें पहम-पत्ता-पहलं भ्रव्यंत-पन्निक

हृष्टाओ!'तीए जंपियं'ज़ल-मज्मे कीट फंटवाई न दीमह'ति पो मिहं सेंद्रि । देमियाई तीए महि-जिहित-भाहरणाई। विडेण भिद्रिण भजाए सुयस्स सन्यं कहिडज्य क्या मा 'यर-सामियी।

--कुधारपाल श्रतिबोध

सज्जगा-वज्जा

महरामिम ससी महराम्मि सुरतक महरासंभवा सच्छी। । सुययो उस कहमु नहं न-यासिनी कत्य संभूको ॥१॥ सुयणो सुद्वसहावी महलिक्जन्तो वि द्वज्याययोगः। ह्यारेण दृष्पणी विष ब्रहिययरं निम्मली होइ। २॥ मजगो न इप्पद् थिय अह कृप्पह महुलं न चिन्तेह। श्रद्ध चिन्तेह न जम्पद श्रद्ध जम्पद सज्जिरी होह ॥३॥ दहरीसकलुभियस्त वि सुवखस्त सुराउ विष्पिपं कलो। राहमुहिम वि ससियो किरया अमर्थ चित्र मुपन्ति ॥४॥ दिहा इरन्ति दुवर्ध जम्मन्ता देन्ति सपलगोक्तारं । कर्व विदिशा सक्यं सुवना जं निम्मिया सुन्ते ॥॥॥ स इसन्ति परं न पुरान्ति अप्परं पियसपाई अध्यन्ति । एसी सुपर्यसहांको नमी नमी नारा पुरिसापं ॥६॥ बाहर वि कप वि विष विषं कुछन्ता अवस्मि दीमन्ति । समिविष्य वि इ पियं क्रुयन्ति ते दुल्तहा समसा ॥॥॥

साहसवज्जा

महममत्रलम्बन्तो पावह हियद्ग्लियं न सन्देही। देखनमङ्गमेचेख साह्ला कनलियो चन्दी॥१॥ र्वं कि वि साहसं साहसेख साहन्ति साहससहावा। वं भविज्ञण दिच्यो वरम्युही घुखः नियमीमं ॥ २ ॥ याहरह घरा सुन्मन्ति सावरा होह विन्मली दहवी। मनपवनसायभाइस-संलद्धजसाय घीराणं ॥ ३ ॥ वह जह न समप्पइ विहिचसेख विहडन्तकअपरियामी। वह वह धीराख मणे बहुद विजयो सहव्छाही॥ ४/॥ दियर जामी वत्थेव बहुिमी नेय पयडिमी सीए। व्यसायपायवी सुपृश्माण स्वित्वक्ष फलेहि॥ ४ ॥ न महमहणुस्त पण्छे मन्ने कमलाण नेप खीरहरे। क्वसायसापरे गुप्ररिसाख खन्दी पुढं क्यर् ॥ ६॥

दीरावज्जा

प्रस्त्यपापमं सा अगिन अगेन एति पूर्व । उपरे दि मा परिज्ञा परमामद्री कभी जेगा। १॥ ता रूवे ताद गुट्या लजा प्रचा इत्तरमा ताद। ता दिव महिमाची देति कि न मस्मूष वाद।। २॥ तिह्नुम्ब वि द्व सहूचे दीचे दहते निर्मम्ब सूत्रो। वाद्य कि न नीये अन्यायं सन्देखन्त्य ॥ ३॥

ः । नीइवज्जा यन्तेदि आसन्तेदि य परस्स कि जांपप्रिट दोतेदि। भागो जसो न लन्मइ मो वि अमिची कभी होई ॥ १ ॥ शिसे स्वसमिद्धे श्रलियपप्तक्के सहावसंतुद्धे। वर्यम्मनिवममहरू विवसा वि इसा समा होह॥ २॥ मीलं वरं बुलायो दालिहं मन्दर्य च रोगायो। विज्ञा रजाउ धरं रामा वरं सुद्रुवि तवाको ॥ ३॥ मील वरं कुलाको कुलेख कि होइ विगयसीलंगा। समलाई करमे संमयन्ति न ह हुन्ति मलियाई ॥ ४॥ वं वि मुमेर समत्यो चणवन्तो वं न धन्तमुख्यहर्। वं म सविको निमरो तिस तेत बसहिया प्रशी ॥ ४ ॥ छन्दं जो अगुरुदृह मन्मै रस्यह गुले प्यामेह। सी नवरि माणुमाणे देवाल वि बद्धही होइ ॥ ६ ॥ स्यवश्रदेश बस्मा नामः दिवमी इमीपखं सुचे। इहल्बेश य जम्मी नामइ पम्मी अधम्मेण ॥ ७॥ हर्स ग्रामं वयउ व वीतिनं परकनत्त्रवारं। श्वाग्रहियो बम्मी राज्ञारनाच मंपदर् ॥ = ॥

धीरवज्जा

, frank

तिर्म बारह कर्ज शरदं या कहि वि निरितेता। पार्द्धातिसमा कार्य इसी न निम्बान्त ॥ १॥ सन्तं थप्पे जिए जियं । 2. 2. 1 34 भणाः मित्तमभित्तं च दूर्णाहुयमुपहुँको 📳 उ. २० । ३७ मणा क्सा विकसा य दहास य सहास च । उ. २०।१७ श्रापा कामदृहा घेणु श्राप्या मे नंदणं वर्खं । उ. २०। १६ भणा गई वेयरणी क्रणा मे कुड नामली। , उ. २०। १६ न वं भरी संदक्षिणा करेई जं से कर अप्यक्तिया दूरप्या 3, 3. 1 YS

ज्ञानसूत्र

पचे नाचे शकाय १ । हा. ४२ eng x 1 so पदमें नार्ण तको दया । द्विदा बोही,गाखबोडी चेष देंसगुबोडी चेष टा. २ टाला १,४,६६

मावेश दिना रा दुनि बरशगुरा। 3. ₹≈1. नासामंप्रभाषाय शीवे सम्बनावादिगर्स बरावश ह, १६ १ ५९ म. चर्डान्द्रश चुदी-उप्पर्या, वेदार्या, कम्मिया, वरिदामिया । 21, 4 2, 4,88

नार्मिरिस्म मार्ग । 3 55 4 1 v मारोग प हुनी शेर, गरेफ शेर जारयी। मदा दू से मानकरा वरति ।

दे तर्न हाटर में सब्दें बादर, दे सब्दें बहुर से दर्व हाटर ।

तीरे दियास पररे, यह दरद बहुम्मूल् !

साववाँ मागः (1.3) विज्ञाचरणं पमोक्खं ' स्व.'११।११ पंते धमिनिव्यहे देते बीतिमदी मदा जण् स्य. ८। १५ महीवेगनतदिद्वीए चरिचे पुच ! दुबरे मना लोहमया चेय चावेयव्या सुद्दार्र । J. 88 1 88 सामापियमाह तस्स अं जो अप्याणं भये स दंगए । स्. २। १७ उ. २ तपसूत्र तर्व चरे । ચ. રેલ ! રેપ્ર रवसा धुवाइ पुराम वाधर्म । दश. ६१४ च. उ. त्वेण परिस्वकई। उर्दाश्य तवोगुणपदाणस्स उज्जुनई । दश. ४। २७ सर्व कुव्यई मेहावी ।' दश. ५ । ४४ ४, २

तवेणं बोदाणं जगयह। 3 38-130

प्रकृषिजा वन संजमस्मि । दश, = 1 ४१ मध्यभी संबंधे दन्ते, भाषा ण सुसमाहरे । स्य. ८ । २ ० भकोहणे सधरवे वबस्सी।

60 1 65 अपा दन्ती सुदी होइ। 3. 9 1 84 सो पूर्वा तवसा आवहेजा। स्य, ७१२७

व. ३२।४

वेवणिज निजरापेडी 3. 3 1 30

ममाहिकामे समणे सवस्ती

मातवाँ भाग (200) मयर्गिमोग्वियविष्यक्रोग्बहुदुवराजलखपरजलिव । नदरेन्द्रवयमनायो मंसारे को विदं क्रयह ॥

स्र मास्वस्मि ठाणे तस्मोवाष् य परं मुखीमिषण् । एर्गनमाहचे सुपुरिसाण वची सिंह जुनो ॥ सीतमास्तिहें दुक्लेहि अभिवृद्विक संसारे । हिलद्रियां सं दूषसं दूलहा सद्धममपहिचली ।। भागपमत्तमहुरा विचामविश्वा विमोचमा विसवा । यरुदमणाण पहुनवा विवुद्वमानिविज्ञवा वाचा ॥

एवायामेस लोको कएक कोत्तव सासर्व धर्म । सेवेर श्रीवियत्थी विसंविव शोर्य सहामिरश्री ॥

दुवर्ख पावस्त फर्ल नासको यावस्य दुविखमी निष् महिशोदि प्रयाउ घरमं घरतस्त फलं विवासची ॥ मपुरुषी इय लोभी तुच्छा इचरेख पन्नएवं व । प्त्य गसिसह सी वि हु इररसमाख्य अक्षेण ॥ मी वि ह न एस्य सवसी बम्हा अथगर कर्यववसकी वि । पर्य विदे वि लाए त्रिसवपसंगी महामोदी ॥ गरुदेसयावस्पनस्गुणगुच्छं निका महीराध्यो । संसारकृषकुद्दराउ निम्मानी नत्थि जीवाणं ॥ भागं साथ कुणंति जोडियक्ता दासन्त मन्त्रे सरा । मार्थनाहिजेलिमसीहपमुहा बहुँवि वार्थं बसे ॥

🕠 🛂 मुख्य प्रतिपाच मांत्य, योग, वरोपिक, न्याय और बेदान्त ये पाँची दर्शन शानवादी हैं अपान शान की प्रधानना देने हैं। श्रान से ही सुकि भावत है। प्रकृति श्रीर पुरुष का भेद्रहान हो सौव्यमत में मोड र। इनहों वे विषक क्वांति कहते हैं। योगमत भी ऐसा ही मानता है। बेरोपिड और स्थाव १६ परायों के सस्वकान से मोहा मानते है। मावा का बावरख हटने पर जहातस्व का साशात्कार हो बाता पेशान्त दर्शन में मुक्ति है। इस प्रकार इन पाँची दर्शनी में हात ही मोछ या सोच का कारण है। इस लिए ज्ञान ही सुखय रूप से प्रतिपाच है।

भीमांना वर्रोन कियावादी है। उनके मत में वेद विहित कर्म ही जीवन का मुख्य जीव है। करविदित कर्मी के असुसात और नियंत्र कर्मी को छोड़ने से जीव को स्वर्ग अधवा सुख मान होता है। अब्दे वा पुरे कर्मा के कारण ही जांव मुखी या दुखी होता है। कर्नी का विधान या तियेव हो सीमीना दर्शन का सुरूप प्रतिप्राण है।

जगत

सांख्य दर्शन के अनुमार अगन् प्रकृति का परिणाम है। मुख्य रूप से प्रकृति स्त्रीर पुरुष दो तस्य है। पुरुष चेतन, तितिप्र मुख्य रूप स नहारा वित्य है। महति जह, त्रिगुगायिक नया ातमु य तथा ४००० तथा । परिमामितित्य है। सरव, रजस्, और नमम् नीनी शुना की परिग्णाभानत्य व : १९६७ १ जुन् आर १९५५ राजा शुणा का सान्यावस्था में संसार प्रकृति में सान रहता है। गुणा से विषयन साम्यानत्वा होते यर प्रकृति से महत्तत्त्व, महलन्त्र में शहरूहार श्राहि हाल वाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मोन्द्रयों, पाँच रुम्माप्राण, क्र

ईश्वर

् मांक स्तिन ईसर को नहीं सानता। योग दर्शन के शतु-ग्राम्क कर्मियाक और जनके फल काहि से काशृष्ट पुरुष दिशोक देश है। इनके सत्र में इस रामक्ता नहीं है। देशिक और गरिंद मत में ईसर साम्न का कर्यों है। समये आठ गुजा रोवे गरिंद मत में ईसर साम्न का कर्यों है। समये आठ गुजा रोवे गरिंद प्रतक्ता, परिमाण् (राममहत्) पुरुषस्त्र, संयोग, विमाग, के श्वा और सम्मा

मीमांगक ईश्वर को नहीं मानते। बेदान्ती मायाविध्यन रूप को ईरवर भानते हैं।

जीव

सांत्य दर्शन में पुरुष को ही जीव माना गया है वह करेक दा वित्रु क्यांत सर्व क्यापक है। सुल दुःच व्यादि सब प्रशति के में हैं। पुरुष क्यांतनता के कारण करें व्यपना समय कर हुआी रोना है। योग दरान में बीच का स्वरूप मोन्यों के सवान ही है।

विशेषिक तथा वैशायिकों के कानुवार शरीर, इत्तिष्ठ कार्रि का कांप्रशास कात्मा है और है। इसमें १४ शुरा है—संकार परिमाण, प्रपत्न, संबोग, विकार, बुद्धि, सु-क्ष, इन्या, हेप, प्रपत्न, कार्य कार्र शासना नाम का संस्कार। इनके यन में भी और विश्व करा कार्य है। सीसोधा शर्मन के कानुवार मो और रिम, नामा कर्म, तथा भोन्य है।

बेरामा के कतुमार कम्पात्ररात से पुत्र क्रम से अ'व है।

मोद्ग साघन

सीवर भीर बोग दर्शन में प्रकृति पुरुष का विवेक तथा वैशेषिक भीर नैयाबिक सत से वरसमान ही सीख का कारण है। सेताब सत से स्वरो रूप सोख का साधन बोबिविल नर्म का मुद्रान भीर निषद कर्मों का स्थान है। बेदान्व वर्गन में का भीदान भीर विषद कर्मों का लागा हो बेदान्व वर्गन में कविधा भीर तमके कार्य का निज्ञ हो जाना सोख है।

श्रघिकारी

शिष्य दूरीन में संबाद से बिराल पुरुष को मोण मार्ग कर भीषकारी माता है। योग क्यान में माण का व्यक्तियारी स्थान पिष बाता है। ज्यान कीर देशीयक दरान में झुलांजिकास व्यक्ती दुरेंग को मोहोन की प्रव्या माला क्यांक मोण मार्ग का व्यक्तितारी है। मीमोसा दुर्शन में कर्मक्कामक कवा बेरान्तरहर्गन में साधन बहुद्ध सम्बन्ध व्यक्ति मोण मार्ग का क्यांच्यानाहर्गन में साधन बहुद्ध सम्बन्ध व्यक्ति मोण मार्ग का क्यांच्यारी है।

द्रम लोक तथा परलोक में भोगों से विरक्ति होना, शान्य, हाम्त्र, वपरत तथा ममाधि से युक्त होना, वराग्य तथा मोत्त की इच्छा होना ये बार साधन चतुष्टय हैं।

बाद समार में हो तरह के पहार्थ हैं:-(१) जिल्ल को बभी

प्रतास महीं होते और न कमी नट्ट होने हैं। (२) बानित्य, जो उत्सम्न असम महीं होते और न कमी नट्ट होने हैं। (२) बानित्य, जो उत्सम्न भी होते हैं और नट्ट भी होते रहते हैं। बानित्य कार्यों की उत्पत्ति को अत्येक सन को प्रतिस्वार्ये

ह्मान्त्य कार्यों की उत्पत्ति को प्रत्येक सत को प्रक्रियाएँ निम्न निम्न हैं। सांस्य कीर योगसर्शन परिस्तामवादी हैं। इत सत

स्रात्मपीरगाम

षरीं दरीनों में चातमा विनु है। वेदान्तदर्शन में चातमा कर है और मानी मनी में नाना।

क्याति

सान से नरह चा है-जमाछ और सम । सम में संज भेह है-संगत, विचर्यय और कार-यहमाय। मंदेशतमङ सान को संगय नेज हैं। विचरतेन सान को विचर्यय और कार्तिस्रत शमानक सान को सन्त्यवमाय कहते हैं। विचरतेन सान के लिए दासीनकों में 'परसर विचाद है। क्षोरे में रस्ती देख कर साँव समझ लेना हिंदी साम कि साम कि साम कि साम कि साम के से राना है। देवारिकारि प्रायः क्यों मनों में सान के प्रति पदार्थ को कारण माना है। रस्तों में साँव का अस होने यर प्रभ उठता है कि कारण माना है। रस्तों में साँव का अस होने यर प्रभ उठता है कि को साम कर साम के साम का साम की साम का साम के साम का स्वर स्वर है के कि ता दूर्योंनकों ने भिन्न किन का साम है।

स्रोण्य, पोन कीर फीम्स्रेक कार्यमति या विवेकाच्याति की मानने हैं। इतकः कहना है कि 'यह सारे हैं इतर्ये हो ज्ञान कित हुन हैं। यह रस्सां है कीर वह सारे । 'यह रस्सां है 'यह स्रा प्रत्यत्त्व है कीर 'यह सार्य है यह ज्ञान स्रत्या । दोनों ग्रान सहे हैं। सामने पड़ी हुई रस्ता का ज्ञान भी मचा है और पहले नेस्त हुए सीर का स्मराण भी मचा है। इत होनों ज्ञानों में भी दो दो कोर मान, उपमान और सब्द । भीमांमक तथा बेदान्ती प्रत्यस्त, कानुमान, असाद, ब्रागम, क्यांपत्ति और क्यमंत्र ।

सत्ता

पानत को कोड़कर सभी उरोन मांमारिक परार्थों को सामारिक परार्थों को सामारिक परार्थों को सामारिक परार्थों को सामारिक स्थान परार्था में इनका रहना समयार मांमारिक सामारिक स

उपयोग

पर्यक्त परित्त का उनका सम्य प्रात्यक होने से बार्क प्रात्ति पर्यात्तिक स्वतार है। साध्यात्क कर से बार्की हरते तथा वन स्व तिति गा सभी का पर्यात्त मुख्याति भी चुनते में सुरकार है। हरता तथा का काल सभी स्तिती में कह तरी है। इस निर्देश प्रदा्ता से भी कां का साह स्व स्व स्वात्त है। साह नर्दात करते हैं। और पुरुष को भेजात बरबाता ही भारता रक्ष्मेण सातता है। भीत का उन्होंने हैं जिस की प्राप्तता । सैर्पिक भी हाता हता स्तुत्तार सात्मक देवार्थ भारित हाता तक्ष्मका है। में जाता है। कर्माण है। भोजात का प्रदांग है। हाता तक्ष्मका है। में जाता है। पर्यात है। भोजाता का प्रदांग है कर क्षमका है। पर्यात है। भोजाता का प्रदांग है। णत्रा भाग (११७)

वन, समान श्रीर शब्द । भीमांसक तथा बेदान्ती प्रत्यस, अनुमान, समान, सागम, अर्थापत्ति स्त्रीर अमान ।

सत्ता

परान्त को छोड़कर सभी दर्शन संसारिक परार्थों को निर्मादक मन् क्यांने एरमाय नाम मानते हैं। न्याय, क्यार वेशिपक क्या ने एरमाय नाम मानते हैं। न्याय, क्यार वेशिपक क्या ने प्राप्त करना ममाया क्या के जाति मानते हैं। मोज्य, योग क्यार संसार करना ममाया मम्बन्ध के नहीं मानते । वेदानक दर्शन में ममा गीन ममाया सम्यन्य को नहीं मानते । वेदानक दर्शन हैं। क्या नी ममाया सम्यन्य को नहीं मानते । वेदानक दर्शन हैं। क्या नी ममाया नी ममाया सम्यन्य को नहीं मानते व्याचित क्यार प्राप्त हैं। क्या नी प्राप्त का क्यार प्राप्त के समय करवा होने बाले परार्थों में स्वयनहार ममा । विस्ता या सभारमक सान के समय करवा होने बाले परार्थों में स्वयनहार ममाया अभारमक स्वयंग्य के जिनानी हैं। तक मायान पढ़ाने हैं कानी रेट सा करते हैं।

उपयोग

1 2 4

साधन

धैद स्तर्त में ममार की दुःतमय, चिषक, मून्य श्राहि गिता गाद है। इस प्रधार का निन्तन हो मोज का साधन है। गिता और विपयतील होनों से खब्दा एडकर अध्यम मार्ग की गृतने से ही शान्ति मात्र होनो है। जैन स्तर्दान में खंबर और नित्त को मोज का भागन सामा है।

द्यधिकारी

मीद्र और जैन दोनां दर्शनों में संसार ने विरक्त मनुष्य वेस्त्रहान का कविकारी माना गया है।

वाद

मार्गाओं से बन्तु नी जनान के विषय में कई यार प्रयानन दे नाती सुक्का कर से स्वतात्रवाद है। कार्यान बानु की कर्यान के नित्तात स्वतातिक कर ने कराजे मार तेने रून हैं दरकार-बाद के तिकार दन से कार्यायकार, कर्युचर, क्यूनिया, हुना करायरार, क्युसक्योगारवार, कर्युचर, कार्यो की दर्शन करायरार, क्युसक्योगारवार, कर्युचर, कार्ये की दर्शन करायरार,

बीड प्रभीव्यम्मुन्याद की सामने हैं । कार्यान कार्य ज में कन्यति से बामें दहना है कीर म बाह में । बस्तु का बरानर राज्य ही जनार है।

के अर्दिन सद्मान्द्रविवाद को मानता है। कारीन उन्हर्सन से दासे बार्द बारण रूप से अन् और बार्द रूप से बायद रहता है। पत्र से बसु में विश्व वावरा विषि तिरोध आहि द्वारा, परस्तर अंत्रिक्ट कर्यों जा जिससे हान हो उसे सममंगी कहते हैं। यहाँ अंधिकट करते हैं। यहाँ अंधिकट करते हैं। यहाँ अंधिकट कर साम जान में रकते चोर्च है। 'सामरून' 'सीम्म' में दान है और जमसे होटा जो है। इस वावरा में पहेचम और केंद्रिक्त, इस देनों धर्मों का चारावरा एक 'रामरून' में रिक्रय गोता है। परस्तु यह समावेश मार्गाकृत नहीं कहा जा सरमान। 'खों है इस कहार का पहण्यक्त चीर कोंद्रिक्त में स्वार पत्रिक्त है। को जिससे वाह है यह कची के होटा नहीं हो महता। चता केंद्रिक्त में कोंद्रिक्त करते हैं। यह सावेश की स्वार केंद्रिक्त में कोंद्रिक्त हमें कार हमारू की स्वार कोंद्रिक्त से पत्र से हसे सम्बद्ध केंद्रिकाल स्वर्केट कर्मों का एक ही बस्तु में समझेरा होने पर भी हसे सम्बद्ध केंद्रिकाल से कोंद्रिक्त हमें

जण्डा, चंत्र उपयुष्त वाका को वो बात दीजिय-धामरल ऐता से बहा है चीर हीरासाल से द्वोदा है। 'से डिड्र मी विश्व पंत्र को बहा है चीर हीरासाल से द्वोदा है। 'से डिड्र मी विश्व पंत्र करोगी हम कावल से तर्ती रह द्वारी। इसका चार्य पढ़ हुआ हिरासन दाया आता है। यह बात लोक में प्रमिद्ध है, संत्र है, बहारासन दाया आता है। यह बात लोक में प्रमिद्ध है, संत्र है, बहारासन दाया आता है। यह बात लोक में प्रमिद्ध है।

भारतक भोज मनते हैं कि बहायन और होतायन परस्तर प्रास्त्र से मावस होते हुए औ किनती रायता से एक जात हाते हैं। यहां हाल चम्च ग्रायों भमी का भी है। पाले पत्न के पिरस्त्र अवते हैं। पर गास्ता विचार करने से पर्य चरेता को प्यान में स्वते से धनियह हो जाने हैं। वहाँ यह करा जा सहजा है, कि हुट्यन धीर महम्म को ध्यापिक पर्य हैं, धातिल्य सार्रि रहीं। दे एक आह के रह माजे हैं। यह फहना ठीक नहीं है। व्योधि प्रमें मामें चार्यिक दोरे हैं। यह फहना ठीक नहीं है। व्योधि धेरे राज्य ही नहीं है जिससे एयक एयक सब बर्मी का कमत दिया जा सकता हो, खतलब इस दृष्टि से बस्तु को खबकाज्य राज्य से दह देना हो उपयुक्त होता है !

पर जैसे ध्ववनत्वय न मानना भून है, उसी प्रकार एकर्स (परंपा) अयतत्व्य मान होना भी भून हो है। व्यक्ति व्यक्ति बंदु ध्वराक्त्य है, फिर भी वह 'धवराक्रम' भारन से तो कही हो बातों है। ध्वराक्त्य सुरु के हार वच्छ्य होने के कारण पहा को क्यींनत्र खरानच्य क्यांच्या वच्छ्य कहना चाहिए। घटा को अपीनत् खरानच्य क्यांच्या वच्छ्य कहना चाहिए। घटा को अपीनत् खरानच्य क्यांच्या से वास की साम को मान को "मैं भीनी है" इस क्यांच की साह स्वच्या से ही बाधा कावेगी।

इस प्रकार एक हो बस्तु में ब्रस्तित्व, वाश्तित्व, श्रीतित्वा तित्तम और श्रवहतत्वत्व रहमा निद्ध होना है। बागे के होन भी भी भी विद्या भेर से ममभ लेना चाहिर । विस्तार अय से उनका स्त्री करवा नहीं किया जाता। इस प्रकार सप्तभी न्याय स्वर हो बाता हैं।

ज्यर से यह निवांत यहा ही विश्वित्र प्रतीत होता है, परन्तु बास्तविक तत्व इसी में है। हो इस में प्रयुक्त होने बाले करितब मासितक बारि, के बारी का प्यान रतना चाहिए। मुप्तमिद्ध हारा-त्रिक खोटी में करा है—

When we speak of not being we speak, I suppose not of some thing apposed to being but only different.

धर्मान् " जब हम धसता (नास्तित्व) के सम्बन्ध में इस इस्ते हैं, तो मेरा स्वास है कि हम सत्ता के विरुद्ध नहीं कहते-सिर्फ संग, स्वादाद इम प्रकार प्रस्तर विरोधी प्रतीत होने वाले न्तु बालव में श्रीवरीधी, यमों का पृक्व समन्वय बरता है और स्वीवर इस गया है कि जो विरोध का सथन करे वही स्वादाद - विरोधमध्ये दि स्वादातः । "

सार्वेप परिदार-स्वाहाद के वास्तविक स्वरूप की भार-विक्रता पर साम्यदायिक विदेश के कारण स्वाहाद जैसे सार्यविद्यान्त पर थी माश्रेप किये गये हैं। काच हम अहेच में उनका दिन्दर्शन कारों।

में कारण सर्वया कांग्रकाल है या किसी लयेगा एकान्त मी पीं सबंदा कांग्रकाल कर हो हो तो यही एकान्त हो गया। पिर यह सिद्धान, कि सर्वेक क्यू कोंग्रेजातार है, की नहीं, भैनेकान्त सबंदें कांग्रकाल रूप नहीं है। यहि क्योंग्रन की कियों भैनेका एकान्त भी मान बिद्या जाय की प्रधानत में जो होय आदि है ये सम्बद्ध कांग्राफी। इतना हो नहीं, बहिन कांग्रक हिस्स भी करा म होगा-कर्मान कांग्रक जो एकान्त क्यारे हिस्स कर से एकांग्रेस स्वय है या क्योंग्रकान करने है स्व प्रकार प्रदान करने ही को जाएँ। यह कांग्रकाल होया क्योंग्रकान केंग्रत होते हाता है।

इसहा ममाणात यह है कि धनेवाल व हो सर्वेबा अवे-काल हर है न बर्वेबा एकाल हर हो। बर्लिक वर्षीयण करेवाल हर बीर वर्धान्य एकाल कर है। बर्लिक वर्षीयण करेवाल हर बीर वर्धान्य एकाल कर है। बर्लिकाल हो प्रदेश हरार एकाल की सम्बंधिताल करिया प्रकाल के मेर से हो प्रकार का है। को प्रस्त कर्युमान कारि प्रमाशों से व्यक्तिक व्यक्त कर्मा कर वस्तु में बर्लिकाल करें ने वह धनवह-क्रमें काल दें। तमा वो प्रसाद कराने वस्तु में बर्लिकाल करें सेन विद्वारत विकास करेंच क रूप

जैन पाटाक्ट

[साक्त]

7

خبنا

विक क्षांत प्रदेश क्षा की हैंगा अस्ता । व्यासामान

. مون

यो तिरोद गास क्रान्ट कार्यका

गान्करेन्स की ंडितीयावृत्ति

ामिक परीक्षा उस्तक के रूप वह हमारे

प्ता में बोध स्फरेन्स से क शिक्षण

ान प्राप्त क्_य

दिशीय श्रीकरण है अति है।।।

• भिष्णात्रकतः •

ः ।वदयानुक्रमः	
१गूत्रविमाम	
१) धम्मसुसं	ŧ
२) विणओ	Ÿ
३) संवयं यूम माहणं	\$0
४) माणुस्तए सबे	11
५) माणुस्सए सरीरं	18
६) माण्स्सवा कामभोवा	4.8
७) जयन्तीसमणीयासियाए पण्हीसराणि	१६
८) तिण्हें बुष्पडियारं	20
९) जो खणइ सो पडइ	45
१०) पण्होसराणि	२६
११) संघरपुद्द	×0
१२) सित्थवरावली	YĘ
१३) गणहरावली	86
१४) घेरावली	RÉ
१५) बदने जागनतुर	48
१६) विजये चोरे	Ęo
१७) मियापुसे	90
१८) संवष् परिज्वायमे	७६
१९) वस समिचेरसमाहिठाणा	808
२०) मोवसमग्गो	११६
२तस्वविभाग	
१) कर्मवाद	१ २३

़१२३

-० प्राक्कयन ०-

C

हमें परम प्रसप्ता है कि घामिक शिक्षण के लिये काम्करेस की ओर से तैयार की गई जैन पाठावकी भाग ६ की यह दितीयान्ति काम्फरेस्स की सम्मति से श्री तिलोकरत्व स्था. जैन द्यामिक परीसा बीर्ड पाथर्सी द्वारा प्रकाशित की जा रही है। गाठपपुस्तक के रूप में जैन समाज ने पाठावली का जो मूल्यांकन किया है वह हमारे लिये हमें का विषय है।

बासकों को जैन संस्कृति और जैन-तस्वतान का सरलता से बोध कराने कि लिसे ऐसे सर्वकान्य पाठभ-तम की बांग कान्करेन्स से होतो रहतो थी। फलस्वरूप नह पाठावली श्री धार्मिक शिक्षण समिति द्वारा श्री संतवालयी से वैचार कराई गई है।

बालक अपनी बोम्पतानुसार उत्तरोत्तर धार्मिक ज्ञान ब्राप्त कर सके इस तरह इस पाठावली के सात भाग किये हैं।

हम आशा करते हैं कि जहाँ २ अभी तक इस पाठावली की अपने पाठपकम में स्थान नहीं दिया बया है वहाँ २ सभी स्नूक, पाठाका और छात्रालय बदाशीध इसे अपना लेंगे और बातको के नीमल हृदय पर जैन संस्कृति की गहरी छाप बालने में सहायक बनेगे।

:: प्रकाशकीय ::

बस्बई निवासी दानवीर धर्मप्रेमी श्रीमान् मगनन्तान प्राणजीवन बोसी उत्साही और उदारन्यभाव के धार्मिक कार्यकर्ती में 1 आप पायहीं परोसा बोर्ड के सरसक सदस्य ये और भी अमोल जैन सिद्धानदात्मा सथा श्री रत्न जैन पुन्तकालय पायहीं को भी आपका अवला सहयोग प्राप्त है। आपने अपने रहने के नाव ठकारा (मौराष्ट्र) से शायहाँ के धर्मभ्यानायं उपाध्य बनवाया है और भी अनेक तरह के दान धर्म आप सदेव किया करते से ।

दानवीर धर्मनिन्छ योपून गोहुन्दास शिवलालभी झनमेरा भी धन्वई में ही रहते हैं। आप भी पायडों बोर्ड के सर-शक सदस्य हैं। महासती भी भी रम्मानी मे विदुषी थी गुमति-कृतरभी मे के सक १६६८ में करितवाड़ी (बन्बई) चानुमित के समय आविल खाते में विषोध सहबोग देवर आपने उस सारे का प्रारम करावा और २५०००) का दान देवर एक हॉस्पिटल भी सम्बई में मुलवाया है।

श्रीमान् मगनलालजी होती ने ५०१) बचये और श्रीयुत गोजुल-दासजी अजमेरा ने अपने पुत्र की छवीलदासबी के स्मरणार्थ २५१) बचये पायर्डी घरीला कोडे के पुस्तक प्रज्ञानन विभाग में प्रदान किये हैं। आप दोनों महानुमालों के आविक सहयोग से इस पुस्तक का प्रजानन किया गया है। अत. आप लोग रात्या. धन्यवाद के पात्र हैं।

जैन-पाठावली

[छट्टा भाग] _{एव-विभाग}

धम्ममुर्च

धम्मो मंगलमुक्किट्टं अहिंसा संजमो तयो । देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

सहितमसच्चे च अतेणगं च तत्तो व बभं अवरिगार्ह च । पडिवरिजया पंच महत्ववाणि चरिजन सम्म तिणदेतिये विही

वाणे व नाइवाएरजा अदिशं प न नायए । साइयं न मुसं यूया एस घन्ने बुसीयओ ॥३॥

जरामरणवेगेणं वृज्यामाणाण पाणिणं । धम्मो बीवो पड्डा स गई सरणमुलमं ॥४॥

सदाणं जो महंतं तु अप्पाहेओ पवश्यद्वे ! गच्छतो सो दुही होइ छुहा-तण्हाए वोडिओ !!५!!

एवं धम्मं अकाऊणं जो गवछड़ वरं धयं । गवछंतां सो बुहो होड बाहोरोगेहि वोडिजो ॥६॥ अद्धार्णं जो महतं हु सवाहेओं ववज्जई ।

मन्छतो सो सुही होइ छुहा-तण्हाविवन्तियो ॥।।। एव धम्म पि काऊणं जो गन्छद पर मय । मन्छतो सो मुही होइ अध्यक्षमे अवेषण ॥८॥

धर्ग-सूत्र

(१) अहिना, शेवम, और तर कव, धने बहुष्ट संदल है। बिगवा अन सटा धर्म में लगा पहता है अमे देव मी नवरकार करते हैं।

(२) अहिंगा, नाय, क्योर्थ काल्ययं और आर्थराह क्य यांच महाकों को अहींगार करने डिलेन्द्र देव द्वारा चर्यात्वय धर्म वास्त्रमान करें। (३) आलियों को हिला नहीं करनी चाहिए, अहल कुहब

तहीं बचना व्यक्तिए, विश्व (नायानाय) और विश्वया श्रास्त्र कही बचना व्यक्ति । यह नायांवधी वा ग्रांचे हैं । (४) जना (बहायां) और करण में जनार में दुशने हुए

ŕ

प्राप्तियों के निव्यक्षे द्वीय गय (या वीय गय) क्रोप्राप्तिये, क्षांत्रण, श्लीप प्रश्नेत प्राप्तियाण हैं। (५) को स्टब्स यार्थित (जानं का बीवाय) रिन्स दिला

नामें मोर्च में प्रदाय परारा है वह बागा हमा कुछ और स्वास में चीरन होता हुओ होता है। (६) इसी तरह को व्यक्तिय वर्षों दिसे दिला ही नरसक के कारत है वह बाता हुआ स्थाधि हुई रागी करों दिल होतर हुओ होता है।

(७) को उद्देश्य केन्स से सम्पन्न तेल्ला कर्ना से क्रम्य काम है जह काम हुआ कुछ स्थान के में दिल कही. हुम्म हुआ मुक्ती हुम्म है क

होता है। (१) हेबो लाह यो प्राप्त को कार गाँक होकर कुके में मन्त्र है का कारक से बाध कोर देशका गाँक होकर कुके

विणओ

मूलाओ क्षंघप्यमयो हुमस्स खंघाउ पच्छा समृवेति साहा । साहाप्पसाहा विवहंति पत्ता तओ य से पुप्सं फलं रसो ॥ ॥

एवंधम्मस्स विणवी मूलं परमो से मोक्लो । जेच किति पुर्व सिग्धं निस्सेसं चामिमच्छ्द ॥२॥

श्रह पंचिह ठाणेहि जेहि सिक्सा न लक्ष्मइ । यम्भा कोहा पमाएण रोगेणाऽऽलस्सएण य ॥३॥

भागाऽनिद्देसकरे गुरूणमण्यवायकारए । पडिणीए असंबुद्धे अविणीए सि बुच्चड ।।४॥

अभिन्लणं कोही हवइ पयन्धं य प्कुन्यह । मेतिज्जमाणी यमड सुर्य सद्रूण मज्जई ॥६॥

पद्मणवादी बुहिल्ले घढे लुढे अणिगाहे । सप्तविमागी अचिमते अविणीए ति युन्बह् ॥६॥

अह अट्टिहि ठाणेहि सिक्सासीलितिबुदचड्ड । अहिसारे सया दते न य मन्ममुदाहरे ॥७॥

मासीले न विसीले न तिया अइलोलुए । अकोहणे सच्चरए सिक्लासीलिसि बुच्चइ अदा।

विनय

बुदा के मूल से स्काध (धड़) की उत्पत्ति होती है, स्काध से सालाएँ निकलती है, शासाओं से प्रशासाएँ कूटती है, इसके बाद पत्र, कुल, कल और रस उत्पन्न होता है। १

सति तरह एमं रूपो चूल का मूल विजय है और इसका राकुत्वर एस मोश है। विजय रूप से कीति (रूपो पत्र) जून (रूपो कुल) और समुखं उनाय्य पद को प्राप्ति होतो है। २ निम्मलिकित गाँच कारणों से जीव ज्ञान प्राप्त कराने में असमर्प होता है - अहकार, कोय, प्रमान, रोग और आलस्य । इं गुदहनों की जाता के अनुसार कार्य नहीं करने वाला, जनके सामीण नहीं रहने वाला, जनके विवरीत वर्तीय करने वाला,

उनके समीप नहीं रहने बाला, उनके विषयीत बताँव करने बाता और अविवर्धा-उनको विष्याओं को (इंपित को) नहीं समसने बाला अविनीत कहा जाता हैं । प बारवार कोट करने बाला, अवंध करनेवाला, (एक दूसरे

की गुप्त बातों को प्रकट करने वाला) निजता करके छोड़ देने वाला और शास्त्रों का सान करके अविवास करने वाला

वाला आर शास्त्रा को नान करक आध्यान करन बाला (अबिनोत कहा जाता है) पूर्ण इतिवाचाल, होही अधिकानी, लोबी, इन्द्रियों की वश मूं हारी बरने वाला, मारत बातुओं का विचाय कर करकेला ही। स्रोगने वाला और अमेरित करणे वाला अधिनीत (अवसंख्य

शील) वहा जाता है। ६ किन्न जाठ वारणों में जिलासीन (बानी)वहा जाना है— बारबार नहीं हैमने वान्त्र, सरा ब्रांटची का बयन करने वाता, सर्म (रहस्य) अबट न करने वाना, तरावारी, अना-वार म करने वाता, अजीन्यों, कोब नहीं करने वारा-सार म करने वाता, अजीन्यों, कोब नहीं करने वाता है। क-

जहा सागदिओ जाण, समं हिडचा महापहं। विसमं मग्गमोइण्लो, अवसं भग्गम्म सोवई ॥९॥ एवं धम्म विजवकम्मं अहम्मं पश्चिविजया । बाले मरचमहं पत्ते अवसे मार्ग व सोयई ॥१०॥ जहा म तिन्नि वाणिया मूल घेत्ण निग्गया । एगोऽस्य सहद लाभं एगो मुलेण आगन्नो ।।११॥ एगो मलम पि हारित्ता जावश्री तत्य वाणिओ । वयहारे उथमा एता एव धम्मे विद्याणह ॥१२॥ माणसत्तं भवे मुल लाभो देवगई भवे | म्लच्छेएण जीवाण नरग-तिरिबबत्तणं धृषं ॥१३॥ का जा बच्चड रवणी न सा पडिनियत्तई। शहम्म कृणमाणस्स अफला जति राइओ ॥१४॥ जा जा वच्चइ रवणी न सा पडिनियसई। ध्रम्मं च कृणमाणस्स सफला जंति राइओ ॥१५॥ जरा जाव न पीहेंद्र वाही जाव म बहुदह । जाविदिया न हायंति ताय धम्मं समापरे १११६॥ बरहिसि रायं ! जया तथा वा, मणोरमे कामगुणे विहास । 'एक्को वि धम्मो नरदेव ! ताणं, न विजनई अन्नमिहेह किंचि ।।१७॥ -महाबोरवाणी ६-१५

(६) जिस प्रकार पाडी वाला समान राजमार्यको छोड़ कर गाडी को वियम भागे पर ले जाता हुळा धुरी के मान होने पर डॉक करताहै।

पर जारू करताहुँ (१०) इसी प्रकार जी अज्ञानी धर्म की छोड़ कर अधर्म की स्थीकार करता है यह मृत्यु के सभीप आने पर धुरी के अन्त हो जाने से गाडोबान की तरह पत्रचालाप करता है।

(११) जिस प्रकार तीन स्वादारी मूल धन लेकर घर सि निकले। एक लाम प्राप्त करके आता है और एक मूल लेकर ही लीडा।

लाटा। (१२) तया एक स्वापारी मृत धन की घी खोकर वापस आया। यह स्यासहारिक उपमा धर्म के सम्बन्ध में नी जानी।

(१३) मनुष्य सब मूल धन के समान है और इससे देव-गति मिलना जाम है। जो जीव नरक और तियञ्च गति योग्य कर्म करते हैं वे निरुचय में अपने मूल धन को भी को देते है।

(१४) जो जो राजि स्थतीत हो जाती है वह वापस नहीं सीटती। (गया हुआ समय वापस नहीं आता) ! अधर्म करने

हीटती। (गया हुआ समय वायत नहीं आता) । अधर्म करने बाते जीवों को राजियाँ निष्फल जाती है । (१५) जो जो राजि व्यतीत होती है वह वायत नहीं

लोडती। धर्म करने वाले जीवों का रात्रियों सफल होती है। (१६) जब तक बुढ़ापा पीडित नहीं करता, रोग नहीं बड़ते और इंद्रियों की रावित कींच नहीं होती तब तक धर्म का

बहुत कार क्रिका चाहिए। आखरा कर किता चाहिए। (१७) राजन्मितार काम गुर्गो (विवय-योगों) को छोड़ कर स्थितिसम्ब (जब कभी) मरणाती पडेला ही।

छोड़ कर हिसी समय (जब कथी) मरणा तो पडेगा ही। हे मरदेव ! उस समय केवल घर्म हो शाण कप होगा, दूसरा कुछ भी शारत कप नहीं होगा। —महावार बाणो ६-१५ आणानिहेसकरे गुरूणमुववायकारए ! इंगियागारसंपन्ने से विणोए ति वुच्चइ ॥९॥

जह पन्नरसाँह ठाणेहि सुविणीए ति बुध्यह । नीयावित्ती अथयले अमाई अनुकहले ॥१०॥

जस्सतिए धन्मपयाइ सिवले तस्संतिए वेणह्य पउण्जे । सक्कारए सिरसापंजलीओ कायग्गिराभी मणसाय निच्छे। ॥ ११॥

यंत्रा व कोहा व मयस्पमाया गुबस्तगात विश्वयं न सिवले स्रो सेव ज तस्स अमूहमायो फलं व कीयस्स वहाय होइ । ॥ १२ ॥

> विषत्तो अविषीयस्म संपत्ती विणीयस्स य । कस्सेवं दुह्यो नाय निवसं से अभिषयण्ड्य ॥१३॥

मूर को प्राप्ता के अनुवार कार्य करने बावा, मुदबों के सबीद १७ने बाना, और उनके इतियों को (बेप्टाओं को) समावि

काला दिनीत पट्टा लागा है (गवीर) । ९ जिल्ला बाइट स्थानों से मुक्तिन बाटा जाता है- नामबुस्ति,

श्राचारा, समायी (सरस) अहुनुश्नी : १० अश्रम: छोटी मी भूग यो भी चुर करमें चाना, कीछ की

बुद्धि स करने बाला श्रवाट (गरुय-भेद) नहीं काले बाला, शब के शास वित्रता करने बाला, शास्त्र पटुकर श्रविमान मही करनवासा, दिली के दोवों वा जहा कोड़ करने वाले वित्रों करकोप नहीं

कारने वाला, प्रतिय विश्वों के निष् एकान्त में यी कत्याणकारी कोराने वाला, कत्र प्रीर सगदा-कगांव की छोड़ने वाला, जानी

क्तह क्षार समझ-ज्याव का सावन वाला आका कुमीन, तदम की राज्या दाला और एकास स्पृत्तिन सुविशेक्ष कहा जाना है १० । जिनके तसीप समंद्रापत्री का अस्थात करे स्वके स्रति

सदा चित्रय का प्रयोग करना चाहिए । है जिप्या कार्य, वाणी धीर मत के द्वारा, निग्य भजीर जोड कर यस्तक शुका कर वजवा सरकार करना चाहिए। ११ सो स्विमान के कारण, कींग्र, के कारण, यह के कारण

श्रीर प्रवाद के कारण गुरु के सभीय विजय की तिहार यह च नहीं बरसा है। (विजय मही बरसा है) उसका यह काय उसी सरह उसते श्रीतृत के निए होता है जिस प्रकार की चच बुद का फास उसते ही विजास के निए होता है। इस

ज्ञाबिभीत को होने बाली बिचाल दोर विकील को मिसने बासी सम्पत्त (गुन) को इन बोनों की जिसने जान लिया है बड़ी जिला प्राप्त करता है। १३

महाबीर बाणी ४६-५४

जायस्य जहामह्र, निद्वतमल-पायगः राग-दोस-भवाईव, सं वर्ध ग्रम माहण ॥२१॥ तबहितयं किसं देशे, अवधियमत-सीणिय । मुख्यय पत्तनिब्दार्श, तं वय बुग भाहण ॥२२॥ समपाणे विद्याणिता, सगहेन य थावरे] जो न हिसद तिबिहेणं, त वय यूम गारण । १३ कोहा वा अइ वा हाता, लोहा वा गई वा भवा मुनंत वयद को उतं वयं बुग माहण ।[२४।] चिरामत्रविश्वा वा, अप्य वा ऋई वा बहु। ल गिल्हाइ अदर्स जे, ल बये बूध माहर्च । ३५॥ हिन्द्र मानग-तेरिस्ट, जो न सेवह मेहन । मगना काय-बार्रम, त यस सूच माहण ॥२६॥ जेश पोस्त जी जाय, नोवजिप्पट् वार्शिश । एक अन्तिन कामेर्डि, त बर्च बूब माहणे ॥२०॥

जो म मज्जह भागन्तं, पद्ययंतो न सीपई। रमद्व अञ्जयकामि, तं यस सम भाष्ट्रणं ॥२०॥

तं वयं वृत माहण

तं वयं चुम महिण

(हम उसे बाह्यण सहते हैं।)

को श्वजनादि में आसवत नहीं होता है, प्रवजित होकर (कटरादि के आने पर) शोक नहीं करता है. तथा जी महापुष्टशी के बचनी में रमण करता है उसे हम बाहाण कहते हैं। २० त्रिम प्रकार गुद्ध किया हुआ योगा मेंल परिस होता है इस प्रकार जो मल और बाप में गहित होता है तथा शाहीय

और प्रथ से परे होता है, जसे हम बाह्यन कहते हैं । २१ को तपस्वी कुश-शरीरबाला, जिलेन्द्रिय, तप के हारा शांस और लून की मुक्ता देने घारा, मदाचारी और क्यायों की

बद्ध करने से दालित में मध्य पहले वाला होता है, उसे हम बाह्य व कहते हैं। २२ क्री इलम-चलन करने वाले जीवों और स्वावर (पश्ची

क्षप, तेज, बायु और वनस्पति। जीवों को जानकर मन, यचन और काया में उनकी हिंसा नहीं करता है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं। जो कोध के बड़ा,हास्य के बड़ा, क्षोच के बड़ा,या सब के बड़ा श्रीकर निरुपा भाषण नहीं करता है, उसे हम बाह्यण कहते हैं। सबित (बेतना वाले पत्र आहि) या अबित, योडा या बहुत जो दिना दिया हुमा (बिमा हुक का) मही हेता है उसे

ष्ट्रम बाह्यण कहते हैं। २५ भो देव मनुष्य और तियंच सम्बन्धी मैधून का मन, वचन और काया के द्वारा सेवन नहीं करता है उसे हम बाह्मण कहते

हें। २६

जिम प्रकार कमल जल में उत्पन्न होकर भी जल से लिप्त नहीं होता है इसी सरह जो काम भीवों में लिप्त नहीं होता है, उसे ष्टम ब्राह्मण कहते हैं २७

. भाषी पृथ मृश्यक्षितः, सम्बद्धः धौराषणः । . साम्बर्धः विद्रुषम्, च यदः श्रम् धारणः । १८ ।

मिन्ना पुन्तकत्तं नाष्ट्रवत्तं व वधते । इति म पन्तद्व ॥ तत् न नप्तस्य धान्त्रः ॥ १९०१

म वि म्'हर्ण संवभा, सं च(कारेण धनेपाः।

म मुनी कामवानेश कृत भीरता न तावता ॥ ३० मनवात समार्थे और, यंग्येटेस मार्था । मार्थेना मनी केट, तवेन केट नावनो ॥ ३३॥

मार्थन मुन्ती होड, तबन होड नायमी (१३२)। कम्मृना यनको होड, बम्मृना होड लशिमी ।

बहर्सी बाध्युचा १५३, सुड्डी १,वड बाध्युचा ।[६६]]

एवं गुजरमाउला, जे भवति दिउस्मा। से समस्या समुद्धनुं, परमध्याणमेव सः ३५०

बसरा० थ० २५ में से

1

को लोलुगी सहो, निर्दोष घृत्ति से जीवन निर्दाह बाला हो, जो गृहत्यों में आसपतम हो ऐसे अकिञ्चन (रिग्रही) स्वामी को हम आहण्य कहते हैं २८

भी स्त्री पुरुष आदि के स्तेह पैदा करनेवाले पूर्व सम्बन्धे को, शांति-विरावदों के सेल-जोल को तथा वयु-जर्भों की एक बार स्थाग देने क बार फिर उनमें किसी प्रकार की आसांदत नहीं रखता वीवारा काग भोगों में नहीं फैंसता उसे हम बाह्मण कहते हैं। २५

तिर मुंबा केने माम से कोई व्ययण नहीं होता, 'कोस्' का जाय कर केने माम से कोई वाह्या नहीं होता, गिनेन सम में रहने माम से कोई गून नहीं होता, और न कुछा को बने हुए बस्त्र पहन केने माम से कोई शास्त्री ही सकता है। ३१

समता से व्यमण होता है;बहाबर्स से बाह्यण होता है; शान से मुनि होता है; और तन से तबस्वी बना जाता है। ३२

मनुष्य कर्म से ही बाह्यण होता है, कर्म से ही दात्रिय होता है कर्म से ही पंदम होता है, और शृद्ध भी अपने कृतकर्मी है। हो । अर्यात अर्थ-पंदा अपने मही होता। को जैसा अरुपाया दुग कार्य करता है, यह पैसा ही ऊँचा नीचा हो आता है) । ३३

इस माति पवित्र गुणों से गुक्त जो दिजोसम (वेष्ठत्राहाण) है, वास्तव में वे ही अपना तथा दूसरों का उद्धार कर सकते में समय है। ३५

माणस्मर भवे

माणुससए भवे मणेग आइ-जरा-भरण-रोत-सारी माणसप्ताम-दुक्स-वैयण-वसस्त्रतीयहवामिम्ए, का अणितिए, असासए, संज्ञानरात्मारिसे, जलवाम्बन्दन्त कुत्राग जलविद्दान्नमे, सुविणगर्वताणोवने, विरुग्न का से अणिक्वे. सङ्ग-वृष्ण-विद्वत्रणवृष्मे, वृ

> माणुस्स्रां सरीरं सणस्या सरीरं दश्यायम**ः**, (

माणुस्सय सरीरं बुक्शाययणं, ि केत, अद्विवस्ट्रृद्धियं, महियमदं व

अवस्त विष्पज्ञतियस्य भविस्सई ।

मनुष्य भव

मनुष्यमञ्जल बनम्, जरा, घरण, रोगः शारोशिक-मानितन अस्यत दुःल, बेदना, सक्ट, उपद्रवादि से व्याप्त, अमुब, जीनस्य, असायदत, संध्याकास में आकास के रण के समान, पानी क जुनजुले जीना, कुशापपर शिवर अलिय्य, जीवन वस्ता दर्शन की उपयाधोग्य, बिगुतु-सा खबल, अनिस्य, जुजु गलन विश्नवत रक्षयाच बालगु ऐसा यह मनुष्यमब पहिले या पीछे अवश्यनिव छोडने योग्य होगा, (छोडमा पहेगा) ।

मनुष्य-शरीर

मनुष्य द्वारीर हु.स्वाधतम है, विविध व्याधियों का स्थान है, ! हुद्दे क्षत्र काव्य से निर्मित, नसं और स्वायु जाल से बैटित मिट्टी के वर्तन जंगा दुर्बल, अतुचि से विरयूण, जिसका काव कभी पूर्णन हो ऐसा, जुद्धस्वपुत्र, बीशे घर जीता सडम-गशन विज्ञान स्वाध बाला, युचे या यश्चात् अवस्य छोडने योग्य होगा, (छोड्ना परेगा)।

मनुष्य के कामभोग

मानृत्य कावनांग अविचन, अज्ञादक्त, जिसमें से बमन् पिता, रक्तिम, गुरू (योध), कोंहु अवता हुं, एंसे दारीरमें सक, मृत्र, इंडिन्न, सेहा (ताक का मैक), की, पिता, पीप जीये और कोंहु से इंडिन्म, होने बाले अमनोज बुगंधी मूल और सड़े हुए वीथे पूरित, मुद्दें के गन्ध सा उच्छवास और अनुस्न निश्चास से कोंगों की चहिनन करने यासा, योमत्या, अप्यकालिया, सहसया, कलमलाहियास-दृश्याबहुजणसाहारणा. परिकिलेस-किरएदुश्यास्त्रसा, अयुरुजणीनमेजिया, सया साहुगरहणिज्ञा, अणंतसंसार-बद्धणाः कद्युगकलियाया । यूहन्तिस्य अमुस्यमाणदृश्या-णुर्वाधणो निद्धिममणिवाया ।

> -भगवतोसूत्र शतक ६ जमाली अधिकार-

जयन्ती-मवणोगानियाण् वण्होत्तराणि

सर् थ मा अवनो सर्वाश्यां वर्षाः समजन्म भरवारी बहादीण्या अत्या अन्य श्रीद्या नियास हरु गृह शर्माय बाग्य बहादीर्थ बदद्र, समग्री श्रीदास, समिति ।, सूर्व

श्यामी: -सुमस भने । साह जागस्यका हाह रे

स्वती ! बन्दगद्या र भीवाण गुराम सारू, धरवे •

द्वराम क्रोप्टाम जानस्यान नारू । इयाम क्रोप्टाम जानस्यम नारू ।

, से केमई व धने हैं तुम सुरुषद है अमरेतायाम साम

•**डिट्रा**•माग•)

खडिंग्न करने बाला, घोमरस, अस्पकालीन,

झरीर की अञ्चलि होने से द.खरूप और अब्धा परिधन और इस से प्राप्त होने वाला, कड़ फ बले यासको पूली की तरह दृ स दग्य बाला, म रूप ये काम चीन है।

इस काल में यह जयाती श्राहिका श्रम श्रीर से धर्म सुनकर, दिल में धार कर, हॉबत-सन स्कार करके इस प्रकार योगसी है --

जचन्ती आविका के पश्ने

धारवाम महाबीर की बग्दन-- नमस्तार करते प्र० - हे भगवन् ! होना अच्छा ।

व॰ -अपन्ती! कितनेह जीवी का

कितनेक जीवो का जगना उ प्रव –हे वज्यन हिंसा वर्धो फरमा का सोना अच्छा और वितरे जयती । जे इमे जीवा अहा्मया अह्म्याणुपा अह-हिमद्वा अह्म्यणाई अह्म्यवाही अह्म्यवाह्मयाणा अह-ध्यसमुदायारा अह्म्येण येथ विक्ति क्ष्येमाणा विहर्रति, एएति ण जीवाण मुक्त साह। एएण जीवा मुणा समाणा मी बहूल पाणाण चूराण जीवाणी सत्ताणं बुब्ब-णवाए सीवणवाए जाव परिवादणवाए बहुति, एए णे जीवा सुत्ता समाणा अध्याणं वा पर वा तद्मवं वा नो बहुति अह्मियाहि संजीवणाहि संजीएतारी भवंति, एएति जीवाण सुक्त साह।

जपती । जे इमे जीवा धन्मिया धन्माणुवा जाव प्रम्मेणं चेय विक्ति करपेमावा विहरंति एएति णं जाव जीवाणं जागरियत साह । एए णं जीवा जागरा समाणा सहणं पाणाणं जाय सत्ताण अदुबलण्याए जाय अविर-यावण्याए यहंति ते ण जीवा जागरमाणा अव्याण चा पर वा सदुमय वा बहुहि धन्मियाहि संजीयणाहि संजीए-पारो भवति । एए ण जीवा जागरमाणा यन्मजागरियाए अव्याण जागरइसारो भयंति, एएति णं जीवाणं जागरियासं साह।

– जबस्ती! जो जोव क्षद्यमीं, ब्रद्यमधिरण वाले, जिनको अधर्म ही इष्ट है, अधर्म कहने वाले, अधर्म देखने वाले. अधर्म में दनि रखने वाले. अधर्म में झानम्द मानने दाले और सद्यर्थसे जीविका करने बाले जीवों का सोना ही अक्छा है। ऐसे जीव सोये रहने पर बहुत से प्राणी चूत, जोब, सस्य की इ न नहीं देते हैं, झोक नहीं कराते हैं बावत सताप महीं पहुँचारे हैं। एसे जीव अधने होने से अपने को, दूसरों को और उमय को अधर्व के विविध कार्यों में नहीं लगाने हैं अतः ऐसे (अधर्मी) जीवी का जंधना (भीये रहना) अच्छा है। जयन्ती! जो जीव धर्मी हों, श्रुत रूप धर्म मार्ग में चलने वाले हों, यावन धर्म नीति से

आजीविका चलाने वाले हो, ऐसे जीवों का जागर रहना अच्छा है। ऐसे (धर्मी) जीव जागृत रहने से यावत सस्वीं की दु.स-संताप नहीं देते हैं। हं (धर्मी) जीव जागृत रहते निज को, पर की तब उमप (दोनों) को अनेक धर्म साधनों में जोडते है ऐसे (धर्मी) जीव जागृत होने से धर्म जागरिकः द्वारा अपनी आत्माको जामृत रखते हैं। ऐसे जीबोका जागुत रहना अच्छा है।

निगर्ह दूरपहियारं

तिग्हं दुष्पदियार नमणाउमी ! तं महा :-१ अस्माविखणो २ महिस्य

धम्मायरियम्स

१ शंपाओ वि य ण केइ पुरिसे अस्वानियरं सयपागः महस्तवागेहि तेलेहि अध्वयेता सुरिमणा गंग्रहृएणं उथ्य-हिता उदगेहि मञ्जायेता सध्यालंकारविम्सियं करेता

मणीकां बालीवागमुद्धं अद्वारस यत्रणाउलं भीअर्ण भीआ-वेसा जावउजीवं विद्वियदिसया से परिवट्टेंग्जा सेणामि

तस्य अम्मापिउस्स दुर्पाडयार मबद्द। अहे णे से तं अस्मा पियरं कैयलिपन्नते धन्मे आधवहता पन्नवहता परुषहता

ठावडला भयइ तेणामेव तस्य अम्मापिउस्स सुपडियार भयडा २ समगाउसो किंद्र महत्त्व दरिहं समुवक्तरेज्ञा तएणं

से दरिहे समृतिरुट्टे समाणे पच्छा पुरं भ ग विउलभोगम-निए समण्यायत् याचि विहरेक्ता तत् व से महस्ते अग्नयाः कमाइ दरिहे हुए समाणे तस्य दरिहस्स अतिये हृध्य-

मागच्छेज्जा तए णं से दरिहे तस्स महिस्स सध्यस्स वि दलयमाणे तेणावि तस्स दृष्यदियारं भवद । अहं णं से भार्त्र केवलिपदासे धम्मे आधवहता परवहता ठावहसा

हे आयुष्पमन्त थानवी ! तीन प्रकार के दुष्प्रतिकार (जिसके उपकार का बदला देवार उर्दाल म हो एक) है से इस Sett -

१ माता-पिता का ~

२ स्वामी (मालिक) का 🕶

धर्माधार्यं का -

१ प्राप्त काल म ही कोई पुरुष अपने माता-रिक्ता की प्राप्त-क्षक सहस्त्रपाक तेल से मालिस करके सुबन्धी पीठी सना कर शीन प्रशार के पानी से स्नान करा कर सब प्रकार के बहुत्र. अर्चकार में विव्यत करें और मनीत मुन्दर बुद्ध वयी बित पात्र भें पकार्षे हुए १८ प्रकार के शाश वाजा मौजन जीमा कर आजी-वन अपनी पीठ पर बंडा कर फिरे उनने भी यह माता पिता का अञ्चल न हो सके, परम्यु यदि यह माता-पिता को देवली प्रह-वित धर्म कहे, बतावे, प्रकृषे और उन (धर्म) में स्थापे (सस्मुख करे) तो यह माता-विता का सुप्रतिकार (उन्हण) हो सकता है।

२ -- हे आयुष्यमन्त श्रमणों ! कोई महापृथ्य किसी वरिक्री की उन्नत (अच्छी) हाल्त में यशाये और दरिक्र पुरुष श्रीमान बनकर विपुष्ट भीग भीगते । ऐसे प्रसंगवर कदाचित् बह महापर्य (जितने दरित्री की उन्नत जाया बाबह) दरित्र ही जार्य सी बह दरिह (जो अभी धनवान सना हुआ) तस (पूर्व छपकारी) के पास तुरन्त आकर अपने न्यामा को अपना सर्वत्य शर्वन कर दे तयानि यह उसके उपकार का बदला दे नहीं सके, परन्तु उस स्वामी की केवली प्रकृषित धर्म कहे, समझाथे, प्रकृषे, और उस (धर्म) में स्थापे-इड फरें तभी वह स्वामी के उपकार से उद्रण हो धके। सुप्रनिकार (बदला) दे सके।

३ केंद्र सवादयममणान वा माहणस्त वा अंतिममेद मांव आरियं घम्मं सोन्दरा निगम्म कालमासे कार्स अन्नयरेमु वेवलोय्यु वेवलाय् उववले । तत् णं से वेवे घम्मापरियं दुन्निकनाओं या वेताओं मुक्तिकर्यं साहरेज्या कताराओं वा निवकतारं करेज्या बीहुकाल्यं वा रोगातकेण अनिमूचं नमाण विभोड्ज्या तेणावि । घम्मावरियस्स ब्ष्यंड्यारं भव । अहे ण से तं = यारिय केवलियण्याओं घम्माओं सह समाणं भूजजों केवलियम्नतं धम्मे आववड्सा जाव ठायहसा भवड् तेणां मेव तस्स धम्मायरियस्स सुम्यंडियार भवड् ।

-धीस्यानांग सूत्र सतीयस्यान १६२०६४

ना राणइ सो पडह

इह आति वसंतपुरे परोष्पर नेह. विश्वमरा निस्ता वात्तिय-माहण-वाणिय मुष्णण्यार ति चत्तारि ११ १ ते अत्यविद्धविषत्य चिल्या देसतरं नियपुराओ पत्ता परिष्यमंता भूमिपइट्टोंग नवर्शम ॥ २॥ रयणीए तस्स वाहि उज्जोणे तहतलांत्र पासुता।

manuscript Communication Communication

3-- कोई तयाहय के व्यवच या मूनि से बार्च ग्रमं का रूप भी वधन मुन कर हुवय में धार कर, धूर्य समय काल रूस कोई ऊषा देवतीक में देव बना। तरदच्यात् मुद्द वेय ग्रमां-वार्य को बुसिस वाले देता से मुमित्रा प्रदेश में छावे, धोर बरवी में पार उनारे, रोयं काल की दमना से छुडाये तरिव ग्रमांवार्य में उपकार का घरना पूर्व नहीं, यम्मु यो प्रविवार्य केवली-रूपित ग्रम में में सर्वावच भ्रम्ट हुए हों सी उनको पुतः केवली-स्वित ग्रम में में सर्वावच भ्रम्ट हुए हों सी उनको पुतः केवली-स्वित ग्रम महें स्वावद भ्रम यर स्वापेन्सिय के तमो ग्रामंवार्य हो मुख्यितार (उपकार का बरना) हो सके।

ठाणांग सुच ठाणा ३

जो खोदना है सो गिरता है।

दसन्तपुर नगर में परन्यर स्तेह से घरेहुए शांत्रिय, बाह्यण, सणिक् और स्मर्णकार (पुनार) ये चार सित्र कहते ये । से धन कमाने के लिए अपने नगर से वैज्ञान्तर में अपने

के लिए निकले और सुमते २ भूमिप्रतिष्ठित नगर में आसे ।

वं रात्रि में उस नगर के बाहर उद्यान में बूक्त के नीचे सोवें। उनमें में प्रथम प्रहर वें क्षत्रिय जायता रहा।

पैच्छड तहमाहाए पलप्रमाण मुख्यापृहिसं मी ।

विस्तिवमणेण भणियं अनेण मी एम अत्योति ।' ४

सार्वास्त्रण युराज्य एवं नाजल अस्त्र ॥ ५ ॥

कणस्पृत्तिम गल्हामस्यि अस्था पर अणस्यनुओं।

बीत नाम जग्पद माहणा नो वि पिस्टड तहेया तद्रयमि वाणिजी स बहुण न खुःभग् समि ॥६॥ जमाइ चडत्य जामे सुवण्ययारी मुबण्यपृरिमं तं। इट्र ण विस्तियमणी मणइ इम तम अत्यो सि अधा पुरिमेण जीवयं एस अत्य अत्यो परं अणत्याजभी। र्जवह सुवण्यवारी न होड अत्थी अणम्यात्रओ । ८ ॥ पुरिलो जवद तो कि पटामि ? पडसुसि अंपद कलाओ परिजो मुबण्णपुरिसो छिन्द सो अगुलि तरस ॥ ९॥ सहाए विवयती सुवण्यद्वीरसी मुद्रष्णपारेण | गोर्लम दिस्या ते मुबण्णयारेण तो भणिया ॥१०॥ कि देमनरमन्गेण अस्य एत्यावि इसी कणवप्रिया खड़ाइ बए खिलो त गिण्हह विभिन्नित सम्बे ॥११ सो सब्दे वि नियसा अंगुलिकणगेण महामाणेउ । श्राणयो मृत्रक्रायारी य दोवि पत्ता नयरमञ्जे ॥१२॥ चितियमिति हणियो त्यतियमाहणमृत् उथाएण । अवह बिय दुण्हि जणे होइ एमी कणपपुरिसी ॥१३॥

(२५ ख्ट्रा भाग)

उस क्षत्रिय ने युश की शाया से लटकते हुए स्त्रणं पुरुष को देखा। आऽवर्ष-चर्कत मन से वह बोला⊸' यहो घन हैं "। उस स्वर्ण पूरुप ने कहा कि धन तो है लेकिन अनर्थमुक्त

है। तय क्षत्रिय ने कहा कि यदि ऐसा है तो हमे नही चाहिये।

इसरे प्रहर में बाह्मण जागा। उसने भी उसी तरह स्वर्ण-पुरुष को देखा। तीसरे प्रहर में बणिक् जागा । यह भी उस स्वर्ण-

पुरुष को देख कर उसमें सुख्ध नहीं हुवा।

श्रीयं प्रहर में मुनार जागा । उसने स्वर्ण-पुरुष को वैशा । बहु उसे देल कर आदचर्यचिकत होकर बोला कि यही धन है। उस स्वर्ण-पुरुष ने कहा धन तो है अगर अनर्थपृत्त है।

तब सुमार कहता है कि धन अनर्थयुक्त नही होता। तब उस स्वर्ण पुरुष ने कहा- तो क्या गिरूं ? सुनार से

कहा-हाँ गिरो । स्वर्ण-पुरुष नीचे गिरा । बहु सुनार उसकी अंगुलियों को काटता है।

स्वर्णकार ने उस स्वर्ण-पुरुष को सड्डे में (सुरक्षित) रस दिया। प्रात-काल जय मित्र आगे जाने लगे तव सुनार ने कहर-

अब वैशान्तरो में घूमने सेवया लाम ? वही पर स्वर्ण पुरुष प्राप्त हो गया है। भैने उसे बहु में रस दिया है। उसे हैकर सब आपस में बॉट से।

तब ये सब लीट गये। उस कटी हुई अंगुली के स्वर्ण से भोजन लाने के लिए विवक् और सुनार बोनी नगर में गये।

उन्होंने सोचा कि यदि किसी उपाय से हम क्षत्रिय और बाह्मण पुत्र को मार डालें तो वह स्वर्ण पुरुष हम दोनो काही हो जायेगा।

षुत्व सय मज्ये समानया गहित्रमुम्मतंबीला । प्रात्तय-माहणकृता विवासित्तम भीवण पेतुं ॥१४॥ पाहि हिएहि त चेत्र चितियं कि चित्रं दिवा मज्ये । मुद्दते शि भणंतिहि बुद्धित खालेल नित्ताहिया ॥१५॥ बित्तित्तस मशे भूजिक्षण दिय-श्रतिया विवासप्रा । देश एसा पाविकते पाविज्ञह वावयसरेणं ॥१६॥

श्री जिनागमकवासंग्रह ९५-९७

पण्होत्तराणि

सामाद्रप्ण भंते ! जीवे कि जणवह ? सामाद्रप्णं सावज्जजोगीवश्ड जणवड ! चडवीसत्यप्ण भंते ! जीवे कि जणवह ? सडवीसत्यप्ण बंसणिवसीहि जणवह ! बडवप्णं भंते ! जीवे कि चलपह ?

यंद्रणएक नीमागायं क्रम्मं क्षयेद् । उच्या गोय क्रम्म निर्मयद्व । सीहगां च वं अपिद्धियं आवापस्तं निश्चसंद्व दाहिलमावं च व जवयद्व । 13.5

11

Y

,

11

उन दोनों से बीच में ही भोजन कर लिया। लाजिय और बाह्मण दोनों के लिए विविधित सोजन और कूप-सम्बद्ध क्षांकि केंकर बापस आये।

नगर से बाहर रहें हुए बाह्यम मोर समिव ने भी उसी प्रकार का विवार दिया। इसलिए (बनके माते ही) बुचने नगर में हतने वे क्यों समाई ? शों कह बार कोमों को तस्त्रार से सार बोले। किर्णामध्यम सोकल सामन्य अपेन सम्बन्ध की स्था

हाते। विरामिधित भोजन काकर ब्राह्मण और शश्चिम भी अर्थ गर्म। इस तरह मार्चो के विस्तार में यह पायमय व्यक्ति प्राप्त की १ श्री जिनायमक वासंप्रह ६५-१७

मश्नोत्तर

है सायन् । सामाधिक से जीव को बया कथ प्राप्त होता है ? सामाधिक करने में सन-पान और काव के स्वाराष्ट्र से मिन्दिति सिलसी हैं ? स्वच्छा सिल्यास्थानकंताय प्राप्त होता !)। हे पूर्व्य ! कीशोत तीर्वेच्चरों को स्वृति की के को बया करन फिल्या है ? सेंद्रीय तीर्वेच्चरों को स्वृति काले से दर्शन-विवृद्धि (काल्यार्गन को रिसीय प्राप्त और काम्य-दर्शन की विवृद्धि (काल्यार्गन को रिसीय प्राप्त और काम्य-दर्शन की विवृद्धि (काल्यार्गन की रिसीय और काम्य-दर्शन की विवृद्धि) होती हैं।

करन वरने से भीव शोज वा लाय होता है और उच्च योज वा बंध होता है। सीभाष्य और आजा वा तच्या सामर्थ अस्त करता है (अनेद जीवीं वा नेता कनता है) और दासिष्य वाब (वाबवरनमता) प्राप्त करता है। पडिश्रसमणेणं संते ! जीवे कि जलमह ? पडिबक्तमणेण वयाष्ट्रशणि विहेद्द । विहित्तवयाष्ट्रि जीवे निरुद्धासये असयक-चरित्ते अदुसु पवय उथन्ते अपुरुत्ते सुन्धांणहिल् विहरदः ।

अवदस्त अपुरुत्त सुप्पाणाहरः । वहरदः । काउसरगेणं संते ! जीवे कि जणग्रः ? काउसरगेणं तोयवस्त्रित्र गराव्छतः विसोहेड । विशे द्वायविद्यते ॥ जीवे निष्युयहियर ओहरिसमेदस्य भार्यः

पतत्वातायोग सुदं सुदेशं विहरह । पक्तवातायोग सुदं सुदेशं विहरह ।

पञ्चवसाराण भतः जाया क जायादः पञ्चवसार्गणं आस्ववतराहं निवंभद्वः । वश्चवसार्गनं इन्हानिरोहं गए गं जीवे सब्बब्ध्वेस् विजीयतन्हे सीइमूप

विहर६ । यथ-पृष्टमंगलेणं मंते ! जीवे कि जणसद ?

थव-पुद्र-गंगलेणं माण-दंगण-चारिस्त्रमोहिलामं सर्गवद्र । माण-दंशण-चारिस-बोहिलामं संपन्ने य ण जीवे अंतर्क्तरियं कष्पविमाणोवयस्तिमं आराहणं आराहेद्र ।

धम्मसद्धाए च भते ! जीवे कि जनपद ? धम्मसद्धाए जंसायासोबरोसु रजनमाणे परजनह|आ-भारधम्मं च जंसदह|अजनाएए फजीको सारोरमाणसार्च हे भगवन् ! प्रतिक्रमण करने से क्षेत्र को किस कल की प्राप्ति होगो है? प्रतिक्रमण करने से (स्वोक्ट्स) वर्तों के छित्रीं (दीय-अतिवार । को बांक देता है। वर्तों के छित्रों को बीक देन से सीना आख्य को रोक कर निर्मेश्व चाित्र साला है ता है। कहा अध्यक्त माता में साध्यमण रहता है, अध्यमण से अध्यम हाता है। साला है। साला हुआ (संयम में) समाधियुर्वक विकरण करता है।

हे दूनव । कायोश्यमें से लेख को बया आप्ता होता है ? कायोश्यमें से जीव धन तथा चार्तमात तथा के दीयों का आप-दिक्त कर ब्याद्ध करना है जीवे भारवाक आप को उतार कर सान्तित्र है दिवस्ता है। इसी नरह आयदिक्त से विश्व वना हुआ जीव शास्त्र किस हो कर स्थान में सुवसूर्यक विकास

है प्रपत्न । प्रत्याक्ष्यान से प्रीय को किस कल की प्राप्ति होती है? प्रत्याक्ष्यान से कीय नकीन पार्थों को रोक कर इक्या का निरोध करता है। इक्छा का निरोध करने से सब पदार्थों में तुक्तारहित होकर यह यस्य द्यान्ति का अनुभव करता हुआं विकास है।

है भावत । स्वय-मुनि समल ते जीव की बया फल दिलता है ? ताब-सुनि भगल ते जान, दर्शन और चारिक क्य कींग्रिजन वारत वरता भी को जान वर्शन, भारित कोंग्रिजम से मध्यम नीय सकल कर्णों का अम्ल कर गोक्ष प्राप्त करता है स्वयम करन विधानों वाला उचन देव गांत की आस्थ्यना करता है

हे पुरस ! धर्म बढा से जीव को क्या फल प्राप्त होता है? घर्म प्रदासे जीव साता वेदनीय से प्राप्त सुर्कों के मिसने पर की उत्तम सामकत कडी होता है। यह गहस्वाचम की छोड देता 20)

साराहेद्र ।

fagige 1

बाहे च मुहं निस्वसेंह ।

इयारे थावि सबद्द । सन्तं च ण पायविज्ञत पडिवजनगर भागे 🖪 मागकलं च वित्तीहेंद्र । आधारं आपारकलं प

ल मावणाए में संते ! जीवे कि जणपह? समावनात् पहहायश्रमार्सं जनयदः । पहहायश्रमायमुवग य सब्य-पाण-भूष-जीव-सत्तेषु पिलीभावम्त्वाएइ | पिली भाषमुक्रमार या वि भावविसाहि काळण निश्मए भवह । राजमाएमं मंते ! जीवे कि जलपड़ ? सल्लाएण नाणात्रर्गिक कम्मं खयेह । धारमकहाए वां भने ! जीवे कि समयह ? द्यान्त्रकार्षः निरुत्तरं जायपद्व । द्यानाकार् मं प्रवादः दभावह । वत्रपन्यमावैण जोवे आगमेशसा भइलाए सन

> संबद्ध आराष्ट्रपार् मं भने ! जोवे कि जनवह ? स्वरम आराज्याम् अन्नाथ सबेह म ह संकिल्हिन्ह वसम्बन्धन निवेगणपाद य भने " जीये कि जणपद ? एमायमनसंविदेहणपाए चिस्तविशेष्ट करेर ।

दुबलाण छेषण-भेषण-संयोगाईणं बोच्छेमं फरेड । अस

पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जोत्रे कि जणयह ? याविकत्तकरणेर्गं पायकम्मविसोहि जणपद। नि

ţţ

ंत्रीत प्रमार (भाष) वन कर हारीर के और मानसिक दुनों का त्रीत्या छेटन भेदन समीय विद्यान जादि के तुको का विकटन करता है और अव्यावाध मोल गुर्जों की प्रायत करता है। है भगवन ! भाषित्वास करने में जीव क्षाप्त कर प्राप्त प्रार्थित के प्राप्तित्वा करने में जीव क्षाप्त की सन्तरिक करता

छद्रा भाग)

हा करता है। प्रायदिचल करने से जोय वाय कम की श्वाद्धि करता हा है। अनिवार (द्रोप) रहित होता है युद्ध मन से आधारिकत यहन करने ते करवाण मार्ग ओर उत्तक चल को बिडाइ करता है और उन्ने वह वारित्र और उत्तक करने भोज को आराध्यम करता है। होंगे है समावन् । कामध्यम करने से जीव को बच्च कल

ह भारावन् ! समायना करने से जीव को बचा फल भिकता है? सामायना करने से फित से आहुकाद (प्रमीच) उपाय होता है। साहुकाद काव को प्राप्त जीय गव पाण-मूकतीब सीर मार हो का है का मुक्ताद काव को प्रमाद की या को यो के प्रति भीती है साह एक साला जीव अपने मार्थों की विद्यादि कर निर्मय ही साह एक साला जीव अपने मार्थों की विद्यादि कर निर्मय ही है सावन् ! स्वास्थाय से जीव को बया लाव होता है ?

स्वाप्त्याम से जीय जानावरणीय कर्ष का दाव करता है।
है भगवन्। धर्मकथा से जीव को किस चक्र को प्राप्ति
होती है। धर्मकथा से जीव कर्मी की निकंद करता है। धर्मकथा
से प्रवचन की प्रशासना करता है। प्रवचन की प्रयासना करने से
जीव घरिया की लिए गुगा कर्मी का बाय करता है।
है भगवन्। धून की आराधना करने से जीव की

पाल विज्ञता है? शुक्की आराधना तो अज्ञान का लाय होता है इसलिए यह जैस कहीं भी बदेश प्राप्त नहीं करता है। है सावन्! जीव विस्त को एकाप्तता से बया कल प्राप्त करता है? मन को एकाप्रता से बीच भन का निरोध करता है। (यह समुग्न को और प्रमुख नहीं होता)। **३२)** सजयएनं मंते ! जीये कि जनवड ?.

संजमएगं अगण्हयस जनवह । गयेण भने । जीवे कि जलबह ? तयेण योदाण जलपद ।

योदाणेणं भते । जीवे कि जनवह ? थोशणेणं अकिरियं जनयह । अकिरियाए भवित तत्रो पण्छा निकाइ, युकाइ, बुक्बइ, परिनिच्यायइ, सन्द

देवलागमंत करेड 1 क्रमाय-प्रवचनकार्याकेकं भने ! जीवे कि जनमह क्रमाय-प्रवचनपाण्य बोयरावभाव जयपद्व। बीयर गमायपडिक्ये वियाण जीवे समगुरद्क्षे भवदः।

बीयरागयाए ण मते ! जीवे कि जगपद ?

कानी एक वरिमाने जिलाहा बर्माण में मते ! भीते हि अगवद ? बर्चेण व अधिकत अनगर। श्रीत्वने संभी प्रश्वन

बीयशयपाएं नेहामुबंधनानि तप्रामुबद्यकानिः कॅरिक्टरहा मण्डामण्डेल् नर्-ऋत्व कच-रत्त-गंधेत् प्रे farrag i चानीत संघते र जोदे कि अस्प⊈ ?

हर्म **इ**न्हां भाग)

हे प्रगण्य ! संघम से जीव को किस फल की प्राप्ता होती है ? संदम से कीव कमाळवार (श्वीम दर्शी से शहत हो मा) प्राप्त करता है

हे परायम् ! जीव को सद से बया लाथ होता है ? तप से कर्मका शत होना है :

के भारत होता हो। हे भारतम् । क्ष्मेंश्वय से जैव की क्या लाव हैं? कर्स-शुक्राय से जीव क्षय प्रकार की जियाओं से रहित हो जाता है।

हर क्षयं सं जाव सबं प्रकार का किटाओं संराहत हा वाता है। अफिय हो जाने के पत्रचात् वह नित होता है, युद्ध होता है, वृदत हीता है, निर्वाण प्राप्त करता है और सब दुनों से छुटता है।

हे पुत्रम ! जीव यथामों के स्थाम से क्या फल प्राप्त करता-सिंह ? द्याम के स्थाभ से जोव बीतराशका प्राप्त करता है। बीत⊸ सिंहाम क्षात्र को प्राप्त हम जीव सुगर दुवों में समयाब रक्तने

रागभाव को प्राप्त हुआ और सुग हुनों में समझाब रक्षने बाला होता है। हेपुत्रस ! बोतराग से जीव को स्थाफल विस्ता है?

हे पूरा ! बोतराग सा जोव की क्या कर विस्तता है? हा बोतराग से जीव राग के बन्धनों और तुष्या के बन्धनों को ही जिलनिय कर देता है और बनोक या अमनोक पारर-वर्धा-क्य-रस और तन्य में विश्वतवाय धारण करता है :

हे शायन् ! शमा (सहनशीलता) से श्रीवको प्रश

साम होता है ? शमा में जीव परिषहीं को जीतता है। है भगवन ! निर्सोधता से जीव को क्या फल मिलका

है भागता !! लकामता स जाव का देवा फल सिल ग है ? निर्कोशना से जीव श्रीरूपन (अपरिप्ति!) वनता है .सपरि-पही जीव धननोल्ये पुरसों के समायेनीय हाता है. अयोत् २ कर्टों व पराधीनताओं से बच काता है। (YF

भवड ।

मिरुमद्यसंग्रे अहमवहाणाः निहाबह्। भागतच्चेण मते ! जीवे कि जणवड ? मायतच्वेण मार्यावसोहि जणयइ | मार्यावसोहिए यहुमाने जीवे अरहं नपन्नतस्त धन्मस्त आराहणवारि अभ्मुई इ । अरहतनन्नत्तरत धन्मस्य आराहणयात् अभूः

द्विता परलोगधम्महत आराहए भवद । करणसच्चेणं भते ! जीवे कि जणयह ? करणसब्बेणं करणसन्ति जनयइ । करणसब्बे बद्दन

जीव मणपूर्त संज्ञाराहए मबद्र ।

माणे जीये जहावाई तहाकारी यात्रि भवइ । जीवसच्चेणं भेते ! जीवे कि जणवह ? जीगसब्वेण जोगं विसीहेड । मणग्तवाए नं भंते ! जीये कि जनपद ? मणगृतप्राष्ट् जीवे एगम्मे जणबद् । एगम्मिस्ते ण

जणयइ । अविसंवायणसंपन्नवार ण जीवे धम्मस्स आराहर

महययात् ण भते ! जीवे कि जणयह ? मह्ययाण् अणुस्मियस जणयङ । अण्हिमयसेण जी^{हे}

अञ्जनवार् काउन्नृषय भागुन्नृषयं अवित्रवाद्यं

अन्त्रवयाए ण मते ! जीवे कि जणबह ?

हे पुत्रव । सरलता (निष्कपटता) में श्रीव की पद्मा फल ं प्राप्त होता है ? सरलता में कीव काया की संग्यता, घाट की त सरलता याया की सरलता आर एक रूपता से कीय धर्म का

भारत्यक होता है।

• 1

है पूरव में सुदुता में जीव बया फल प्राप्त करता है ? भा सब्ता से जीव समितान 🕷 पहिल हे ला है। निगम्मासी जीव कांगल गद्ता प्राप्त कर लाह प्रकार के सद स्थानों की युर करता है। हे पुत्रम े जीव मावों की सत्यता से त्या कल प्राप्त

करता है रे भाषीं की सत्यता से मार्गो की विग्रद्ध होती है। शाबों की विश्व दि होने पर जीव अरिहन्त प्रकृति धर्म की बाराधमा करमें के लिए उद्यत होता है और अर्धन्त प्रकरित शर्म की आराधना में सत्पर हुआ जीव परलोक धर्म का आराधक होता है।

🍃 पुरुष ! करण सस्य से जीव को क्या फल मिलता है ? करण संस्म (सरम प्रवृत्ति करते) से सत्य विद्या करने के शक्ति पैश होतां है। करण साय में रहता हुआ जीव जैसा बोसता है चैता केरने वाला होता है।

है पुत्रय ! योगों की सत्यता से वीय की बया कल जिल्ला है ? चीनों की सत्यता में मन, बचन और कामा के व्याबार रूप

मोगों की विशुद्धि होती है। है पुत्रम मिनीसुप्ति से जीव की वधा काभ्य होता है ?

मनोगु प्त से मन को एकापता प्राप्त होती है। एकाप इस बाह्य कीय संपम का खाराधक होता है।

(X7 m श्रवगुष्यापुणं मते ! जीवे कि जनमही

श्रवगुरुवात् निवित्रवार जनवद । निवित्रयारै

शीवे बद्रगुरी अञ्चलकोनमहत्रकारी या वि विहरह । कावगुरायाए ण घरे ! जीने कि जणबह ? कावगुलवाए संदर जणबार । मधरेण कावगुर्त र

वावागविगरोहं करेड । नामसंबद्धवाए णं घते । जीवे कि जणगढ ? भाणसंबद्यमार् जीवे सन्त्रमायाहितम गणयह) संपन्ने णं जीवे चाउरते समारकतारे न विणस्त

शहा सुद्दी समुक्ता पश्चिमा थि न विणहस सहा जीवे रागले संसारे न वि विजरसह माण-विषय तय-चारित भोगे सपावण्ड स सम्म समयविसारत य असंवायशिवने भवते)

दंसणसंबद्याए णं मंते ! जीवे कि जमपट ? स्मनसं । द्रवार सेलेसीमाय जनवड । सेलेसि पडि

क अनगारे चतारि केवलिकम्बंसे रावेड । तभी प

सिक्झड, ब्रक्डाड, मुक्चड, परिनिब्दायड, सरबद्दप्राण करेड़ ।

सोईदियनिग्महेणं चंते ! जीसे नि जणबद्ध ?

सीइंदियनिग्गहणं मणुसामणुसेस सदेस रागदी

(50

छहा भाग)

हे पूज्य ! यजनगन्ति (जजन संबम) से जीव की क्या लाभ होता है ? वचन गृष्ति से जीव विकार रहित होता है। निविकार जीव आध्यात्मिक योग के साधनों से युक्त (बचन सिद्धि वाला)

हो कर विचरता है।

हे पुत्रव ! दारीर-संयम (कायगुष्ति) से ज व की क्या फल निलता है ? कायगृष्त से सबर (वापों का वकना) होता है । सबर (काय निवध उरपार होती है तथा)पान के प्रवाह का निरोध करने

धाला होता है।

हे भगवन ! ज्ञान-सम्पन्नता से जीव को क्या लाच होता है ? ज्ञान-सम्प्रता से जीव सब पदावाँ का ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञानसम्बन्न जीव चपूर्वति रूप संसार-चन में नहीं भटकता है। जिस प्रकार डोरे वाली सुई नहीं मुनतो है इसी सरह सुत्र वाला

शानी पुद्य संसार में दूखी नहीं होता, नहीं भटकता । यह ज्ञान. विनय-सय-चारित्र और योग को प्राप्त करता है, अपने दर्शन और अन्य के दर्शन में विज्ञारद होता है और परवादियों के हारा वरामत नहीं होता है या असत्य मार्थ में फंसने बाला

महीं होता है। हेचगयन् ! दर्शन सम्पन्नता से जीव क्या फल प्राप्त

इतरता है ? दर्शन सम्पन्न स से जीव संसार के शलका अज्ञान का छेदन करता है। उसके जान का प्रकाश विख्या नहीं होता। द्यम प्रकाश में शान-दर्शन से अवनी आप्ना की पावित करता प्रवाधिचरता है।

हे भगवन् ! चारित्र-सम्प्रता से खोव बया फल प्राप्त करता है ? चारित्र-सम्पन्नता से जीव शैकेशी (मेर के समान (नद्दथप) माव को प्राप्त करता है। शैतेशी माव को प्राप्त सन्तार निशाह जनवड । तत्त्वबयहर्व बन्में न मंत्रह पुश्ववर्ड ^६ निज्ञरेह।

कोहविजयेणं घते । जीवे कि जनपा ? कोहविजयेण संति जलयड | बायायैयणिग्जं कम्म^ह यंग्रह, पुरवयद्व च निजनरेड |

माणविजयेणं भंते ि जीवे कि जणयह ?

माणविजयेणं अञ्जव जणयह । माणवेयणिण्यं करमं न बंधर, पुरवस्त्रं च निज्जरेड ।

मायाविजयेणं धंते ! जीवे कि जणयह ? मायाविजयेणं अउजय जनयह । भायावेयणिउन्नं म

बधइ, पुरबधद्धं च निज्जरेड ।

स्रोभवित्रयेणं मंते ! जीवे कि जणवह ? स्रोमविजएणं सतीसं जलयह | स्रोभवेयणिएजं करमं - केवलों के सेय रहे हुए बार कभी को क्षय करता है और उसके इयरचा मिद्ध-युद्ध, मुक्त और ज्ञान्त होकर सब दु:शों का अन्त करता है।

हे पूरव ' भोजेन्द्रिय के नियह से जीव को क्या कल निजता है 'ओजेन्द्रिय के नियह से सुन्दर या असुन्दर कारते में राग-देव रहित होता है। अने रागदेव से होने बाले करों का सम्य नहीं कारता है और यहाते बांधे हुए कार्यों की निर्वरर करता है।

निर्मा है पुत्रव ! कोध पर विजय पाने से जीव को क्या कल है पुत्रव ! कोध पर विजय पाने ने जीव क्षमा गुण को प्रकट करता है जीर कोध से उत्पन्न होने वाले कमों को बांधशा है और पूर्वयद्ध कमों की निर्शेश करता है।

है मनसन् ' मान पर विमय वानें से जीव को क्या साम होता है ? मान पर विजय पाने से मृहुता प्राप्त होती है। अधि-मान से मंग्रने वाले कर्मों का यह बन्धन महीं करता और पूर्व-

मान से प्रधान वाल कमा का वह बन्धन नहीं करता और पूर्व-बद्ध कमें की निर्भाग करता है। है मगबन ! भाग पर विजय पाने से खीब को बचा फल

मिलता है? सामा पर विजय पाने से जीव सरलता गुण को प्रकट करता है। सामा से सघने वाले कर्नों को नही बांघता है और पूर्ववड कर्मों की निर्माण करता है।

है अगयन् ! लोग विजय से जीव को क्या फल मिलता है? लोग यित्रम से जीव को संतीय गुण की आदित होती है। लोग से स्थान के कभी को वह नहीं बीधता और पूर्वबद्ध कभी की निर्माग करता है।

य भवड ।

विज्ञादीन-निक्छावंसणदिनवेशं संते । जीवे हि नणबह ?

विज्ञवास-विच्छादसणिवज्रयेण नाण संसण विद् साराहणवाए अन्तु है । अठुविहस्स सम्मस्स कम्माहित-भोवमवाए तत्पढमवाए जहाणुषु जोए अठुगिमहित् मोहिणिश्न कम्म जावाद्द, पंचित्र नाणावरणिश्न, मध-विष्ठ दसणावरणिश्न, पंचित्र अतराह्य । एए सिहित वि सम्मसे जुगव ववेद । तभो वच्छा अणुसरं कसिणं विर-

पुण्ण निरावरणं विसिध्यं विसुद्धं क्षेतालोग्यमार्थं कैवलबरनाणदमणं समुष्पादेइ । जान सत्रीती सबद्दः ताब हैरियाबहितं हम्मं निबच्यद्व सुरुक्तिस्तं बुसमयिहद्वं । त पडमनमए बह विडयसमए वेड्नं, लह्यसमए निज्जिणी संबद्धं पृद्व चरीरियं वेड्नं निज्जिण्य सेयाले थ अकम्मया

-भोवमञ्चेयस्कर[्]पाटमाला १७५-१८३

मंघत्यई

गुणभवन-गहण मुघरवण घरिण इंतण-विमुद्धश्यागा । संघ-नगर ? भद्द ते अवस्व-चरित्तपातारा ।।

है भगवन ! शाग द्वेष और मिथ्यादर्शन के विजय से जीव को पया फल मिलता है ? राग-द्वेच और निय्यावर्शन के विजय से जान, दर्शन और चारित्र को आराधना में वह बोबास्मा उद्यमी बनता है और बाद में बाठ प्रकार के कमी की गांठ से मुक्त क्षोते के लिए सर्वप्रयम यवाकम अहावीन प्रकार के मोह-नीम कर्नका क्षयं करता है। इसके बाद पाँच प्रकार के शाना॰ वरणीय कर्नका, नो प्रकार के वर्शनायरणीय कर्मका और पाँच प्रकार के अन्तराध कर्म का इन तीनों कर्मों का क्षय करता है। इसके बाद अँव्छ, सम्पूर्ण, आवरण--रहित, अन्धकार रहित, विश्वद्ध और लोकालोक की प्रकाशित करने वाला केवल जान. केवल दर्शन उरपन्न करता है (प्राप्त करता है)। वह जीव जब तक समीगी होता है तब तक ईवांपविक कर्म बांधता है। उह कमें का स्वरामात्र दो समय की स्थिति बाला और सुलकर होता है। बहु कर्म प्रथम समय में जीवता है। दूसरे समय में बेदन किया जाता है और तीसरे समय में बट्ट हो जाता है। इस तरह असके बड, स्पृब्ट, उदीरित, बेदित और निर्वेदित होने पर mw जीवारमा कर्नरहित हो जाता है।

संघ-स्तुति

उत्तर गुण रूप सबन से गहन, खूत⊸रूनो से झरा डआ सम्बग् रर्शन रोहरी बाला, तथा असड बारिकल्प आरून (किल्ला) बाना हें सबनगर ितेरा कल्याण हो । संतम तत-तुंबारपरच सभी सहस्त्रसातिपर^{कारी} जार्गडचकहरत भवी आप संपा

मर् मो वाष्ट्राण्^रनगरम् स्थानियामुग्यम्^{रास्त}ः। सम्बद्धानः भगपताः स्थानिस्थानामः।।

कामस्यत्रलोहिबिकामयस्य मृत्यस्यकारेहमालस्य । पचनहरुप्रविदक्तियस्य मृत्यस्यस्य ॥

सावगत्रगमहुअरिवरिबुहस्स जिवासूररेपगुद्धस्म । संघवअनस्य सर्वं समयागणसङ्कावसस्य ॥

परतिश्वियगष्ट्यह्नासगस्य सबसेयविश्वतेमस्य । जानुब्जीयस्य जषु घर् बमसंप्रमुरस्य ॥

धर्द् धिद्दवेलापश्चियस्स सञ्झायबोयमगरस्स । अवकोहस्स चगवओ सघतमुद्दस्य तदग्न ॥ -भो नवोधुत्रम् मंघ को चक्र की उपमाः⊶

संपन और तब रूप नाचि (चक्र का मध्य चान) और भारों से संयुक्त सन्यवस्य रूपी थी (पाटा) बाजा तथा

प्रतिचक रहित (बिरोध पक्ष रहित) अप्रतिहत वित वाला ऐसे सम्बन्धक को नसरकार हो तथा उसकी सदा जब हो ।

सग्र- चन्न को नमस्कार हो तथा उसकी सथा जब हो । संघ को एवं की उपमाः •

द्यील रूप पताका-ध्यका जिस पर उड रही है तप, नियम क्य घोडे जुड़े हैं तथा स्वाध्याय रूप आनन्द व संगल

ध्वनि करते है ऐसे ऐडायाँ युक्त सम रुप रच का कत्याण हो। कामभीग से अलिप्तता के कारण संघ की कमल की उपमा:-

काम भाग संबंधित के कारण संध का कमल का उपसा; जो कर्म कर रज-भाउव और जलप्रवाह से बाहर निकला है अर्थीर् निजेंग है तथा भूत-ग्राम्य रन स्पी सम्बी बाल

(बंडी बाला, यब महाबन कर स्वार करियका (बीज कीय) सामा है। उत्तर गण कवा आहि जिसका प्रशान होतर है तथा ब्यावक कम कद समुक्तों से विदा हुआ है, जिनेटडर रूप भूषे के सान-प्रशास से विकसित है, अनगण कर सहस्र पुत्र बाहा संघ-

हपी पद्म-समस का करवाण हो। संघ की सूर्य की उपमा:-

अन्य सीर्यंक्य पहें को प्रया को नगर-मंद करने वाला. सप-तेज रूप चनश्री कान्तिकाण, जान कर प्रचारा बाला, ऐसे उप-राम दमनदील मंध-मूर्यं का विदय से बाह्याण हो ।

गम को समृद्ध को उपमा:-

धेने रूप जवार बाला, स्वास्थाय प्रवृत्ति रूप समार-धाह-बाला वयरणे आदि से शुक्षा व होने योजा. सगवान, यरब विज्ञात सी संप-समुद्र का कस्याण हो ।

देव क्ष्मित्रहे काम १८८ जर के देव । हो वे पहार्य होते. सादमा क्षमान ने प्रमुख्यों एक उपकार के स्थापना है।

अर्थान्त्रास्यः । चन्त्राः चन्त्रः दूर्णन्यास्य चनवानु दृष्टान्त्रः । अर्थान्त्रस्य स्थार् चन्त्रः चन्त्रस्य न्यून्तरस्य ।

स्वक्षकराज्यानाम् रायाः । त्रुणः चन्तराः (४, शक्तकः । सर्वेषक्षार्थाकरुवः स्वरं । त्रुणः चन्तराः ।

विभावनायप्रवरम् (च १० कुरुवाँ ५० मृद्धाः १८ वर्गः १८ १८ १८ ।) विविष्टमुक्तवस्थाः ५० १८ १८ १५ ५६ ।।

माण्यक्कयणविष्यंत्रभविष्यतिमात्रस्याः । संदासि विषयपणभाः संस्थानसम्बद्धाः ।।

–था नदोगुष्रम् ॥ 🕡

संघ-मेरः~

सम्पादशंन रूपी उत्तम, बळामव, हुढ, स्थिर और बहुत गहरो पोडिका आधारशिला बाले, धर्म, इप उसम रस्नों से मण्डित, सोने को मेलला वाले, यम-नियम कप स्वर्णक्षिला तल पर निर्मल व प्रास्पर जिल रुपी उप्ज कृट वाले, सन्तोप रूप मन्दन बन की मनोहर व सुवन्धित सुवान से भरे हुए, जीव बया हपी मुग्दर कन्दरा में (कर्मदायुओं के प्रति अथवा भिथ्या मत बालों के प्रति वाद-लंदिय सम्बन्न होने से) बलिप्ठ मुनिवर रूप सिहों से युवत, स्थारयानकाला रूपो गृहा में संवडों हेतु रूप धात बन्द्रकान्तादि की तरह अरने हुए श्रुतरहन और जाज्वस्यमान आमर्वेषिध आदि लब्धि रूप औषधियो से युक्त, मंबर रूपी बेट्ड जल के बहते हुए प्रवाह रूपी हार से सुझोबित, स्तुति-स्वाध्याय आहि का पाठ करने वाले शावकतन रूप मम्रों के शस्त्रों से मानो नाचते हुए अन्तराल (पर्वत के गुकादि विवर और संघके ध्यादपानशाला) बाले, विनय से मन्त्र और घेट्ठ मुनिवर रूप बिद्यत् (वित्रलियों) के द्वारा देवीत्यमान शिवर वाले, विविध मण्युवत और कत्पवृक्ष के समान साधुओं के , मूलोत्तर गुण रूप) धर्म हव फल व विविध ऋदियों रूप फुर्जों से युवत (यच्छ रूपी) . इस हाले और उत्तम ज्ञान रूप रत्नों से देवोध्यमान-मनोहर विवल बैडपैमय-शिलर बाले संघ रूपी महा मन्दर गिरि (सुमेश) को विनय से मध्य होकर में बन्दन करता है।

तित्ययगावारि

(यदे) उत्तम अजिय समयमितनंडण-मुनई-मुप्पमभुगःं सिन-पुप्फदत-सीयल-निज्जमं धामुपुरत दी यिमलमणंतयग्रम्मं मीत कुर्यु अरं च महिलं दी मृतिसुट्वय-निम्नीम पासं तह बढमाणं दी

गणहरावलि

पडमित्य इंदम् है बीए पुण होड अशिमप् है ति । सङ्ग् य वाजम् है तओ विपत्ते सुद्रम्मे य ॥ मंडिय मोरियपुर्त अकंपिए सेव अधलमामा य । सेअज्जे य पहासे गणहरा हृति वीरम्म । निरमुङ्गहसासणय कथड मया सब्बमायदेसणय । कुरामपम्पनासनाय जिल्वद्वदेशसासणय ॥

थेरावाले

मुहम्म सम्मिवेसाणं जंगूनामं च नासय। यमयं कच्चायणं यंदे वच्छ निज्जंपयं तहा॥ १॥ जसमह सुनिय यदे संमुख चेव धादर।

महबाहुं च पाइश कुरुमह स गांयम ॥ २॥

तरि

द्भव मदेवनी स्वामी, वामी, वामी, सगमनाथ स्वामी, अनिनन्दन स्वामी, मुगतिनाय स्वामी, मुग्न (पदान्) स्वामी, मुगावंताय स्वामी, शश्चित चन्द्रक्रम स्वामी, पुण्यस्त (मुजियानाय) स्वामी, श्रीतत्नाय स्वामी, अयासनाथ स्वामी, और वानुश्च स्वामी, की वस्त्र करता हैं।

विश्वस्तर व्यासी, जनस्त्रनाय स्वासी, धर्मनाय स्वासी, शानितवाय स्वासी, कुम्बुनाय स्वासी, अरनाय स्वासी, धरिस-नाथ स्वासी, मुनिनुसत स्वासी, सेमिनायजी को, वास्त्रनायजी भीद खद्वसान महादीर स्वासी को व्यक्त करता हूँ

गणधरावली

ग्रहाँ (महाबोर के शासन में प्रवम गणधर भी इन्द्रभूति (गौतम स्वामी) हैं दूसरे अन्तिन्त्रित है, तीसरे नायुव्हित है, चीचें क्यवत स्वामी और पाँचवें गुधर्मस्वामी, है ।

मणिडतपुत्र, मौवेपुत्र, अकस्पित, अचलकाता मेनार्य स्रोर प्रमास मे (प्यारह) महाबीर स्वामी के गवार है।

स्याविरावली

(जहांदोर के प्रकान पहुंधर) अनिन केंद्रवायन पोल काले सीमुध्यं रहायों की, काउयपरोजीय अन्यहनायों की कारवायन गोत्रोद प्रमानस्थानी की नंसगोजीय घोटारयंवन आसार्य को बन्दन करता हैं।

नुषिक गण बाले (स्थाप्तासस्य योत्री) बत्रोबद्ध को, साहा गोत्री सध्य विश्वय की, प्राचीन गोत्री चत्रशहू को, जीतम गोत्र स्थूसबद्ध को बन्दन करता हूँ । ष्ट्रारियगुल माइ च वदिमा हारिय च गामरत । यदे कासियगोल संडिल्ल अञ्जनीयधर ॥ ४ ॥

तिसमुद्द्यायकिति दीवसमुद्देशु गहियपेयाल । यदे अञ्जलमृह अवस्त्रियसमुह्यमीरं ॥ ५॥

, धीर ॥ ६ ॥

, झरग पञ

अज्ञनगं

एलावच्यसगोत्तं वंदामि महागिरि मुहस्यि प सत्तो कोसिअगोत्त बहुलस्म सरिटवय यदे ॥ ३ ॥

42)

प्रतास्त्रयोग वाले महानिरि को और मुहाली को बादन करता हूँ। (स्मूलकट के प्रधान को शिष्य-स्मृतिरि और मुहाल- बोनों की अक्षायांक्रनो अन्त २ है। यहां सहानिर्द को सावार्यकारी दी गई है वर्षों कि नरवीसूत्र की संकानकर्ता देववाकर का उनमे हो सावन्य है।

ा ताराबान् सीताल्योश काते गुल्बांत के समान बार काले वित्तवह सावार्य को बादन करता है बहुक और देतिसह महानिदि के प्रधान तिराय थे । य होने धनक तरीय केता य । हिस्तिशीनी क्वाती आवार्य को और होतिसीन करणान्य को बरदा करते हैं । कोशिरसीनी शार्तिक्य आवार्य को तथा

का बरना करते हैं। कोशास्त्राया स्माप्टन्य आकाय की तथा मार्च भीतपर धावार्य को प्रयान करता है। (सार्वेद्धाय के शा थ) शिक्को के नि पूर्व, वशिक्ष, वशिक्स दिस्सा से शिक्त समूह यद्येल चैको हुई है, होव लयुरी के जान से मेमाचुन, याने बात (होवन्गार प्रजान के सन्साय केला) और

सबुद्द के लवाय प्रामीत आमें तरुद्ध को संपत्त करता है। कारिकारि व्याप का तरा दाने बाने मुझेपन विचारी करने बाते, शकीर व्याप त्यान बाते, जानरहेनारि कुनी को क्याबना कार्न बाते, अनु-नगर दे चारमानी जीर ग्रीर कार्य सबु को जानकार करता है।

मत् को प्रसासकार करिका हूं। आतं दर्शन सर्व की श्रीत श्रीत के कर्मका उपूर्ण पहले पोने, राग द्रेस ग्रीत होने से क्षण्या-स्वक्त अस्य जाने कार्य पिनास श्रीत के सामक शृह्यका कार्य करणा हूँ।

भ्यापरस (मानुष-प्राप्त प्राप्तरस सबसे प्राप्त-स्था-स्वर्स) रिसर दिएकि प्राप्त करण, भर स्वृत्त (स्वृत भर सारे) पूर्व नेवा सर्व प्रार्टित को दिग्गित प्रस्तेश सामे से प्रयास सार्थना होता भ्राप्तर का सावस सा (सृष्यास) स्था से स्था के नेवर बहिन्द होती। जन्नंजण- धाउसमप्पहानमुबियक्षयत्यनिहाणं । बड्ढ वायगवंसी रेवइनक्सत्तनामाण ॥ ९॥ अयलपुरा नियखंते कालियसुयआणुओगिए धीरे । बमदीवनसीहे वायगपयमुत्तम पत्ते ।। १० | जीत इमी अणुओगी पयरद अज्ञावि अङ्हभरहामा बहत्त्वरनिःगयज्ञते से वंदे खदिलावरिये ॥ ११॥ ततो हिमवतमहंतविवकमे धिइपरवक्तमणते । सउद्यायमणतघरे हिमयंते यदिमो सिरसा ॥ १२॥ कालियम्यअनुओगस्स धारए धारए य पृथ्यानं । हिमयतसमासमये वदे नागज्ञानायरिष् ॥ १३ ॥ मिडमहबर्मपति आणुपुरयी बायगसणे यसे । शोहम्यतनायारे नागज्ञुणवायए यहे ॥ १४॥ वरफणगनविष्यवंदगविषय सवरकमलगम्भमरियसे । भविअज्ञणहियअबद्देषु स्यागुणविसारत् धीरे ॥ १५

िल्ल पाठाव्या

40

नाति संस्पत अञ्जल चांतु के समान शरीर की कृष्ण प्रमा बाठ, पत्री हुई बान व नीले कमरू के समान कात्तिवाले रेवती नसाथ नामक आचार्य का वाचक बडा नृद्धिगत होओ।

अचलपुर में दोशा लेने वाले, कालिक श्रुन के दवास्वाम में नियुक्त, घोर और उत्तम बायकपद की प्राप्त तथा दहादियक बाला से उपलक्षित सिंहनायक आवार्य की बन्दन करता हूँ।

जिनका वर्तमान में उपलब्ध यह अनुयोग यात्र भी माग्रे भरत क्षेत्र में (ब्रिलन वरत में) प्रचलित है और बहुत से गारों में जिनका यदा व्याप्त है उन स्कस्टिलाचार्य को में दरश काता है।

हिमबान की तरह महा बिक्स बाले (बहु क्षेत्र ध्यादी बिहार करने वाले) अविधित्त धेर्पत्रधान पराक्षप बाले, और मनन्तु प्रमें वाले प्रुप्ती के स्वाध्याय को धारण करते हैं। हिमक्षत नामक आधार्य की निर सुद्धा कर बदन करते हैं।

कारिक सुत के अनुयोग को धारणा करने वाले, उप्लाह कारि पूर्वों के धारक क्षमाध्यकण हिमबन्त को तथा इनके शिट्य नागार्जनावार्ध को कडन करता हैं।

मृतु (कोमल) भार्यन आरि गुणीं हैं युक्त, अनुद्धन से (षम भीर दोक्षा से) बाबक यह को प्राप्त और ओपमुन (उपसर्ग मार्ग का) समाचाल करने बाते नागार्जुन बाबक को सन्दन करता है।

अर्दभरहप्पहाणे बहुविह- सञ्झायसुमुणियपहाणे । अणुओगिययरवसमे नाइलकुलवंसनदियरे ॥ १६ ॥

जगभूअहिअपगरमे यदेऽह भूइदिस्नमायरिए । सवसयवच्छेयकरे सीसे नागञ्जूषारसीणं । १७ ।।

सुनुणियनिष्वानिष्ये सुन्। व्यसुत्तस्थ्यारय यंदे । संक्षायुक्तायणया तस्य लोहिष्यणामार्था । १८ ॥

अस्यमहत्थवकाणि सुसमणयवस्थाण-कहणनिध्याणि । पग्रद्देव सहरवाणि वयओ वणमानि द्रसगणि ॥ १६ ॥

गुजुमालकोमरुतले तेसि वश्वमामि सवस्रवयसस्य । वाए पाववणीर्थ विडच्ह्यसर्गह् परिवद्दष् ॥ २० ॥

जे असे चगवंते कालियमुत्र-अणुओगिए धीरे | ते पर्णामऊण सिरसा नामस्त परवर्ण बोस्टी 100 म सरूज अर्थ भरत में युवप्रधान, बहुचिव स्वाध्याय के बेलाओं में प्रधान, अनेक धेरङ साधुओं को बयोचित स्वाध्याय-वैद्यावृत्य आदि में क्याने बाले, नायंन्द्रकुल बच्च को आनिस्त करमें बाले, प्राची मात्र का हिंद करने से प्रवस्त वर्षोंह निक्षिता-पूर्वक प्राणिहित करने का चवरेड करने बाले, मंसार-मद का विकोद करने बाले, नायानुंग कृषि के शिष्य श्री धूर्वदिष्ठ आवार्य को में मुबदकार करना हुँ।

िम्द्रामिश्य क्यं के बस्तु को कसी प्रकार जानने बासे, मुनाम को सम्प्रकृतकार से जान कर धारण करने वाले, और -बस्तु तरब का साथ प्रतिवादन करने वाले, कौहिस्य नामक मोजाय की ममस्कार करता है।

मर्थ और महार्य के लान स्वब्द, धुनायुओं को आस्त्रार्थ का व्यावयान और पूछे हुए शक्तो का उत्तर देने में समाधि अनस्य करने वाले, शकृति से मधुष्मायों को हुप्य वर्णि को सम्मानपूर्वक नम्हकार करता है।

प्रधान प्रयक्षक करने वाले उन दुध्य गणि के जुल लक्षण सम्प्रभ, मुन्दर-मुक्तु भर तल बाले तवा संकडों शिष्यों के द्वारा मनस्तुन चरणी की प्रवास करता हैं।

अन्य को भी कातिक खुत बनुषोग बाले, घीर, विशेष-यूतवारों आसार्थ सबबान् हें उन्हें मस्तक से प्रणाब करके ज्ञान को प्ररुपण कर्षमा !

वरुण णागणतुण्

तेणं कालेण तेणं गम्यूण वेमाली नामं नवरी होतं। सरव वरणे माम नामन्तृत वरिवतह, अब्दे जाब प्रदर्शि भूय, प्रमणीयासए, अचिमय-बीयाजीवे जाव वहितारें भूग, प्रमणीयासए, अणिविक्ततेणं तथोकस्मेणं प्रतारं भाषे छट्टें छट्टेण अणिविक्ततेणं तथोकस्मेणं प्रतारं भाषेमाणे विहरह ।

तत् णं से बदणे नागनत्त् अन्नया कवाई रावारि ओगेर्ग गणामिओगेर्ण बलाजिओगेर्ण रहमुसले संगर्वे आगले समाणे छट्टमतिष् अट्टमासं अणबट्टीत अर्पः बट्टिता कोईबियपुरिसे सदाबेद, सहाबिला एवं बनासी।

' खिप्पामेव मो वेवाणृष्यिया ! चाउनग्रंट आसर्गः जुनामेव उवद्वायेह, हय-गय-रह० जाव सन्नाहेला ^{हर्ग} एयं आणत्तियं पच्चप्यिकह**े**।

सए वं ते को हैं विय पुरिसा जाय पडिसुचेता जिली मेव सेन्द्रस्तं सरसये जाय उदहायेति, ह्य गय-रह० जार्य संद्राहिति सद्राहिसा जेणेय बढचे सासमक्षुए जाब परंबें विचर्णति ।

वरूण नाग नटुआ

उस काल, उस समय में बेशाली नास की नगरी थी। इस नगरों में परण नाम का एक नाम नदुधा रहता था। वह बहुत क्षोमन्त था और अनेक पुरुषों से में बक्दांग्रेज था। वह भाकक या। उसने कोज, अजीव आदि नवतत्वों की जाने थे। और यावत् तदा सामु जनों को देने योग्य निर्वाण बहुओं को, वेने की माजनासहित निरन्तर बेले २ का तय करते अपना आस्म जिम्हना सुका जीवन यायन करता था।

त्तव यह बहण जाग नदुश एकदा राजा की आता से, ण की आता से, बल (सेनायित) की जाता से, रवसुसल ।पान में युद्ध करने को आता होने से, बेले के स्थान पर सेला रुसा हैं। सेला (अट्टब उपवास) करके अपने कोटुनियक पुत्रवो से बुलाता हैं। बुलाहर इसप्रकार कहता हैं.—

"हेदेनानुप्रय! तीझ चार घटेवाले अश्वरम्बको जोवकर हाजिरकरो । घोडे, हामी, रघ, आदि तैयार करके यह नेरी शातामृतेपीछीदी (यह सव तैयार करके भूमे ज्ञात करो । ")

संस्वद्रवात् वे कोट्टान्विक पुरुष उस आसाको सुनकर सीध्र ही छत्र वाला, प्यता जाला यावत् आज्ञानुसार अदय स्य को सेयार करके हाजिर करते हैं। घोडे, हायी त्य को श्रृद्वार कर के सेयार करते हैं। सेयार करके जहाँ वरूण नाग नदुआ है यावत् (पर्हों सेप्ट्रांक करने की स्वय देते हैं)। गण्य मे वनने मान-नाल् भनेत मननामि हैते जवानकारि जरा कोणाम मान पाणीकाली मानाविद्याले प्रभावित् मानाविद्याल अस्ति हुव-संग्रिकाल सर्व भागेण भागेग गणनायतः आत्र दूव-संग्रिकाल सर्व स्परिकृषे माननाम्बाध्या योग्येश्वरत्यान, गोणीनक्ष्यिमा भागेण सहारिया जवहानामाला नाण्य चालावे आन्ध्रा सेवीय जवागकाह जवागिकामा बालावाह आत्रह हुव्हित्य हुबहिता ह्य-गय-रहत माना स्वार्थिक जनाव सेवीय जवागिक जवा परिकृत्य स्वत्य सहस्वाल स्वार्थ सेवीय जवागिक जवागिकामा रहेम्पल स्वार्थ संवार्थ सेवीय जवागिक

स्त वा से बरने नागनमूत् वृह्ममूल नगाप औद्यार् समाज अवमेवाहय अधिमाई अधिमण्डड:~

"क्रप्यड में रहमुमल मनाम संनामेघाणस्स ने पृ^{र्टि} गुप्रणड से यहिहणितए अवसेसे न क्रप्यर्ड सि"।

अग्रमेयारूवं अभिकाहं अभिवेष्हइ अभिविष्हर

तर बहु बदब बात नट्या बहाँ स्नानन्तृह यहाँ आता है सीर पाता कोलिक को तरह नाम करन, अपने बरन परिधाय मर्पता है, पर आप्तानों ने सारेर को बिम्मित करता हो। सरावादि के मुगंगितत बन कर, करन में फुलमाला सारण करके अनेक मेनापित सावर दूर, पंतियाल आदि से परिवृत्त होनर निकलता है। निकल कर जहां आय्यसाल है, जहाँ बार सब्दे बाला अस्वरम नेधार है, यहाँ आगाई। आबार के बार धार्ट बाले अस्वरम नेधार है, यहाँ आगाई। आबार के बार धार्ट बाले सरवरम नेधार है, यहाँ अपनाई। आबार के बार धार्ट बाले महा योदाओं से स्थान कहां पर एम मुनक संवास हो रहा है महा योदाओं से स्थान कहां पर एम मुनक संवास हो रहा है

यक्ण नाग मदुका रथ-मृतल युद्ध में लगने से पहिले इस प्रकार अभिग्रह करता है:-

"रच-मुतल लंग्राम में युद्ध करते हुए मुझे जो प्रयम प्रहार करेता दशी की प्रहार करना मुझ चन्यता है। बूसरो को घारना मुझे कल्पता नहीं हैं।

ऐसा अभिग्रह करके रय-मृतल सग्राम में युद्ध करता है।

रथ-मुसल संग्राम में मूद्ध करते २ उस बक्य आय शहुआ के रथ के सामने एक पुढ्य समान प्रक्ति वाला, समान रूपवालर समान शहबाला हरान रहत्वाला रथ हेकर १० ४००० नए णं से तस्स बक्यस्य नावबन्नवस्य रह्^{वृत्} सगामं सगामेमाणस्य एये पुरिसे सरिसए सरिमतए हाँ सन्तए सरिसस्वए सरिसमडमतोवमरणे वहेणं पश्चित् आगए ।

तर ण मे पुरिसे वरणं नाजनतुर एव वयासी:-

पर्ण भा वर्गा : नागवत्तुमा ! तर्ण में सदको नागनतृष् सं पुरिसं एवं वयानीः नो सङ्घे के कत्यह देवाणृष्यमा ! पुष्टि अह्यारी

पहिलिसप, तुमं चेव च पुग्निय पहणाहि । तए च से पुरिसे यदचे नागनत्त्व एवं वृषे समाचे अञ्चरते जाव निमिन्निसमाचे धर्चु परामुर्ताः धर्मु परामुक्तिसा ठाण ठाति, ठाणं ठिच्चा, आयमक्त्राः सम उन्ने करेड, आययकत्रायमं उस्ने करेसा यदणं नाग

ममुझं प्राहित्वं कहाहृत्व जीवियाओ ववरोवेह । सर् शंसे वहमं नागनसूर तेथं पुरितेश गाइप्पहारी कर्ग समाणे अत्यामें अवले अवोरिष् अपुरितगरारवर वहमं, अपार्शवन्त्रतीति कहु तुरुष निमिष्हह, तुरुए तिर्मि

िहरा रह परायतेद, रहं परावित्ताता रहमुसलाओ सेगाः साओ प्रश्निवत्तमित, पश्चिववस्त्रीयता एगतमंतं अव-बहमद अवक्रिका मुर्व निर्माष्ट्रद्व, निर्माण्ह्रता रहं ठवर, ठवरा रहाओ पच्चोवहृद्द । ---

٠.

सि पुरुष में बदण माम अटुझा को ऐसा कहा-हे बदण नाम मटुझा प्रहार करो ।

तस वरण भाग जदुआ ने उस पुरुव को ऐसा कहा- है रेबान्प्रिय ! युक्ते पहिले नहीं सारे उसको भारता मुझे करपता नहीं है। सत. सार ही प्रथम प्रहार करें।

तब उस पुरुष में बक्त मार्ग महमा के ऐसे बोलमें से भौतित हीकर और रक्त मेत्र करके. हांत पीस कर धनुष हाथ में किया। प्रमुख उठा कर प्रत्यंका आदि ठीक करके योग क्यान पर रक्का। बाण बहुत कर कान तक बाज की सींचा। का तक की ब कर परुष मार्ग महमा से एकदम थाय सारता है।

तरनिषद वहण नांग नहुका, वस पुरत के द्वार यह महार करने पर पत्तिहांन, निवंत, निवांस तथा दुववणर-वरा कम से हीत हो नया। अब जोवल नहीं वह सहता, ऐसा सोध कर वह घोडों शो रोषता है, योदों सी रोक कर रच कीटाता है। एक को सीटा कर एक-मुनल नवाम से बाएर निकल्त तता है। विकल्प कर एकान्स से वासा है। एकान्त में नाकर सोवों को रोकता है। योद कर एक को सहा करता है। एस को खड़ा इसके एक से भीचे उतासाहै।

विजये चेरि

त्तर् यं सा सहा सत्यवाही अन्नया क्यार्ध देविर दारयं ष्ट्रायं क्ययंक्तिकस्यं कयकोउयमालपाविरा सध्यापंकारण्यियं करेति पंचयस्य शामचेडयस्य हर् यात् रक्तयति ।

तए वं से पंयर बासवेडए महाए सरवर्षा हरवाओ वेवदिलं बारगं कविए गिरहति, गिरि सवातो गिहातो पश्चित्रक्यमित, पश्चित्रक्यमिता वर्रे हिमएहिं म श्चित्रमाहि य कुपारपाहि म सर्थि सेवी अनेव राममागे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिए। वेव सारगं एगते ठावेति, ठाविसा यहहि श्चिएहिं म कुर्

याहि य सदि संपरियुद्धे पमले ग्राबि होत्या विहरति

द्वर्थं च वं विज्ञष् तक्करे रावितहहत नगरहत बाराणि य अववाराणि ॥ सहेव आगीएमाणे मा गवेतेमाणे जेणेव वैवविद्ये बारए तेणेश्र उद्यागस्त्रह, मन्द्रिता वैवविद्ये बार्ग्य सम्पालकारिकामी

विजय चोर

किसी समय पड़ा नामक सार्थवाह-पत्नी ने अपने 'हैंब-वस' हुमार (पुत्र) को स्तान करा कर, बलिक वें (देव पुत्रम) करा कर, प्रसिद्ध निवारण के लिए तिलक आदि शवा कर और स्वाम अर्थवारों ने विवृधित कर पयक गामक नीडर के हाच में विद्या।

उस पक्क नागक जीकर ने भड़ा सार्थवाही के हाथ से बत वेयरसङ्गार को गोद में किया और अपने घर से निकल कर अनेक सासक-वालिया और कुमारों को साथ लेकर उनते पिरा हुआ राजमार्ग वर आवा और उस देवदस बालक को एक भीर पेड़ा कर बहुत से बालक और बालिकाओं के साथ सेल कर में गांदिल हो गया।

इपर विजय नामक चौर राजगृह नगर के बहुत से द्वार, कर दिया (निहास्त्र या मुदाद्वार) को नेशता हुआ, लोजता हुआ, लोजता हुआ, लोहे वेदरत कुगार येंदा चा, हुआ, लोहे वेदरत कुगार येंदा चा, चहाँ आया। वक्षने देवरत कुगार की तर अलंकारों से विस्कृति देवरा कुगार की तर अलंकारों से विस्कृति देवरा कुगार को तर अलंकारों से विस्कृति देवरा को पा को प्रकृत के स्वाचन के साम को स्वच्छा को साम साम के साम को साम साम के साम को साम की साम को साम को साम को साम की साम को साम की साम को साम का साम का का

ण्हाम " जाय मम हत्यति दलयति । तए वं श्रे वेयदित्र वारप पडो रृ पिश्हानि निष्हितः" सामनायेनमां करीम, त न जनति णं सामी देर्गते

वारए कंणइ हते या अवहिए वा अविक्रते या !"
तए ण से धक्णे मत्यवाहे वंचवदासचेडवास एवा
सोचवा जिसन्न सेण य महवा पुतासीएणानिमूने

वरसुणियत्ते चवगवायये शसित घरणीयत्ति सार्वार्थं सित्रवर्षः ।

तए ण से छन्ने सत्ववाहे तत्तो मृहुत्तंतरस्स आर्थः ।

पराज्ञागमाणा देवविद्रास्म वारगस्म तत्वतो समेता माणः ।

पराज्ञागमाणा देवविद्रास्म वारगस्म तत्वत । समेता माणः ।

पराज्ञागमाणा देवविद्रास्म वारगस्म कत्वद सुद वा प्राप्तः ।

पराज्ञात वा अलममाणे जेलेय सप् । गहि तेवेब वर्षाः

बष्टह, उबागब्द्रहसा महत्य पाहु गे०हित, गीर्द्र जंगंब नगरगुत्तिया नेणेव उबागब्द्यति, उबागब्द्यता महत्यं बाहुई उबचचति, उबागतिता एवं यवासीः "एवं बाहुई देवाणुरिया। यस पुने महार मारिय

असए देवदिछे नाम दारए इहे जंबरपुष्कं विव र्री सरणवार किमंग पुण पासणवार । तर णं सा । दर्छ काय सन्वालंकारविभूसियं वंबगस्स हत्ये वस मार्ग पर ले यया इत्यादि यावत् मेने सूचतलादा की लेकिन वहूँ: देवदत्त कुमार का पता नहीं चला । न जाने कितने देवदत्त कुमार का अपहरण किया ? क्षीन उसे उठा लेगवा ?

मीकर पन्यक के ऐसे झाउँ। को सुनकर-समझ कर धन्ना गर्पवाह पुत्र के प्रोक से अत्यान भ्याकुर होकर कुस्हाई से आहे हुए अन्यक बुक्त की तरह धन से सर्वोज्ञ से पृथ्वी वर गिरपड

भोडे समय के बत्थात एका जार्थवाह कुण स्वस्य हुए और रण्डाताय करते हुए देवदल कुमार को सब तरफ तकाक करते हैं। परातु कहीं से भी उस बालक के कुए समाबार, विशास और बार ने पितने से अपने घर आये और बहुवृक्ष बंट लेकर गाररण कों (कोसबाल आदि) के बास गये और मेट सामने सकर इस सकार को लेल

"है देवानुप्रिय! मेरा पुत्र, मदा मार्या का आत्मन देवदल गामक कुमार जो हमें आति हम्ट है और उद्रावद पुर्य के समार पुत्रने में भी दुर्जय तो देखने को तो बात हो क्या? वेल महा मर्मा ने नान करा करा और तम आन्यूमारी ते विस्थित कर पक्र के हाय में विद्या था यावत उसे कोई उठा के यथा हूं हथ- देवदिग्नदारगरस मध्यओ समता अन्तवमवेशन करेड् सए ज से नगरगोत्तिया झज्जेण सध्यवाहेणं हैं बुत्ता समाणा सम्मद्भवद्वविम्यवन्वया गृहिया हिवा

धक्योणं सत्यवाहेण गाँद रामगिहस्स सगरस्स शृह

स्रतिनमणाणि यः जाव प्रवासु स मागणावित्र करेमाणा रायगिहाओ नगराओ वडिनिवसमिति, विर्ति क्लामिता जेणेव त्रिणुउजाणे जेणेय भागक्वए ते

खनागच्छति, उवार्गाच्छता देवदिग्रस्य वारगस्त सरीर्ष निष्पाणं निच्चेट्ट जीवविष्यज्ञदं वासंति, वासिता हा सहो अकज्जमिति कट्ट देवविसं दारग भरगक्षाओ उत्ती रैति, उत्तारिता धण्णस्स सत्यवाहस्य हत्थेणं दल्यति तए णंते नगरगृतिया विजयस्य तवकास्त व

मागमगुगच्छमाणा अवेव माल्याकच्छपं तेणेव उवा ब्छंति, उयागन्छिता मालुयाकन्छ्यं अणपविसति, अ पिविमित्ता विजयतनकर ससदक्ष सहोड मगेवेडम, जी माह गिण्हंति गिण्हिता अद्विमुद्विजाणुकोप्परपहार गमहिष्मत करेंति, करिता अववडायंग्रणं करेंति, करि

वैवदिग्रमस्म दारमस्म आधरण गेण्हिल, गेण्हिला वि स्य सक्करस्य गीवाए बधति, बधित्ता मालुया^{का} गाओ पडिनिक्समति, पडिनिक्सिन्ता जेणेव राम : द्वा भाग ६३

निए में बाहना हूं वि हे देवानूजिय ! देवदल कुमार का सक तरक गोध मोर तनाम हो ।

र याप्ताः सार्यवाह के द्वारा ग्रीता वह जानं यर वे सम्परशास विवय सारि वांत कर, द्वारा-अस्त्र रेकर समा सार्यवाह के साव

, ^{इस्}च लारि बांत्र कर, शाज-अन्त्र नेकर यन्ना कार्यवाह के साव , प्रमाह नगर के बहुत में यावन् पानी के स्थानों में तलाश करते , वर प्रमाह नगर से बाहर निकनने में मीर जहीं शोर्य उद्याव और वह मान कृत्र था, अबद जाने हैं और देवदत चुमार के निरुग्नक

वह पान कृत था, जाय जाने हैं मोर देवतत चुनार के निरासन, तिसोच्य भीर तीव निर्मात रारोर की वेगते हैं। 'रूर ! त्या खाब हो गया ऐसा कृत कर देवतत चुनार की व्यानकृत है बाहुर निष्यपने हैं और प्राप्त नार्यशह के हाथ में देते हैं।

ताब वे नगररहाक विश्व सम्बर के पर-विन्हों का अन्-नरण करते हुए जियर पायुक्तकष्ठ मा उबर जाते हैं और भागुकादकुष में प्रदेश करके विजय चोर को पकन्ते हैं और वर्षों, पृष्टियों, गुटनों, और कोश्चिर्ण में प्रहार पत्तर शारीर की रही को मूर-पूर कर बैंते हैं। ब्राजन से बांबते हैं और बेबदल

क्सार के सब सामग्रम के केले हैं। तत्वाचात विकास चीर की

निवाएमाणा निवाएमाणा विहरति ।

कालु देवाणुष्पिया ! एयरश केति शया व! रार्

"एम च देवाणुष्यिया । विजयुनामं तरहरे प्रा गिर्दे विष मामिसभनती बालवायत् बालमार्त्, ते

मेय उवागरछति उवागरिकता हाडिबधणं करेंति, होर्र मसयाणनिरोह करेंति, सरिसा तिसंश कसप्पहारे व व

तए णं से धण्णे सत्यवाहे मिलनातिनियगहर संबंधिपरियमेणं सद्धि रोयमाणे विलयमाणे देविस बारगस्त सरीरस्त महमा इस्डीसक्कारममुदएणं निर् करेति, करित्ता यहूई लोलियाति मयगांकच्चाई करे करिता केणइ कालंबरेणं अवगयसोए जाए यायि होर्य तए ण से विक्रए तक्करे चारगसालाए तेहि में वर्षेहि कमध्यहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परवमवम कालमासे कालं किच्चा नरएस नेश्ह्यसाए उदवसे ।

का रायमध्ये वा अवरजाति, तृत्वहु अत्वनी स्वा कम्माइ अवरञ्जाति" लि कट्ट जेगांगव चारमसाला तेडी

उप्यामेगाचा तव वर्षाः-

य क्यापरं च उवनि पांचकरमाणाः महाया महाया हाई

वियानहारे य नियानगामा नियानगामा छारे मध्य

मगरे सेनेच जवायक्यति, जवायव्यित्रा गार्गात्र सरी अगुनविवर्गन रायात्र सगरे कवरतमारे म लगपाति

ोघा से बंधते है और मालुकाश्चक ने निकल कर राजगृह ।पर में प्रवेश करते हे और चालुक के पहार से लगा के प्रहार वे मारते हुए पूला काटकऔर कचरा ऊपर डालसे हुए जोर-जोर में बढ़बोपना करने हुए बोलने हैं कि-

"है देवान्त्रिय! यह विजय नामक चोर वावत् पिद्ध की गाह नोसकक्षी यानक की हथा। करने नाता है, वातक का धात-करने पाता है इस्तित्त है वेवान्त्रीय। इसे कोई रावन, राजपुन या राज्य प्रत्यो विच्छत नहीं करते हैं किन्तु इसके अपने कर्षे हैं इसे बच्च के रहे हैं ऐसा कह कर जिस बोर जेल जाता था, उपर के जाते हैं और बेंड्यों से जरूबते है तथा बाहुक के प्रहार करते हैं।

चयर प्रभा कार्यवाह विश्व-जाति श्वजन-कार्याग्यायो छोर परिजनों के साथ रोते हुए दिलाय करते हुए देवदल कुमार के सारीर का बड़ी ऋदि सरकार-अश्वयत विम्यित के साथ अस्तिम मंदकार करते हैं और बहुत-कोक्ति मृत्य-कार्य करते हैं और कालायार में बोक रहित ही बाते हैं। m देहद निवापुत्त, विद्वीए अणिनिसाए उ ।

कहिमद्रीरस रूब, विद्वयुख्यं मए पुरा ॥६॥ सातुस्स दरिसणे सस्स,अज्ञायमाणीम सीहणे।

मोह गयस्स सतस्स, जाइसरण समुत्यम् ।।।।। जाइसरणं समृत्यम्, मियापुतं महिश्विष् । सप्दे पोराणिय जार्षः, सामदण च प्रशस्त्यं ॥८॥

विसएहि अरज्यंतो, रज्यतो राजमंति य । अस्मावियरमुवायस्य, इम ययणसःवयो ॥९॥

सुवाणि मे पच महत्ववाणि. मरपमु दुवसं च तिरिवसकोणिसु १ निध्यवणकामो नि महण्यवाओ, अणुभागह प्रवदहस्सानि सम्मो ॥१०॥

अम्म साय ! मर घोगा, भुता विभक्तशेवमा । पच्छा मञ्च्यविवामा, अणुबधदुस्थहा ।।११॥

इमें सरीरे अणिक्यं, अमुद्दे अमुद्देसेमवे | अनासवावानित्वणं, दुव्हं केसाणभावणं । ११२। पृगापुत मांस की पलक गिराधे जिला एक हरिट से जन योगोरवर को देगता या और जिल्लार करता है कि ऐसा रूप (वेस) पहले भेने सबदय कहीं देखा है।

उन सामुनो के दर्शन होने के बाद इसप्रकार विकार करने इर मु अल्यत्यकाम जानत हुए और बोहनीय कर्य के उपसान होन से उसे बही आति-समक बान उत्पत्त हो गया।

जातिस्मरण जाज उपचम होने वर सहान् व्हादियान बुगा-पुत्र अपने यूवे जाम का स्मरण करता है। यूवं जास स्माण करते हुए दसे पूर्वपत्र में स्वीकार किया हुआ साध्यम को याव आया। (इससे) विवयों से विश्वित खोर सम्बन्ध के प्रति प्रीति उपप्र

हैं जोर वह माता-पिता के नाभीय आकर इस प्रकार बोमने समा-है ! माता-पिता ! मेने पूर्वकाल संबाद सहायत स्व पर्म मुना है (पातन किया है), नहक और निर्मेख योगि के दु ली को भी मेने जाना है इवीसए ससारक्षण समृद्ध से से निष्क्र होना बारता है मत: साथ मुझे आहा यीजिए। से प्रकार संवी-कार करेंगा।

कार करेंगा। है माता विता! कियाक फुल के समान प्रारंश में अपधे रुपने कोले परन्तु परिकास में अति कट्टक और एकानत दुल की परम्पा बदने बाटे मोगों को अने (यहले और अमी) मोग निए हैं।

मह रारीर लश्चि (शुकरका) से जन्म हुआ होने में लपवित्र और अनिया है। यह दुका और बलेश का बालन है और जशादकर देवा बाला है। मसामए मरीरस्मि, रई नीवलभागर् । पच्छा पुरा व सद्दयन्त्रे, केणब्धव्यमनि । । १३॥

माणुनले अमार्गम बाहीरोगाण आलए। जरामरणघरवनि राज वि न रमामह ॥१४॥

जम्मं दुक्त जरा द्वाय रोगाणि मरणाणि यः अही बुक्तो ह संगारी जत्य कीमंति जतवी ॥१५॥ षेतं बत्य हिरण्यं च पृतदार च बंधवा। घइलाणं इम देह गतव्यमयमस्म मे ॥१६॥ जहा किवागकनाम परिचामी न सुंदरी। एव मुत्ताण मोगाणं परिणामो न मुंदरी ॥१७॥

अद्वाणं जो महंतं तु अप्पाहेओ परवज्जद । गच्छतो सो दुही होइ छुहा-तण्हाए पीडिओ।।१८॥ एय धम्म अकाळण जो गच्छद्द पर भवं। गच्छंतो सो बुहो होइ बाहोरोगेहि पीडिओ ॥१९॥

शद्धाणं जो महतं तु सपाहेओ पवज्ज**इ** | गच्छतो सो सुहो होइ छुहा-तण्हाविवज्जिओ ॥२०॥

एवं धम्मं पिकाऊ ण जो गच्छइ परंभव । गण्छंतो सो मुही होइ अप्पक्तम्म अवेषणे ॥२१॥

पानी है झान और बुद्बुद् के समान श्रामिक द्वारीन से ध मानम्ब नहीं पाता है। यह शारीर क्षो पहले या बाद में आगे पीछ प्रदाप ही छोड़ना है । (तो दुश्वें बचा आगविन रगनी शाहिए?)

व्याधि और रोग के घर सथा जरा एवं भरन से प्रतित इत प्रसार मन्द्रम बेह में (अब) में शब भरडे लिए भी मानन्द

नही पासकता है।

मही। यह सारा तवार सचयुच इ.त्यमय है। इसमें रहे ए प्राणी जन्म, जरा, रोग और नरण के दृःष से पीडित हो

रहें हैं। क्षेत्र, बस्तु (धर) सोमा, पुत्र, स्त्री और बम्धुओं की तथा ा दारीर की छोड़कर भी पराशीन रूप में मही सदश्य जाना ही है (अर्थान् आये पीछे मरण तो होने बाला ही है ।)

जिस प्रकार कियाक कछ का परिवास अवछ। नहीं हीता देशी तरह भीते हुए भोगों का परिवास भी अच्छा नही होता है ।

तो स्पष्टित पाधेय (मार्ग के लिए बीजन) लिए बिला ही तम्बे मार्ग में प्रयाण करता दे वह शुधा-त्या में वीदित होकर रागं में बाता हुआ दुखी होता है।

इसी प्रकार को व्यक्ति धर्म का आचरण किये दिना ही रमय में जाता है यह व्याधि और रोग ने पीडित होता हुआ (की हीता है।

जी व्यक्ति दीर्घ मार्न पर प्रवाण करते हुए साथ में पायेय रे जाता है वह श्वान्त्या ने पीडित नहीं होता और मार्ग में गाता हुआ सुकी हाता है।

इसी प्रकार जो जीक तर्व का आधरण कर परलोक सं शाना है यह अस्य वार्ध बाला और वेदना-रहित होता। अधि होता है।

मनः एते परिलंदित सन्त गण्या जी पहुँ ग्राप्तवशाम नीगेद जनार जनगणगर्गावशा एवं लोए वर्णिक्षि भराए सर्वेग यो मध्याच तारदश्याति मुख्योत् प्रणुपन्निमी । १२३॥ -उत्तराध्ययम सूत्र अध्ययम (९

शंदए परिव्यायमे

तस्य मं तायल्पीए नवरीय गहमानस्त अंतेशमी संदर् णामं कच्चायणसा बोलं वश्चितातो व्यक्ति रिज्जुपैर-अजुब्धेर-सामवेय-अहरदब्देद-द्तिहासप्तमान नियंद्छहान, अउन्ह बेयान शंगीवतान-साहरसानं, सारए, बारए, धारए, पारए, सहगयी, छडे, निहत्ते, जीह सामयणे, असेतु य बहुतु बन्महुन्धएतु परिस्वाएतु तमे स्वदिनिद्विष्ट् या वि होस्या ।

सरच णं सावरयीए नमरीए वियतए गामं नियं^{हे} वेसालियसावष् परिवसइ | तए च से पिगलए नाम निर्दे येशालियसावए अन्नया कयाइ जेगेय शंवए कच्चायण-गोले तेणेव उवागच्छद, उवागच्छिता संदगं कच्चायण" इणमक्सेब पुच्छेद-मागहा ! कि संअंते कीए अणते

जैसे घर में आग समने पर उन घर का स्वाभी मारणूस भीजों को वाहर निकालता है और निस्सार चीजों को छोड़ देता है]

देता है। इसी तरद्र यह लोका संसार) जराजोर सश्य में जल रका है इसलिए से आपको आप्त कर (असार मोगों को शिक्तर) इस संसार में अपने आपको सार्लगा।

--जलशाच्ययमसूत्र अ. १६

स्कन्दक पारेबाजक

सायस्तो नगरी में गईनाल जानक विश्वासक का शिव्य, कायास्त्री में पहुंचन का मान का परिवासक सहसा था। वह स्वृत्येद, प्रमुर्वेद, प्रमुर्वेद, प्रमुर्वेद, प्रमुर्वेद, समुर्वेद, समुर्वे

बर्मन साँहनों में भी बहुत कुतान था । इसी भावस्ती नगरी से बेशानिक (थो महासीर) का "आब्द विभावक निर्मण सुरुष्टा था। बहु बेशानिक-पावक निर्मण सक नामक निर्मण, किसी शंत्रप बहुँ काल्यापन गोदी कराटक से सामक निर्मण, किसी शंत्रप बहुँ काल्यापन गोदी कराटक से सामक रहता था उस और गया और वसे आलेप पूर्वक इस मनार पुछा कि-"है बागाय (समझ देस में बनवा) ! सीक शांत

^{*} महावीर स्वामी के बक्तीं को मुनने बाहा अतः आवश्र

(50

स्रोए ? स-अने जीवे अणते जीवे ? समन्ता मिट्ठी ^{पूर्णत}

सिद्धी ? सअन्ते सिद्धे अणते मिद्धे ? केण वा पर्हर्य

मरमाणे जीवे यड्दति वा हायति वा ? इतार्व ^{ताव प्रीप}

वलाहि। युच्चमाणे एवं तए णंमे खंदए कच्चायणाति

पिगलएणं नियंठेणं वैसालियसायएणं इणमवलेयं पु^{हिछा}

समाणे संकिए, कंक्षिए, वितिशिच्छिए भेदं मनावसे ^{कर्नुह} ममायग्ने को कं चाएइ विगलयस्त नियंत्रस्त वेसानिय सायपस्त किंचि वि पमोक्यमक्लाइउ, तुसिणीए संवि हुइ, तए ण से पिगलए नियठे वेसालियसावए संस् करनावणमोत्तं दोश्सं वि तस्त्रं पि इवासयलेवं पुर्छी मागहा ! कि मअन्ते लोए- जाव-केण वा मरणेणं पर-माणे जीवे बह्दति वा हापति बा ? एतायता व और क्लाहि । बुटचमाणे एवं, तए वां से संदर कच्चाया सगोसे विगलएणं नियंठेण वेमालियसावएणं दोस्बं सच्च वि इणमकलेयं पुच्छिए समाचे संवित्, कंलि वितिनिच्छिए, भेदममायञ्जे कलुससमायञ्जे की संबार विगलस्म नियंटम्म नेमालिय-मान्यस्म कि चि वि वमीर ं सहिन्दीय स्थाप स्थाप सं स्थापनीय मध्

1 50

. • हिंहा भाग) ।

है मा अनम्त है? जीव सान्त है या अनन्त है? सिद्धि सान्त मेर है या अनम्त है? सिद्ध सान्त है या अनम्त है? किस सरण से सा परने पर औष बद्धता है या घटता है — अव्यत् किस तरह परने से जीव मा मंसार बढ़ता थे। घटता है दिश प्रत्मों का सो

से जांव का मंतार करता था घटता है दिन प्रत्मों का तो पंतर दो। (ऐसा विश्वलक साधुन स्काटक ताथस को पूछा) व्याप वेदालिक-धावक निर्धन्य विश्वलक ने कारवायन-हों जिसे स्वादक को आक्षेपपूर्वक इस प्रकार पूछा तो वह स्काटक

ता 'नियोध सक्तरक को आशंधपूर्वक इस सकार पूछा तो बहु स्कारक तीपत "इन प्रस्तों का यह उत्तर होगा या दूसरा "इस प्रकार व्य ना उत्तर सुने देते आहे ? ऐसे कांका खग्ना हुआ, के उत्तर हो राँ पूँग, उत्तर प्रदानकार्ग को प्रतीक होगी या नहीं इस प्रकार हो पूँग, उत्तर प्रकार का उत्तरीक होगी या नहीं इस प्रकार हो पहिचातारे हुआ तथा उत्तरी खुँदि से येट हो गया। (बुँदि कुटित हो गई)। यह कल्पुता (क्षेट्रा) को प्राप्त हुआ परंतु बैटासिक

ही पार्ववासा हुआ तथा उत्तरण गुरू में पर हा गया हुआ हुए। है गई। गुरू कल्पुला हिस्ती को प्रारम्हरूआ परंतु वैशासिक पायक पिनक किसंत्र के प्रश्नी का कुछ को उत्तर न दे सका तो और पुष्पाप रह गया। तब बैशालिक भाषक पिनक निर्माण तो में में कार्याजनीती : स्वस्थक को बो-तीन बार यो पूर्व रेशिय तुं सोने पूर्वक पूछा कि है शाया ! कोक नया सारत है यावन

अभिने पूर्वक पूछा कि है भागत ! कोक बया सासत है बाहन किस प्रमार के सरण के जीव का ससार बढ़ता है या घटता है ? कि उन प्रमों का उसर वो । अब पुनरिव बंधानिक-आवक पितकक श्रिक्त के बेसीन बार कार्यायनगोत्री स्वन्दक की इस प्रकार पूछा तो भी बहु कहरक शहा बाला, कार्या यान्या और बहुत बेसी की प्रसाद हुआ, परंजु बंसालिक-आवक विकास निर्माण की हुए भी उसर न है सका और चुलवार बंठा रहा !

्रा का पुरुष ना उत्तरन द सका आरि चुप्याय वटा प्हा । प्रस समय शाक्तती नयरी के तीन कोने वाले मार्ग में पावन महा प्याम, बची चारो पोड़के क्य में सा सनुस्यों र ब्यूह के रोग्ड राज्या कर अनुवद । खोदनव समीनवराका धानावाज्यान वृत्रे भारत्या राजपतित्व मार्गानीत प्राप्ति धश्य वस्तान विभागतह । विभागितमा अल्ब इस्त मपरा, संभेव सामानाशांग गेर्न अगव सतम् अत्राहती भीरे तेणच ग्राम्च ग्रमणाम (गायमा) अतिकार भगव महाथीर भगव गायल त्य वयामी --व्यप्ति काहे वा कह था क्षेत्रका चा ? तथ सन् गायमी तैय हार्नेण तेय समाच सावत्यां साम नगरी है ना बण्मधो । तथ्य वा साबस्थीण नवरोव गरमाण्यम प्रे

गोधमे सम्ब भनवं महायोद बददः समगदः, वांदत्ताः म

तिला एवं वयासी: यह वा सने ! शदए कच्चायम गान वैवाण्टियाण अंतिए मुंहे परिसाण आगार अणगारिक वश्वद्वसए ? हता, यम् । जाव च ण स मार्थ महावीरे भाषको गाममस्य एयमह परिकहें। य च ण से श्राहण् कावचायणसर्गाने त देस हरव माग

सायमा ग्रामित्र । संभ म भग । सहस्र मान । बानी लंडल नाम कवनायकान गोले परिस्थापए वीर बत्द । त चेत्र, नाथ-अंगेन सम अतित तेलेन पहारि गमकाए, से अबूरागते, बहुवपते, अञ्चानविवनमें अर गते बहुद्द, अप्रमय व दश्वांत ग्रीयमा । मते। ति, मा

, ^{हा} डहामात) (८३

तर धीर पूर्व प्रारण कर, गोंक-वत बाझ पष्टन कर बहु न्वावर तायस स्यायानी नगरी के सध्य थे होध्यर निकल्ता है तया जिल और इंटनज्ञता नगरी, छन्यकाशक चेंद्रस्य और जहीं थ ल कगवान प्रहाबीर निराजधान से बही जाने का संबद्ध्य करता है।

सगवान महाबीर को बारता-नसस्वार करके गुळा कि-हे सथ-कर् । पया काराधायन गोधीय स्कादक आर देवानुधिय के पसा प्राप्तत होकर, आगार (धर) को छोष कर अनतार कमने में समर्थ है । भगवान् बोले-हाँ, समर्थ है। उस बस्य समर्थान् महाबीर, गोतम को यह बात वह नहें से कि हतने में काराधन गोतीय स्कादक वहाँ सोझ का गये।

है भगवन ! ' ऐसा कह कर भगवान गौनम ने थमण

यंदामी नमनामी जाव पण्युवासामी । अहामुहं देशाणु-प्यिया ! मा पडिवर्ध करेह । तए चं से मगर्व गोप्रमे लंडए कष्णायणस्य गोलेंग गाँद जेजेव समणे भगव महात्रीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेणं कालेणं तेणं समप्र तमणे मगवं महावीरे विषट्टमोई या वि होत्या । तर् समणस्त भगवओ महावोरस्त वियट्टमें इस्त हरीर भीरालं सिगारं करलाणं सियं धर्म मंगरलं अगलं^{दित} विम्सियं लक्षण वंजण-गुणोववेशं सिरीए शईव अर् बबसोमेमाणं चिट्टइ । तए णं से खंदए करवायणा गोत्तं समगरस भगवओ महावीरस्स विष्ठुमोइस्स हर रयं औरालं जाव-अईव अईव उबसोर्भमाणं वात पासिसा हडनुद्व-चित्तमाणंदिए, णंदिए, पोइम्बे, पर सीमणीमण् हरिसवस्थितस्यमाणहित्यः जेणेव सः भगवं महाबीरे तेणेव उवागच्छा इ उवागच्छिता मा भगवं महावीरं तिश्वको आयाहिणपयाहिण करेड, अ पण्जवासद् ।

अह आणानि संदया ितए णंती संदर् करवायानी गोते मनवं नोयमं एव वयाती:-नक्ट्रामी णंगीयण ि तव सम्मायरियं, सम्बोबएतयं, तमणं भगवं महावेरि

'र्खवया !' ति समणे भगवं महावोरं खदय क

उनको पर्युदासना करता है।

त्व कारमायम गोत्रीय स्कन्दक परिवाजक ने भगवान गौतम से इस प्रकार कहा-हे गीतम ! तुम्हारे धर्माचार्य, धर्मी-परेशक धमण मगवान महावीर के पास चले और उन्हें वन्दना-नमस्कार करें यादत् जनको पर्युपाधना करें। गौतम स्वामी नै महा-हे देवान्त्रिय ! जैसा सुम्हे ठोक लगे वैसा करो, विलम्ब म करो । तत्पद्रचात् अवयाम गौतम ने उस कारवायन वोश्रीय स्कादश परिवाजक के साथ जहाँ समय समयान् महाबीद विराज-मान घे वहां जाने का संकल्प किया । उस काल, उस समय भन्ण भगवान् सहावीर प्रतिदिन भोजन करने काले ये। उन प्रतिदित मोजन करने वाले बगवान महाबीर का बदार श्रुगाए किये हुए के समान, कल्यांग रूप, द्वाव रूप, धन्य, मगल रूप मसंकारों के बिना ही विम्वित, श्रम सक्षय-व्यञ्जन और गुणों से युक्त दारीर सीमा से अत्यन्त सुत्रीमित या । तब वह कारवा-यन गोत्रीय स्कन्दक प्रतिदिवस मोजी वगवान महावीर ै वदार यावत् योषा से अति सुत्रीमित शरीर देसकर हर्षित हुमा, संतुष्ट हुमा, आनिन्दत बिल वाला हुआ, आनिन्दत हुमा, प्रोसि सुक्त मन बाहा हुआ, परम सौमनस्य (विश्व की यक्तपता) को प्राप्त हुआ, तथा हुवें से प्रमुल्त हुइय बाला होकर वहाँ श्रमण मयवान् महाबीर विराजमान है उस और बाकर धमण भगवान महाबीर को तीन शर प्रवक्तिणा करता है यावत्

'हे स्कायक !' इस प्रकार सम्बोधन कर समाच ग्रायदाब् महात र में कारमायनगोत्रीय स्कारक परिवाजक को इस प्रकार ५०) (श्रैन पात्राका विषय ते सारमा ! जाव गर्जी जीवे, अमंते जीवे तत्त्व विषय अथ अर्थे न्यूष सामु जाव-कावजी मं एगे जीवे

वि यं का अयं अहु-एथं सातु जाव-वायका मान्यते, संतर्भ सन्तरे, संतर्भ के जीवे असले जग-वर्गात्रं, अतंत्रंभ-परतोगाढे, टारिय पुग से अले क्याइ माथलो च जीवे अवता चावपुरज्ञवा, अर्थता दसक्य पुग सो अले प्राथनो च जीवे अवता चावपुरज्ञवा, अर्थता दसक्य परन्ता, अर्थता वार्षास्वरुग्धा, अर्थता वार्षास्वरुग्धा, अर्थता वार्षास्वरुग्धा, अर्थता आवृत्तहुर्भुग्धा,

निरय पुत्र से अन्ते, से स बहबजी जीवे समन्ते, खेलते जीवे समन्ते, खेलते जीवे समन्ते साम्यो जीवे अपते। जी विस्तर काराजी जीवे अपते, साम्यो जीवे अपते। जी विस्तर कार्याण के विस्तर कार्याण क

सहुँ-मए चंदया ! एथं बस्तु चउव्यिहा तिडी वणाती, तैत्रहा:-चड्डओ, चेत्रओ, कालओ, मायओ । हायओ मं एगा तिडी सअन्ता खेत्रओं नं तिडी वणातीर्ते कीयणसमहत्त्रसाई तीस च जोयणसहत्त्रसाई डीरिंग व अज्ञापप्र-चोयणसए कि चि विसेताहिए परिवर्षे में, अस्य पुण से अन्ते । कालओ नं तिडी न कार्याह त आसो, मायओ ब नहा जोयस्स तहा भागियद्या । तत्व बड्यओ सिडी सअन्ता, क्षेत्रओ दिडी सअन्ता, कारमी तिडी सणेता, भावओ सिडी सज्ज्ञा, को चि बद्दा माग्) है स्कारक ! तुम्हें जो यह विवाद हुआ था कि जीव भग्त बाला है या अनन्त्र है उसका घो अर्थे यह है कि योजत् द्राम से जोव एक है और अन्त वाशा है, टोत्र से जीव अंत्राम प्रदेश बाला है और अर्थहम प्रदेश में अवगाउ है इसनिए उसका भी प्रत्य है। काल से बीव दिसी दिन संघा एसा नहीं, शवन निश्व है और उसका अन्त नहीं है। शाव है जीव मनत तान पर्योग स्व है, अनन्त दर्शन पर्याय स्व है, अनन्त अगृद-अगु पर्यात्र क्रथ हे और उसका अन्त नहीं हैं। हे रकादक है

हम प्रकार द्रश्य जीव अन्त बाला है, क्षत्र जीव सन्त हैं, बाल-कोव अनन्त है और काव-दोव भी अनन्त है। है स्मादक हिम्हें जो यह विकत्य हुआ या कि सिद्धि मन्त दालो है या अन्त रहित है इसका भी उत्तर बाहै कि – है स्कारक ! मैने चार प्रकार की मिद्धि कही है, वह इस प्रकार इथ्य से क्षेत्र से, काल से और भाव से । इत्य से निद्धि एक है,

भीर प्रान बालो है, क्षेत्र से सिद्धि की सम्बाई-चीडाई पैतालिस साम योजन की नै और उपकी परिधि एक कोच बयालीस लाल तीन हुआ", दो सो उनदान ग्रोतना से कुछ दिश्रय अधिक है तथा उनका धन्त है, कात्र में सिद्धि किसी सबस नहीं थी एका नहीं, कियो नमा नहीं है ऐसा भी नहीं, कियो समय नहीं रहेगी ऐसा भी नहीं। माव से सिद्धि भाव सीक की तरह समझ सेना चन्छि। इनमें द्रथ्य सिद्धि अन्त याली है सेत्र सिद्धि अन्त गानी है, काल से लिढ़ि अन्त रहित है और आव से किडि हे स्कादन दिस्हें जो मंदत्य हुआ या कि मिद्र अन समन्त 🗓 १

दाते हैं या अन्तरहित हैं बसका स्पाटीकरण नम प्रकार है.- रिज

रेश मिल्यानको । वे हिन ने नियनको ? प्रयम्पे कृति तक्यां, ल, जहाः नाजीकावले थ, धनत्का कार्या थ । वे हिन न वाजावान कृति एउने, त जहाः नोहाकि य धनोहाकि ये नियमा प्रवाहको है से राज्याकाले ? महा स्वाहकाले होते एउने, वाजावान कृति है से प्राप्त कार्या है से स्वाहकाले हैं महा स्वाहक से से से स्वाहक से से से सामा कार्या कार्

से सं वात्रीयसम्भा । ते कि सा भागाध्यवनार्था ? यहः पवचरतार्थे सुविहे व्यत्तते, ता जहाः बोहार्रिश प्रजी-हार्रिश मा निषमा गर्वाडकर्ग्य, ते सं अनववगवनार्थे इण्डेतेण वांत्रप्रा ! दुविहेल वंडिययस्थीय प्रत्मार्थे औं अग्लेहि नेरद्यमवश्यत्येत् अत्यार्थ विवंगीएड , बार-बोहवयह । से सं करमार्थेण हायह । से स संदित्यार्थे । इण्डेपेण संदेश ! बविनेलं अवस्थेलं सरगारे औंग्रे वर्डी

बोहबवर) से ले करमानेन हाय है । से ल वाडवर्ग इच्छेएलं संस्था ! बुविहेलं मरतेन जरमारे ओवे व्यक्ति चा हायह वा, एत्य क से अंदर्ध करवायणसगीसे सर्वे समज मनय महाबार चंद्र , नम्बद्ध सहस्था, नर्मिता एव वमासी:- इच्छामि वा चते ! तुत्रस अंतिए केवलि वस्त्रसं सम्म निसासितन । अहामुहं देवानुष्विया ! ब्रा वस्त्रसं सम्म निसासितन । अहामुहं देवानुष्विया ! ब्रा

तर् णं समणे भगव महावीरे संस्थरस अन्धामण े..... तीसे य महद्वनहात्वयाए परिवाए धन्मे परिक हेंद्र । धन्मकहा भागिकात्वा । त्र्ए कं से संबर्ध कडणा कसमासे समणस्स भगवको महावीरस्स अस्तिए परि

0%1 H[4] वीव मटकता है। इस प्रकार के बाल सरव से भरता हुआ जीव अपना संसार बढाता है। यह बाल बरण की बात हैं। प्रत-- पण्डित भरण वया है ? उत्तर-पश्डित मरण दो प्रकार का कहा गया है यथा---पारपोपएमन और मनतप्रत्याख्यान । प्रदत्-- पादपोपसम्न स्या है ?

वत्तर- पादयोपगमम दो प्रकार का होता है- निहारिय (जिनके मरने पर अस्तिय सरकार किया जाय) और अनिहा-रिम (जिसके महमे पर कोई संस्कार न हो) । बह दीनों प्रकार का वादपीयसमय मरण (बहाको तरह स्चिर होकर मरका) नियम से प्रति कर्म रिन्ति ही होता है। यह बारपीधनमन का वर्णम हुआ।

प्रश्न-मक्तप्रस्थास्थान किसे कहते हैं ? वत्तर- मक्तप्रत्यास्थान भरण दो प्रकार है बचा निर्हारिश भीर अतिहाँरिम यह दोनों प्रकार का मरण शतिकर्म वाला हो

है। यह भशा-प्रत्याल्यान मरण / सान-पान का त्याप करके मरमा) का वर्णन हमा। है स्कारत | इन दोनों प्रकार के वश्वित नश्च से भरने बाता जीव भैरवित के अनन्त प्रवीं को नहीं पाता है। यावत् तार-वन को पार कर खाता है। यस प्रकार नरता हुमा और मार को घटाता है। यह पण्डित मरण की बात हुई। है रम्दन । पूर्वोक्त दा प्रकार के मरण से भरता हुआ अविद अपना तार बहाता है और घटाता है। वह मुनकर वह कात्वायनगोत्रीय न्य-दक संख्य हो

या (उस सरवा क्रान्ट हो सवा) । वह व्यवस कनवान वहाबीर को

सोच्चा, णिसम्म, हरू-तुर्हे जाव हिर्याह्मए उद्वार वरें।

उद्वित्ता समय भगवं महाबीर तिबखुता आयाहिण वदाः हिण करेड, करिता एव बयासी:~सहहामि व मेरे निश्वं यावयणं पतियामि च मंते ! शिमांचं पावयणं

रीयमि वां मते । जिन्तयं वावयवा, अन्मुहु मि वां मते । जिमांच पावयणं, एवसेस मेते ! सहसेमं मेते ! क्रांप तहमें अंते ! असंबिद्धमें अंते ! इच्छित्रमें अंते !

इिच्छमपडिच्छित्रमेश मंती से बहुआं हुउमें बहुई वि कट्ट-समर्थ भगवं महाबोरं , वंदह, समंसह, बहिता, हरे.

सिता, उत्तरपुरत्यम विसीमार्य अवस्कामह, अवहक्रीमण तिवहं च, कृद्धिशं च, जायच्याउरलाओं म एगंते ए

एडिता जेंगेव समने भाव महाबोरे तेंगेव उवापक

डवारिक्रता समर्थ मगर्थ महाबीर आयाहिण वर्षा करेड, करिसा त्राव-नमीतिसा एवं प्रधासी:-आहि ण भते ! स्रोप, पलिसे वं मंते ! स्रोप, आहितपरि

ण मते ! लोए जराए, मण्योग ॥। से जहाणामए

गाहायई अवारीत विश्वयावमाणीम, ज से संच

मथइ. अप्पमारे, मोल्लगुइए त गहाय आयाए एगंन

अवक्तमह । यम में नित्यारिए समाणे पक्ता, प्र द्रिकाए स्ट्राए, खेवाए, निस्सेयसाए, आण्गामि

बन्दना-नमस्दार कर इस प्रकार बोसा-हे भगवन् ! मै जापके समीन (आपके मुख्य से) केवलिप्रकृष्टित धर्म सुनना बाहता हूँ । (महाबोर भनवान् ने कहा) हे दैवान्धिय । बेसा ठीक मालूम हो वंशा करो, विसम्ब म करो । सरपदचात् अभव भगवान् शहाबीर ने कारवायनगीत्रीय स्कारक को और वहाँ एकदित यही बारी समा को धर्मीपदेश दिया। यहाँ धर्म-कथा का वर्णन करना चाहिए। सब यह कारवायमगोत्रीय स्थादक समज जनवान महासीर के मुक्त नि धर्म भरण कर उसे हुस्य में धाण्य कर हवित हुमा, सहुध्द हुआ, वावत विकसित हृदय वाला हुआ। वह बाडा हो आतः है बीर सहे होकर अमल अनवान बहाबीर की तीन प्रशंक्षणः देकर इस प्रकार बोला-हे सगवन् ! निर्धन्य प्रवसन में सं धादा रसता है, हे मगदन् । में निर्याय प्रदचन में प्रीति रक्षता है, है भगवन् । में निप्रांच प्रयचन में वृद्धि रखता हूँ, हे बग्दन् । से नियंत्य प्रवस्त को स्वीकार करता है। हे भगवन् ! यह इसी तरह का है है अगवन । यह सत्य है है अधवन ! यह अवि-तप (मिथ्या मही) है, हे भगध्य ! यह असदिश्य है । हे भग-वन् । यह इच्छित-इष्ट है, हे समवन् । यह बार-बार अभिकथ-षीय है, हे भगवन्। यह इिन्नित और प्रतीविद्यत है, । जो ज्ञाप कहते हैं। ऐसा करके बहु ध्यमण ध्रमत्रन् महावीर की पन्दमा-ममस्कार करता है और फिर उत्तर पूर्व के दिशा बाग में (ईशान कीन में) जाकर त्रितकड, कुक्डी बावत बातु-गेर से रेंगे हुए बस्त्रों को एकान्त में रख कर अधन बनवान महाबार के पान आता है और धमण मगवान बह बीर को तीन बार प्रद-

शिक्षा करके पावत मगरकार करके इस बकार बोलता है.-

पित्रसड । एवामें वेदाणित्या । महस ति स्तार एरें भंदे, इंट्रे, कंते, विष, मणुक्षे, मणासे, पेडजे, देश्सीवर् संगर, श्रभुक्ष, बहुमए, श्रंडकरंडससमाणे, मा बं सीसं, मा ण उपह मा जं स्ता, मा जं पियास, मा है चोरा, मा जं साला मा शं दंसा, मा जं मसमा, मा बं बारय, विस्तिय, समिय, सन्नियाह्य, विविहा रोगांवर

परोसहोयसध्या फुचतु ति कट्टू एस में निस्थारिए सर्वा परतीयस्त दियाए, सुहार, लेमार, जीसेसार, आणुगांमि मत्तार पविस्तद्व । तं इच्छानि जो देवाणुग्तिया । सर्वा परवाविद्या सर्वाय भूडाविद्यां, सर्वाय सेहाविमा, मां मेड तिक्झाविद्यां, सर्वाय खायार-गोपरं विणय-वेगाँव

बरण करण-जाया मायावतियं धन्ममाइ विलये ।

सए वा सभी अगर्थ अहावीरे लवसं बाडचयाजां
सयमेव वस्वावेड. जाल-धन्ममाइ वस्त ह एसं देशाणांत्वस् एव निष्ट्रियां एयं निसीह धरण, एयं तुर्गेष्ट्रियं मूर्ग विष्ट्रियां एयं निसीह धरण, एयं तुर्गेष्ट्रियं मूर्गित्रम्यं, एवं मानिसावं एवं यहाएं यहार्यं पृत्रिः भोतेहः सत्तेहः सत्त्रमेणं सत्रामस्वयं मनि है। माप) (१९ है मगवन्। जरा और मृत्यु के हुन्थ से यह संसार बात पहा है,

विशेष कल रहा है और आशोध्त-प्रदीप्त हो रहा है। जैसे कीई गृहाय अपने घर में आप कम आने पर उस घर में जो अस्य

मार वाली और बहुरूत्व बासुर्वे होती है उन्हें लेकर एकान्त में बला जाता है। प्यांकि कह गृहस्य विश्वानता है कि इस धर में से प्रशासामाम निकाला आवे तो वह आगे या पौछे मुझं हित-कर, मुसकर, बुशलक्य और बस्याणक्य सवा युव्य वरम्परा बाला होगा । इसं तरह है देवान् प्रय । मेरी अस्मा की एड प्रकार का सामागमक्षय है सीच यह इंट, कान्त, जिय, सुम्बर मनोहर, स्थिरता वाला विडवामधात्र, सम्मत, अनुमत बहुमत प्राप्यकों के कारिक्य के सदान है इसलिए उसे सदी. गर्की, वस, त्याम, कोर बाध दा सर्व द्वीय-व्यव्यः, सत्त-विस-वक्त मीर सिप्रयान वर्गेश्ह अनेक प्रकार के रोग, प्रावधानक पंडाई त्या परीयह और उपतर्ग हानि न वहुँचावे ऐहा वरके यदि से निमे उसे बचा भूं तो मेरी आत्मा दृष्टा पालीक में हितकप, सुक्ष हेर कुराल कप, बस्यायक्रय और पृथ्य वश्वदर। हेप, होगा सिल्ए है देवानुप्रियों से बाहता है कि से आवर वास प्रयोजत के पृश्वित होस प्र'तलेहकादि विवाद मार्च स्वा'द व्ह. भीर भे यह चारता है कि आप स्वय ब्रह्म हावार-गोवर दिनय, कार का पाल, भाषा श्वांत्य) (दरहांदरादि आदि धरवा स्यम वाला और संदम के किया कि आहार का किस्ट्री करने सहा धर्म कहें। तद समझ मगवान महावीर में बात्यादनाई में व स्वादक नी स्वयमेव वासा र सीर धर्मका उपदेश दिका कि है देवान-श्य (इत प्रकार कलमा चाहिए, इस प्रकार राष्ट्रा रहना बाहिए, इस प्रकार बेठदा चाहिए, इस प्रकार सीना काहिए

दस वंभचेरसमाहिठाणा

सुर्य मे आवर्त तेथं धनवया एवमवताम । इह सह मेरेहि मगवतेहि दम अमचेर-समाहिठाणा वस्ता। वे निवस् सोवबा निसन्य संश्रमबहुले समाहिबहुते पूर्वे गुतिबिए गुत्तवंत्रवारी समा अध्यम्ते विहरेणता । तंत्री: विवित्ताई गयनाराणाई मेदिला हटह से दिलाये । ती इन्थी-पमु-पडामाहलाइ सदणामणाइ सेविता हटई मे निगांधे । त कहाँकति चे । आयरियाह । निर्मादर्ग चल् इत्य-मनु-पत्रम शंगलाई गयकामकाई रोडमाकार बमयारिस्स सम्बेरे सन्। वा कला वा विश्विता श मयुष्टितियाता वा, अर्थ, वा स्थोपता, उत्ताय रहे था. मित्रजा, बीट्ड किय दा र सार्यक का क्षेत्रणा, देवनि-बद्धभात्री धन्माओं अंग्रेज्ञा । सरहर की *पुरिय पर्य वंदरी* महलाई स्वभावभाइ संस्था हुवह से विमाये ॥ 🖓

नी इंग्डीम कर्रे कहिना हथ्ड से निसंगें । ते की कि के 3 अपर्यक्षण (निस्तुतक कस्यू इस्टीर्स की क्ही भाग)

1.

7

r É

FO.

М

(ફ્રા

di

Ŋ,

eş#

ηħ

11

न्यानर्थ-समाधि के दस स्थान

पुणमंत्राधी में बान्युत्वामी से इस प्रकार कहा-है आधु-भन् ! सुना है उन भाषान् ने ऐसा कहा-- बिज शासन में स्वित्य प्राथमों ने ब्रह्मचर्च समाधि के दस स्थान कहें है जिस्हें हैनकर और हृदय में दारण कर धुनि, संबाधुरट, सबरपुट,

ति मुनकर और हृदय में यारण कर यान, सवसपुष्ट, सबरपुष्ट, ति स्वाधिपुष्ट, गृहित्यों, से गुल्त, जिसेहित्य, आहरा अहासारी बन स्वाधित स्वाधित हो कर विषयरण करे। वे हुछ अपार हैं १) सो, पड़ा और मुमुसक रहित उपाय्य तथा स्थापक स्वाधित स्वाधित हो सिर्माय बहु। ब्याग्य है। जो स्वी यहां

और मर्नुसक सहित उदाध्यय और स्थानक का सेवन करना है वह निर्मिय नहीं कहान सकता है।

य नहीं कहला सकता है। शिष्य में यूक्-ऐसा बयों कहा जाता है

शानार्थं कोले-स्त्री-वहा-सर्वसक सहित उपायंव तथा सानार्थं कोले-स्त्री-वहा-सर्वसक सहित उपायंव तथा मुक्ता-मुक्ता-स्त्री-वहा-सर्वसक सहित उपायंव तथा

स्पानक का सेवन करने कांने अञ्चलारों सांध के बहुतवर्ष में शका (बहुवर्ष पानं पान पानं?) उत्तवन होती हैं। जचवा दूसरों की प्रका हो सकती हैं कि यह बहुतवारों हैं पानहीं?) आशीता सीया बीवर की बहुता है कि यह बहुतवारों है या नहीं?) आशीता

्रियुत्त वेशन श्री इस्त्रा) आहत होगा है, दिवंशिताता (इस्त्राप्ते (विद्यानिक स्त्राप्ते) हैं हितंशिताता (इस्त्राप्ते के लक्ष से साथ) होने हमसाई है, एकारत होने से वर्गत होने का स्त्राप्त होने से वर्गत होने का स्त्राप्त होने हो हो हो हो हो हो है हो हो है से वर्गत होने से स्त्राप्त होने से स्त्राप्त होने स्त्राप्त होने स्त्राप्त होने से स्त्राप्त होने स्त्राप्त होने से स्त्राप्त होने से स्त्राप्त होने स्

उपाधम, स्थानक, शासन आदि का सेवन नहीं करने वांसा निर्यन्य होता है। (२) स्त्रियों की कथा (शृतार कथा । नहीं करने बाला

हो निर्पण्य होता है। सिख्य के पूछा-ऐसा

मसेज्ञा । तम्हा सालु नी निगांचे इत्यीणं इतियाह मगी हराई मधीरवाई आलोएआ दिवसाएक्सा ॥४।

नो इत्योगं पुजुतरिस या दूर्मतरीस या नितंतरीस या जूदयसई वा दह्यसई या गीयसई वा हित्यहर वी। र्पाणयसदं या, कदियसदं या, विलिवयसदं वा, मुनेती हबह है निम्मये । तं यहिबति चे । आवरिवाह । निर्मं यश्स छात् इत्यीण कुटुवरसि वा दूर्मतरीत वा मितंतरीत

या कृद्धनाई का श्रामहं या गीमनई या हात्माना वा यगियसह वा कंदियसहं या विलिवियसह वा मुनेवाणस वनगरिस्न वाचेरे संका वाकंता वा विद्यानित्ती वा सन्दर्शनगना, भेदं वर लभेगना, उत्मायं वर पाउणि^{ज्ञा}।

दोहकालियं या दोगार्यकं हवेश्जा, केवलियम्हामी घम्माओं भतेनमा। तम्हा सल् नो निगांचे इश्बीणं 👫

तरीत या यूनंतरीत या जिलंनरीत वा कूरयसहं वा वर्ष सह वा गीयसई दा हतियसई या व्यागियतई वा करिय सरं या विलियियसरं या सुणेनाणे विहरेण्या ॥५॥ मी निर्मार्वे पुश्वरयं पुश्वकोलियं सन्तरिता है^{ही} से निग्मये । त कहमिति चे । बायरियाह । निर्माणी तः, पुरवस्यं पुरवसीलियं अनुसरमाणस्य बमयारिर मुमचेरे संका या कंडा या बिद्वनिष्ठा या समुद्रविज्ञा

हेंद्री शांध) (१०७ भग हो स्कला है । इसकिए निर्धान्यों की स्टिब्स को मनीहर और

भागित इतिहासि निर्माण निर्माण का दिवादी की मनहित आहे भागित इतिहासि की हो से देव ना चाहिए और स उनका विवाद दरना चाहिए ।।४।।

(५) सक्कों की टहुँ की धोट से बहुत के वर्ष को वोट से या बीत को ओट में हिन्दों के कुनित (कोस्त के कमान) दावत, पीने के ताब, गीत कि शहर, हैसने के काब पति प्रकृत के तहर, क्षीतक ताब भीर विकास के तहद नहीं कुनने वाला दिसंस्य हैता है।

शिष्य ने पूक्त-ऐसा वर्षो ?

साचार्य में ने-स्ट्री को ओह से, मत्त्र के वर्ष नी और या भीत की ओट में त्रित्रयों से कृषित करता, रोने के करता व के त्राया, मेंस से साम के तित्र प्रस्ता के इत्तर, व्यावह करता विभाव के सामी की त्रामी सोत्र हिल्लामी के सहक्यों में सा विभाग के सामी सामा सामा है हैं, इस्त्रायार्थ कर के हो कारता

बनाइ प्राप्त ही जाता है, बीर्घक्षणीत रोग हो व्यर्श धे गृक्षेत्रजिल प्रकृषित धर्म से आरट हो सबता है। दमस्पिर ही। भीर पर्देक्षीओंट ने शाकीत सीओंट से कृतित टरस, रु तरं, पीर कर, हिमन दाय, स्तरित द्वार्य, शाकारन सं बनाप के सार्थों को सामुने गरी।

(६) पूर्व (तुरुष्य शेवन में) जो भोग घोमें हैं. या हमें गाप को रतिकों आपे को हो उत्तरहा हमाध्य म के ने बारण निर्मा तेशा है। तिस्य ने पूछा-पुरेशा क्यों ? आपानी केले-पूछे गीर पूर्व मंद्रकारों का हमाध्य करते हाहि हसूम्यारी छाडू के कह लियजनाणस्त समयादिस्त संगत्ते हे संदा वा हंगा व विदिनिष्ठा वा समुप्यांजजजना भेर्य वा फ्लेम्बर, वस्मार्य सा याजियज्ञा, बोहकातिय वा रोगायक ह्वेजमा। देशक यजसायो यक्ताप्रो मेसेजना । सन्हा संस्तृ नी निर्मार्थ विद्यामुवादो ह्विज्जा ।(९)।

नो सह रूब-रस-यंग्र कायाण्यावी ह्या है तिसंवी से कर्मार्थात वि आयरियाह । सिरावेयस्त राजु सह रूब-रस-रामण्याविस्त स्वयाहिस्स सं-विदे संका ने रूल-रम-रामण्याविस्त स्वयाहिस्स सं-विदे संका ने रूला या विहानिस्हा वा समुत्यिजजना, प्रेर कर्मार्थे या पार्जिणजना, दीह्बार्टियं दीराग्रेकं में हुदेवना। के किलग्रस्ताओ शहमाओं भंतेयजा । तर्हे संस् गो सह रूप रस-ग्रेय-फाराण्यादी स्वेयज्ञा से निराते । स्टर्म सम्मेयस्तमाहिटाणे ह्यह ॥१०॥

हवंति इत्य सिलोगा । ते जहार-जं विधित्तसमजाइण्णं, रहिएं इत्तिद्वरोज य । यंभवेरस्त रक्ष्युर, जिल्लं तु तितेवए ॥१॥ मणवरहाप-जजजी, कामराग-विवइदणी । समवेरस्यो सिन्द्यं, यो-कहं तु तिवज्रत्। १२॥ समें च संवयं बीहि, संबह स अधिवक्षणं । समचेरस्यो विभन्द्, तिब्बसो परिचज्रत्। ॥१॥ 1 111

हे बहुत्यरे वे तांदा, कीता, विविधितता उत्तम होती है. बहुत्वर्ध टा पर हो सबता है, अन्याद प्राप्त हो नवता है बंधिकासीन रीर देश हो जाता है और यह केवलि-प्रक'पत ग्रम में भारट हो सकता है। इसलिए साम को बारीर की बिमुचा (टाय-टीप) मही हरना बाहिए ।

केंद्रे। बीच है

(१०) सन्द-रूप वस-मन्छ-रपर्दा आदि द्वन्द्रियों के विषयी में वो मामनन नही होता है वह निर्यन्य है। जिल्ला ने पूछा---ऐता वर्षेति आचार्य बोला-दाव्द-रूप-रम-गन्ध-रपर्श से आसवत होने बाले ब्रह्मचारी नायु के ब्रह्मचयं में टाका, क्रीसा, विधिक्तिसः बत्पप्र मोती है, बदाचर्ष का सक्तम होता है, उन्माद प्राप्त होता हैं, दें पंजालीय रोग पंता होता है और केवलि-प्रकृषित धर्म से भट होता है। अत.सामु को दान्द-स्व-दस-पंछ और स्वर्श में मात्रका नहीं होना चाहिए। यह दसवी ब्रह्मचर्य समाधि श्यान । वह इस सम्बन्धी इसीक बहे बाते हैं। अब इस प्रकार है:-(१) यहा वारो को सहासर्व की रक्षा के लिए स्त्री, पशु और गर्नाक रहित एकारत स्थान का सेवन करना चाहिए।

(२) बहाबर्प में रत रहने बाला पिक्षु मन भें शीध पैदा करने वाली और काम-वासना की बढ़ाने वाली स्त्री-कथा का वागकरे । (३) बहावर्य में रत रहने वाला विश्व दियमों के परिचय

हो समा पुन. पुन: म्हुंगारबर्धक स्त्री-स्मार्जी को (या श्त्रियों 🌥 हे साथ पुत्रः पुत्रः क्याधार्ता प्रसंग्र को } सदा के सिए छोड़

सुद्देय सुद्देयं शीम् हाय-मुशाशियाणि मः। ययोग क्रसवाच च, अद्रमार्थं पाण-मोमणे ॥१२०

शत्तभूमश्रमीट्टं च, कातभोगा य दुरन्या । मरस्तत्त्रभाषेतिहरू, विस तालवहं जहा ॥१३॥

बुज्जाए कामभीये थ, निष्वसी वश्यिजाए। सकाठाणीणि सम्बन्धिः यज्जेज्जा विश्वहाण्य ॥१४॥

ग्रम्मारामे चरे भिक्त्यू, ग्रिइमं ग्रन्मसारही । ग्रम्मारामे रक्षे बते, ग्रंगचंरममाहिए ॥१५॥

थेय-बाणय-वंधाःवा, जबस-रक्तहत-विज्ञरा संगयारि नमंत्रीत, दुवकरं जे करीत हो ॥१६॥

एस खडी धुवे निच्चे, सासए जिल-वैमिए । सिदा सिन्झन्ति चाणेण, सिन्झसति सहावरे । १७॥

~असराध्यमन १६ अ० १^{५५}



मोनस-मगो

बह गरे ? कह गर्दे ? बलगारे ? वह सप् ? कह भूगतो भारतो पाच कल्य ग बंध है ।।।।।

क्षयं करे अन्न चिट्टे अन्नमध्ये क्षयं सए) जय भुंजतो भासती वाव कः मंत्र बधइ।२॥

सन्वम्यव्यम्बरम् सम्मं भूषाहं पाराजी। पिहिमासबस्य बतस्य पार्व सम्बं म मार्थः ॥१॥

पढमं नाणं तओ दया' एवं चिट्टइ सव्यसंजए। अञाणी कि काही ? कि वा नाहिश छेव वावने ।।।।

मोचवा सागड कल्लामं, सोच्या जागड वाहरी।

चमवं वि जानइ सोच्चां म छेयं त समायरे ॥५। को जीवे यिन जाणइ, अञीचे यित जाणइ। र्भायाञ्जीको स्रयाणंती कहं सी नाहीइ संजम ॥६॥

मोश-मार्ग

क्रिया पूछना है:--

हैने बसना चाहिए है के वे खड़ा रहना चाहिए ? की ठना चाहिए ? देते संभा चाहिए ? केंस स मा चाहिए और ते बीन्मा चाहित् ? उन्स विचार्ण दिस प्रकार करता हुआ ीर पादकर्य का बला मही करता है ? आचार्य बाले-

दसमा के साथ (उपयोग-विदेक पूर्वक) बसमा चाहिए, तमा के काप कहा रहता धाहिए, दलना के साथ बैठमा गिति।, इत्रा के साथ से ना चाहिए । इत्या के साथ काता मा और यतमापूर्वक बोल्ता हुआ कोव वायकर्म का सन्ध शैं काता है।

सम जीवीं की अपनी आहमा के समाम समझवे वाले. , म्बीकाय आदि पूर्ती को (अंदों को) सम्यक प्रकार में देखने ाले कर संस (आसव) की शेक्त बाले और जिलेखिय जीव तो पाय कर्म या द्वाच मही होता है।

'यहले ज्ञान और फिर दया' इस विद्वान्त पर ही सारा विम वर्ग रहा हुआ है । अज्ञानी बया करेगा ? वह कल्यान

भीर पाप की बचा समझेगा ? शास्त्रों को सुनने विही कल्यात्र का ज्ञान हीता है, शास्त्रों हे सुनने से शी पार का स्वरूप मालम होता है, बस्याण और सबस्याण वे'तों का झ'म अहम्ब सुनने से होता है इसलिए बीनी की मुनकर जाने और जो श्रेयहरू ही उसका आधारण करे।

को जयको भी नहीं जानता, जो अजीव को भी नहीं कानता तथा जो ओव और अजीव दीनों की नहीं श्रामता ----

को भीये वि वियाणह अभीवे विवाणएं क्षीयाऽभीवे वियाणले से ह नाहीह संतर्भ गणी ज्या जीवमनीये यहो वि एए वियाणही

सीचाडजीये विद्यानती सी ह नाहीह संत्रमें ीशी जमा जीवमजीये यही वि एए विद्यान है। तमा गई बहुविहं संस्थ-जीवान जानह 1811 जमा गई बहुविहं संस्थ-जीवान जानह । समा पर्ण ज याव च जांगीवर्ज से जानह ॥

समा पुष्णं च पाय च संग्रं सोवसं च जाण है। १। । । साम प्राणं च पायं च संवसं च जाण है । साम प्राणं च पायं च संवसं च जाण है । साम प्राणं च संवसं च जाण है । साम प्राणं च संवसं च च साम है। १०॥ जाया निव्वस्त्य भीए के दिवने च च साम है। । साम प्राणं च साम प्राणं च साम साम साम साम प्राणं च साम प्रा

जया चयक सनीम सरिमतर प्राहिरं । तया मुंडे भविलाणं वश्यद् शालगारियं । १९२॥ जया मुंडे भविलाणं वश्यद् शालगारियं । त्या संवरम्बिश्वः धन्मं फामे अणुलरं॥१३॥ त्या संवरम्बिश्वः धन्मं फामे अणुलरं॥

लया संवरम्बिक्ट्रं ध्रध्यं कासे आजूनरं । सवा सुगढ कम्मरयं अवीहिक्त्सं कडं ॥१४॥ ज्या ध्रुवड बस्मरयं अवीहिक्त्सं सर्वं। हया करकता नाम दक्तचं साधिमक्ट्रद्वार्थ॥ वेदा प्राम् **(१**१९

 को जोड को खानता है और अजीवों को जानता है वह शेवासीयों को कानने वाला हो सबस के स्वरूप को स्वाम म्बता है। अर तीव और अजीव---इन डोनों की जानता है सब विदेश को विदिश प्रकार को गतियों को जानता है।

नरं सब जीवों की विविध शतियों को जानता है तब पुष्प-पा वीर बाध-मोश की जानता है। तप्र-पुष्य पाय-और वन्ध-मोटा की जानता है तथ दिन्य-

और मानुविक भोगों से विरयत होता है। क्षव दिश्य और मानुविक मीगों से विश्वत होता है तक बाह्य भीर माध्यन्तर संयोगों का त्यान करता है।

वर बाह्य और आश्यान्त्र सयोगों दा स्वाय करता है वृद्धित होकर अनगार धर्म में प्रवजित होता है । वेद मुरिश्न हो वर अन्तार धर्म में प्रवस्ति होता है तद राष्ट्रप्ट तक्र वय भेग्द्र ग्रमं बाश्यमं क्रमा है (यान्य करता है)।

क्रम प्रारूप्त नवश कर बोध्ठ हाये का बातन करता है सब महोति (अलान-निध्याप्य स्त्य) वाद से सवित कर्नक्षी एक को युक्त कालता है। बर सप्ताम पश्चिम कर्स क्याँ एक को शुन द्वाना है नह

गार्थिक मान भीर रर्शन को प्राप्त जरना है। सर्थीन वेडकतान

भीर केशम वर्तन क्रांन क्रांन क्रशा 🚦 :

भया नायभवं नामंद्रीयं अधिवाषणाः। सया कोम्बनानं च ।तमा वाणः केवणे महिती

क्षया कातवन्त्रीत च निणे काणद केवणी है तया जाग निव्हतिसा गाँउनि वश्चिमत्र । १९४०

लया लोगे नियमिता हेलेनि वडियम्म सया करमं सविसाम विद्धि वड्छ सीरमी 111611

मया करमं व्यविताण निद्धि गण्डह नीरभी तया लोगमस्यवस्यो विद्धां हुवह साराओ ॥१९॥

शुह्मायगस्य सम्बद्धः सायश्चात्रम् तिगामसाहस्य।

उदछो ज्यापहाबिश्स इस्तष्टा सोश्यद्द तारिसास्स !! सर्वःगुण ग्हाणस्य उत्रज्ञमह्-स्रोतसंजनस्यस्स । परीतहे जिणेतरस सुलहा सोश्यह सारितगरत ॥२१।

~-महाबीर वाणी १६०-१९८

प्रश्रं दश्यान और देवलदर्शन प्राप्त होता है तथ जिन देश्यों होकर मोक और बलोक की जानता है।

पर पर जिन और वेबली होकर लोकालोक को जानता देवीवी शारीक कर शंकेशी अवस्था अंगीकार करता है। वीयों को रोप कर शैसेशी दशा अमीकार करता है तब कर्मी Di दारे क्षेरक ने रहित होकर सिद्ध यति थे जाता है। , वर रभी वा क्षय करके सर्वया कर्य-रज रहित होकर रे "त में जाता दे, सब जोक्त के अध्याग पर स्थिर होता

भेर शास्त्र शिद्ध हो साता है। बोमापु गुळ (कारा मुख) का स्त्रोसुपी होता है, शाता िर गानावित रहता है, जो बहुन श्रवन करता है तथा जी रिश्रोद्या है निए अमीपांती की बारबार छोता है, गुम

में को सक्तांत जिल्ला कुळेल हैं।

को तसीमुन की प्रधानताकाला स्थल सुद्धवाली, त्या और संदाय में रन पहलेबाना और वरीयहाँ की जीतने त्या शांश है एते कार के किए सदयीन समझ है।

-- महार र बाद्या १६०-१६८ श्रो पुत्र संदोगी (माना दिना प्राद्धिक सदीतों) की सीव हा क्षांत प्रांत बाएकनो हे कार्य का साहक बाद में जनमें

का कोती से आजवर मही हंग्ना है उने इस बाहान कहते हैं। हानम महान में कई कार्र काहित बाधा है, क्षेत्र बाद के राशास्त्र के बाह्यण नहीं ही काना कर में पहले हैं। सूनि हर्र

द्रा बारा, और कश्वार द्रा क्षण्या बारा का की की beit ang in mini

Are & List afe be g Lat seift, wire a & be-And had bet a cast a gilled a be bet a And may & gas de des garres at a sail कर देश की बाला है। देश दरदे में बहुत होते हैं।

जरम् हो । से चन त्युवाचक रिट्ट में व वर्ष है। वर्ष कर कर प्राप्त जहां अनुवार रक्तीर कर्षावाच को स्टब्ट हे कि के आप कर्षाकर से द्वापाच के चन हो उन्हें हैं। क्रोनर में तीर क्या करण

च वर्ष कर्नेत्रामा क्रांक्स करवाना व

भवना वारोपवात सं द्वारणा नावाचन हरा। इसी संरोग का वाप र देश्यरका स्वित का अस्तिशात से सर सर्पारा । बर्शाक उसके सर्वे स्वित अस्ति स्वीत होते का कार्यो अनुवे अस्ति सर्वे हुई स्वरं स्वयं स्वत्रे हो परिवासनीय है

इसलिय हैन्तर के अधिरयान की अपेशा वही श्यापी । देश्यर को धार्या या प्रत्य सावन अभि न अभाव पर मंदि

जिल तीन साधेन करते हैं — १) घड . मरान आदि छाड़ी बीटी थो में ग्रीड दिवी रविन कहात ही निमित्र होती देंगी किन नामूर्य अन्तु, बे सायेक्य दिनाई देना है, उत्तरन की उत्तरिक, कोई प्रस्त होना आदिए।

२) सभी शाली अच्छे वा हुरे कब काने ने वर कोई हरे कमें का कम नहीं चानना भीर कार्य स्वय जब होनें से दिनी खैनना की अंगा के जिला कल देने से मसमर्थ है। इनियं कार्य खानियां की वो मानवर बाहिन कि दिवर नी आनियां से क्रम कम सोमाकार के

क) हैएवर एक ऐसा ब्यक्ति होता चारिए गि वो तर प्रति हो। अरि मुक्त के वो को अवेशा को क्रिसर्व हुए दिलेखाँ हो। इसिएए क्याय का का सामनहर्शक हुई। दिन बर्ग से पूर साने वर साने पुरत क्षाय है स्वयहाँ आहे हैं।

नान पर समा युक्त अयोन् ईश्वरही आते हैं। को वहले जाओप का समाधान — प्रतः सतत दिनी कक्षा नहीं बना, वह सदा हो से है। ही, इनमें पारदर्नी

(१२५

म राते है। अनेक परिवर्तन ऐसे होते है कि जिनके होने में म्तृप मादि प्राणियमं के प्रथरन की अपेक्षा देखी जाती है, तथा हि परिदर्तन मां होते हैं कि जिसमें दिसी के प्रयत्न की अवेद्धा कि एता। ये जह तत्वों के सबह सबह के सबीकों से उत्कर्ता, हेर, त्रिया मादि शांवतयों से बनते वहते हैं। स्वाहव्यार्थ मिट्टी, क्यर आदि घे.जों द इक्ट्रा होने से छोटे-घेट टील का वहाड रा बन हाना, इग्रर-बग्रर पानी का प्रवाह प्रिष्ठ जाने से उनकी ररी हव में बहुना, भाष का पानी रूप में बरसना और किर से रणो का माप क्य बन जाना, इन्यादि । इसलिये ईरबर को मृष्ट वा बतां मानमे की कोई सहदत नहीं है। (ध) दूसरे ग्राक्षेप का समाधान-प्राची जैना दर्म राने हैं, देशा उनको फार कम के द्वारा मिल ही लाता है। इस बर है, और प्राणी शवने विचे बरे बर्ग वा कल नहीं चाहते यह हैं है वर स्टान में रखना बाहिए कि बीव के बेतन के संग र वर्ष में देशी प्रवित्र पंत्र को बातों है, कि जिससे वह अपने करां वृदे वियाकों को विस्त तस्त वर बीच पर प्रकट करता है। रमेशाह यह गारी मानता कि देवत है रहबाछ के जिला है सर क्ये तीत देने में सम्बं है। यह इतना ही बहता है कि. बल हैने के लिए हिन्दर गय देनन को प्रश्ता मानने की कोई अक्तर रही है। दर्यों प मनी यीष येन्य है। ये दीया कर्म कार्स है अहरे मन्त्रपट पटकी परि केंद्री द सरमार प्रवरी पृद्धि पेती हो दव साता है; जिसमें हुरे रक्ता म राज पर भी है : इस्ता स राजे पर भी दे हेना कृष कर बेठते हैं कि हर इस्ता स राजे पर भी दे हेना कृष कर बेठते हैं कि हर इ. हो १८६ने कर्यो तमा बार कर करते हैं है हैं इ. हो १८६ने कर्यो तमा बार किन जाना है। इसे बहुना है इस्ते और बार को ने कार्य भिने दिये वर्ष वा वन्ना करी बाता वेदत हैं। हो भी दिये वर्ष वा वन्ना करी सवता वर्षा है। ही भी दिश बार पार ही होने हारण है। इस्टर्स एक प्रकृत पूर के दहा है पने कोड़ झाला है। देव

कि त्यास न लगे. सो बचा किसी सग्ह त्यान एक सबती हैं। इंडबर फर्नृश्वादों बहुले हैं कि इंडबर की इंडजा से मोंदत होंका करें, अपना-अपना फल्म प्राणियों पर प्रकट करते हैं। इस पर कर्मकादी करते हैं कि कर्म करने के समय परिलामी? सार जीव से ऐने सहतार पढ़ जाते हैं कि जिनसे प्रीरात होंका करते जें कर के करते के समय परिलामी? करते जीव, कर्म के पात को आप हो घोगते हैं और कर्म उन पर अपने सल को आप हो प्रोणते हैं।

(1) तोसरे आक्षेप का समाधान:-ईडकर चेसत है और

नीय भी चेतन, फिर उनमें सम्तर ही भूगा है ? हाँ, मनार इतना हो मकता है कि, जीव की शक्तियों आयरणों से (बरो है है और ईश्यर की महीं। पर, जिस समय जीय अपने आवरण की हटा देता हैं, उस समय हो उमकी समें। शांक्तमाँ पूर्णक्म में प्रकाशित है। जाती है। फिर, जीव और ईश्वर में विश्वमता किंत बात की है विध्यमता का कारण जो ओहालिक कमें है, इसके हेट जाने पर भी ददि दिएलता बनी रही सी खिर मुन्ति हैं। क्या है ? वियमता का राज्य संसार तक हो परिभित्त है आप नहीं । इसलिए शर्नेबाद के अमृतार यह मानने में बार्यात गहीं वि सभी मृत्रत मीव है:वर मी है । केवल विद्यास में अम वर यह बहता कि ईडवर एक ही हंता वाहिये, अखित नहीं । मनी भारता साहितक हुन्हि से इत्यर ही है। केवल कामन व साहत है श्रीरे-मोर्ट जॉक कव से देने जाने हैं-एह सिद्धाल समी मी भागा द्वित्रहार धवट गार्म के लिये पूर्ण बल बेला है। क्षेत्राद भनुष्य की वृद्धि की स्थित करता है:-

इत को की या परशंक से सम्बन्ध रसने बारे किही से अब मनुष्य प्रशृति करता है तम यह तो असन्त्रम हो है ही मांग)

ते, रवे दिशो न किसो विष्टन का सामनाम करना पडे। स**ब** सबरे हर की थोड़े बहुत प्रमाण में शारीरिक या मान-कि बिन बाते ही है। ऐसी दशा में देखा जाता दे कि, बहुत को बज्बन हो जाते हैं। घबड़ा कर दूसरों को दूर्विन ठहरा ण नहें कोनते हैं। इस सन्ह विपत्ति के समय एक तरक बाहरी पित वह काने है, दूसरी सरफ बृद्धि अस्विन होने से अवनी प्त विकार नहीं देती । सन्त में मनुष्य स्वयूना के कारण काने प्राप्त्य किये सब काओं को छोड़ बैठता है और प्रयतन हें शास्त्र के साथ ग्याय कर की गला घोटता है। इसलिए स्त मनव दम समृत्य के लिए एक ऐमे गृह की आवश्यकता है ह, बो उनके बुद्धि-नेज को स्थिर कर उसे यह देखन में अदब र्भुषाये, कि उपस्थित-विष्ण का असली दारण क्या है? जहीं कि बुदेमार्थों में दिकार किया है, यही बता खता है कि ऐसा हि, क्षम का मिद्रास्त ही है। मनुद्रव का यह विश्वास करना विहिए कि, चाहे में जान गर्द या नहीं; लेकिन सेरे बिहन की रा ..., पार् न जान नकू था नहा। राष्ट्रित जिस हुदय-भेतरी व अनला काण्य मुझ में हो होना साहित्। जिस हुदय-न जनका चारण सूत महाहाना चार है। वृत्तिका पर विदन-विदा-युश उनता हूँ, उनका बीज सी उसी निमित्तों हे समान उस विघन-विध-वृक्ष को अकृरित होने में कवा-वित् साथ कोई श्यवित निमिस हो सकती हैं। यर वह दिस्त का भार नहार त्यावत ानामस हा सकता है। पर नत्या कर प्राप्त कर विश्व नहार कर की मान्य की खुद्धिनंत्र की अस्विर कर हैता है, । जिसमे बहु अडबन के जसली कारण को अपने में देल, म तो उसके लिए दूसरे दो कोसता है और न घवडाता है। एसे विकास वाका । अप दूसर को कोसता है और न धवकात है, कि जिससे साधारण सकट के समय विक्षिप्त होने बाता वह दशं विरक्षियों को कुछ नहीं समझता और संभी

सा वाजमानिक काम को पूरा कर है। महता है। महता है। महता है किसी भी काम की वाजमार है। जिसे चरितृमें हारिय मीर्ट मान्य सरवा चाहिए; सो एक मात्र समें के निस्तात ही ने सकती है। आसी और तुकान में जैसे हिमालय को तिस् विकट रहता है, बेंगे हो साल अनुकार में के समा सामार्थ के दिवर पहला है, बेंगे हो साल अनुकार में के समा सामार्थ

में स्वर रहना, यहाँ सक्या सन्द्रास्त हैं; में हि रूत रात अनुमयों से जिल्ला रकर सन्द्रप्त हो अवती माथी गर्जा है है सैयार करता है। पन्तु या निरंद्यत है कि ऐता सन्द्रपत, के लिक्कल पर विश्वापर दिसे दिला कभी आ नहीं सही करते सही कहना वहता है कि ब्या स्वरहार, क्या परवार करही सही कहना वहता है कि ब्या स्वरहार, क्या परवार करह की कहना वहता है कि ब्या स्वरहार, क्या परवार

काह क्षेत्र सिद्धान एक-सा उपयोगी है। इस का लिए बा केटला के सम्बन्ध में राक सेवस्तूनर का दो विचार के जानने बोग्य है। ये करते है— "यह सो निश्चत है कि कम्मन का उसर मनुखा ने यह बेहद हुआ है। यदि जिसी सन्ध्या को यह मनुष्य पे कर्ममान समस्या के सिवाद भी मुझ की दो हुए भी नेन प

धर्मभान अपराध के विवास की नृत्त की तो हुए की नेना की है बह मेरे पूर्व जन्म का ही कल है; तो दह तुराने दर्भ की है हा की मनुष्म की सरह शास्त्रभाव में जाता है कि सहनतिक स्थार के कहा कर को सहन कर और कह मनुष्म करना मी जाता हो कि सहनतिक स्थार कहा कर प्रकार का मानुष्म की सरह सत्ता की सता हो कि सहनतिक स्थार को मानुष्य हुगाना कर पुरुष्म का स्थार की मानुष्य हुगाना कर पुरुष्म का स्थार है तो उसकी कि सामुद्ध हुन्ही को जास सहती है तो उसकी के प्रस्था आर हो आप होगी। अर्थ

्वश कोई को कमें नन्द्र नहीं होता, यह नीतिसास्य का मर पान का वाल-संरक्षण गायनाये पन समान ही हैं। व दनना ही हैं, कि किसी का नारा नहीं दें के विस्ताय के सम्मय्य में कित

1 124

की भी।

ता सों न हो पर यह निविधार सिद्ध है कि कमेमत सब से जिंद महि भागा गया है, उससे कालों अनुष्यों के कच्ट का रहें और उसी मत से मनुष्यों को बतमान संकट झेनते की सि देश काने तथा प्रविध्यत् जीवन को मुखादने में उससान

ंतरा कान तथा प्रविध्यत् जीवन का मुधारन व राष्ट्रीं का आवस्यकता कव और किस लिए हुई ? क्षेत्राद को आवस्यकता कव और किस लिए हुई ?

विश्वीव स्त्र हुआ और (२) वह वर्धों ?

(१) पहले प्राप्त का वारा (१) पहले का प्रित्हांतिक (१) पहले प्राप्त का वारा प्रमुख्या और ऐतिहांतिक (१) पहले प्राप्त का का कारा प्रमुख्या के स्वाप्त प्रमुख्या है। पर प्राप्त का सावस में सूर्य और लोगे का सोम है। किसी सावता किसी के प्राप्त का सावस में सूर्य और के प्रमुख्या के स्वाप्त के स्वाप्त का सावस में सूर्य के स्वप्त का सावस में सूर्य के स्वप्त का सावस में सूर्य के स्वप्त का सावस में सूर्य का स

्वसूषं मही है।

पण्य जैनेतर जितानु और इतिहासयेगी जैन वहन

पण्य जैनेतर जितानु और इतिहासयेगी जैन वहन

राच्या की विज्ञा नन-नव किये भानन के लिये तैयार नहीं।

राच्या की विज्ञा नन-नव किये भानन के लिये तैयार नहीं।

राच्या की वीना एंतिहाधिक प्रमाण के आधार वर किये तीये

राच्या की मान केने के तीनक को नहीं सहसाने वाद कात निर्वकाति की स्वत्य की स्वत्य है ति इत समय जो केनार दे तियानक्य प्राप्त की स्वत्य है ति इत समय जो केनार दे तियानक्य प्राप्त की स्वत्य व्यवस्थ स्वत्य की स

का विवा है। समय के प्रधाव से मूल वरतु में बुख व वर्तन होता रहेता है, तबादि झरवादा न मं, र त्यनित्वसं सं, इस्तियों सं और देशन्यायं किन्ति संति में ईडवर-विषयक ऐसी बल्बना थी कि जिनने सर्वति एक का यह विड्यान ही गया था कि जगन का उत्पादक देंग्रे हैं हैं, बही अच्छे या बूदे कर्यों का जल कीयों ते भोगवाल कर्या कर होने के ईडवर को प्रत्याक किया अपना फल पूर्ण मही सकते, चारे दिनाये हैं। उच्छ कोट कर भीय हो, यन्त्र प्रत्या कर के ईडवर हो नहीं सकता, अन्त को जेय कीय ही है ईवर गड़ी और ईडवर के अनुवह के सियाय संसार में नित्ते भी नहीं हो सकता, इत्यादि । इक प्रकार के प्रत्या संसार में नित्ते भी नहीं हो सकता, इत्यादि । इक प्रकार के जियान ये सावान् महावोर की ती मूर्ते कान वडी:--

(1) इन्द्राय ईश्वर का बिना प्रयोजन सृष्टि में हस्तसेय

, (२) आत्मस्वातःत्रय का दब जाना ।

(१) क्यें को दादिन का अज्ञान । हिन मुझें को दूर करने के लिए व सवायें बस्तुस्थिति

है तिए मगवान महाबीर ने बड़ी द्वान्ति व शब्दीरत!-कर्वाद का उपदेश दिया ।

(२) पष्टापि उम समय बोह धर्मकी प्रकलित बा, यरस्तु क्षेत्र इत्यर कर्नुस्व का सिधेध म या वैसे स्वीकार सीज इस विषय में युद्ध एक प्रकार से उदासीन से। उनकी

ना निषय में बुद्ध एक प्रकार से उदारान निष्या में बार शिया होरा हो रोक, सनमाब कैसाने का बार शिया के किस निष्या के स्वारं कर बहुत्य के किस निष्या के स्वारं कर बहुत्य के स्वारं कर बहुत्य के स्वारं कर बहुत्य के स्वारं कर के स्वारं कर बहुत्य के स्वारं कर क

स्तान था। इसलिए मगवान महाबीर के बर्मबाब के उपवेश का एक यह भी गृह गांध्य था हि— " यदि बाह्मा को क्ष्मिकमान मन निया जाय तो कर्म-विचाक को विश्वी तरह उपयोग हो मन निया जाय तो कर्म-विचाक को विश्वी तरह उपयोग हो महीं भरती। स्टक्त कर्म वा चीग और परकृत कर्म के भी का

मेरी नत्तो । स्टब्स कर्मवाधीय और वरकृत कर्मक समाव तभी घट सक्ता है, अब कि आस्त्राको न सो मुकाल नियमाना जाय और न एकान्त क्षणिक।

- कामना बलतो लोको कामना बलता पत्रा । कामनिर्वधना सता रबस्ताचीव वावती ॥

रम्मानवधना शता रचरसाणाव वावतः ॥ (असानिवात, क्लोटुमून, ६१)

६०-धंबक्यंव

पुण्य, बाप जादि कई ऐसे शन्द है जो सब दर्गनी है निर् साधारण से हैं। जितने दर्शन आरमबादों है और दुर्गन साधारण से हैं। जितने दर्शन आरमबादों है और दुर्गन सामता है। वहता है। बाहे उन दर्गनों को भिन्न-भिन्न प्रिया के बारण या बेतन के स्वद्ध में महमेद होने के बारण, बा का स्वद्ध पोड़ा बहुत जुड़ा-जुड़ा बात वहें, वस्तु हमें बीई सारदेद नहीं कि सभी आरमबादियों ने भाग आदि वर्षमंत

किसो न किसी जाव से क्यं का अगोकार किया ही है। इ पुष्य-वाथ की कसीटी निष्पारक, कवाय आदि कारणों से जीव के द्वारा थी किया जाना है बही 'कर्म' कहलाता है। क्यं का यह करन

प्रयोग कहलाता है। कम का महिला है। कम का महिला स्वर्णिय का आवक्ष प्रश्नक में होनी है। उसी कि स्वर्णिय का आवक्ष में अपने कि स्वर्णिय का स्वर्णिय कर विश्वास कि स्वर्णिय का विश्वास का स्वर्णिय का स्वर्

लाधारण कोक यह कहा करते हैं हिन पान, पूर्व सेता सार्टि विधामों के करने में ग्राय करों का (गुण्य का) की होता है और दिल्ली को करत कर्डुबाने, हश्यादिस्त काम करें सार्टि से हागुन कर्ष का (शार का) बार्ट्य होता है। पराणु प्री पार्टि का निर्माण करने की सुग्य कनोरी कर नहीं है। वर्षी दिली का दिल्ली कर करने की सुग्य कनोरी कर नहीं है। वर्षी दिली को कर्ट्य करने की सुग्य कनोरी कर नहीं है। वर्षी

करता हुना ची मनुष्य, पुच्च उपार्जन कर सकता है। देनी सरह बान, पुजन खादि करने बासा भी पुण्य-उपार्जन न कर समी-कमी पाप बांध लेला है । एक परीपकारी चिकित्सक, क्ष किसी पर शास्त्र-विद्या कश्हा है तब उस गरीज को वरट क्ष्याय होता है, हिसैथी सामा-पिता जासबड़ा रूडके को उस उसकी इंद्या के विद्युत प्रदाने के लिखे यहन करते हैं तब उस बालक को दुल सा मालूब पडता है, पर इतने ही हैं। न सी यह विविश्तक अमिक काम करने बाला माना जाता है और स मित्रेयी माता- विता ही बोची समझे जाते हैं । इसके विपरीत जब कोई भोले लोगों को ठमने के ईरावे से या और किसी शुक्ल-शाशय से वाम, पूजन, आदि कियाओं की करता है तब वह पुष्प के बहरे पाप बाँशमा है। अमएव पुष्प-बन्ध या पाप-सम्य की सक्त्री क्सीटी केवल अपर-अपर की किया मही है. किल समकी यथार्थ कसीटी कर्ला का शालाय ही है। शक्त माशय से जो काम किया जाता है वह पूज्य का निनित्त और बरे आशय में जो काम किया जाता है वह वाप का निमित्त हीता है। यह पुष्य-पाप की कसीटी सब की एक-सी सम्मत है। क्योंकि यह सिद्धांत सर्वभाग्य है कि-

> 'श्वाहकी भावना यस्य सिद्धिभविन ताहकी ।'' ५ सक्सी निर्लेषता

साधारण कीम तह समझ बेटते हैं कि व्यक्त क्रान स् प्रकार के अपने की पुण्य-पाप का केप न क्रमेंगा। इससे से उस काम की तो छोड़ देते हैं, पर बहुता उनकी सामसिक क्रिया नहीं एउटती। इससे से क्षण्ठा रहने पर थी पुष्य-पाप के देव से अपने को तुम्हा मही कर संकते। अतएव विचारमा वाहिए कि सक्यों निर्ह्मणा स्था हैं। देव (बच्छा), सामधिक स्नोक की अधाने कवाय को कहते हैं। यदि कवाय मही है तो उत्तर को कोई वो दिया आत्मा को बन्धन में रकते के लिए समये नहीं है। इसते उत्तर यदि कवाय का वेग भीतर वर्तमान है तो उत्तर ते हुआ यान करने पर भी कोई अपने को बन्धन से एड्डा नहीं रहा। यान परित वोत्माल सब काह जल में बनल को तार किला रहते हैं पर कवायवान कात्मा योग का रवांग रकता भी तित गर गृद्धि गही कर सबसा। इसी से यह बहा जाता है कि शामितित छोड़ कर जा काम किया जाता है यह याग्र कही होता। मतलब सक्वी निर्वेषण मानशिक दोग दे त्याग में है। यही विशा कर्यदास्त्र के जिल्ली है, और यही बात अपने भी कही हुई हैं:-

े 'सन एव समुख्याचा' कारचं अध्यक्षेत्रयोः १ अन्त्राय विवयाद्वानिय सोक्षे तिविवयं स्मृतम् ॥" (संज्यानिवर्षः }

६ कर्ष का अनावित्य

विचारक मन्द्रम के यन में ग्राम बठता है कि समें साहि है या मनाहि ? इसने उत्तर में जैन दर्गन को क्या में है विची महिल की मदेशा में लाहि मीर ब्यान को स्वेदात है सि मार्थ प्रिकार को मदेशा है सावि है। यह से कर मार्थ में है कि यांची स्वतं-दिव्दे , गोने-बानी, उन्ते-बंबते किसी में लियो करता है। इसमें यह तिंद्र होता है कि वाणी मार्थ प्रकार को महत्यान में स्वाप मार्थ स्वाप स्वा

सरामत है । इसिन्ये कमें के प्रवाह को स्वादि वहे बिना दूसरी गति हो नहीं है । कुछ लोग स्वादित्य को सल्यट स्वाहरा को उत्तान से प्रवा कर कमें-न्यदा की चार्तित बतानी कला बाते हैं, पर ये अपनी बूर्ज को अस्वियता से कल्यित होय की स्वाहान कर के है है । इस्त हमें कि स्वमादान प्रवे सादिवान है तो बीच पहले हैं। सहायत कि स्वमादान प्रवे सादिवान है तो बीच पहले हैं। सहायत प्रज-स्क होना चाहित, किए तोच की क्यांक्र स्वा कारण है और वहि कचेंचा पुर-युक्त जीव की क्यांक्र हो ताता है तो मूलत हुए बीच की वर्षात्र होंगे, ऐसी बसा में मूलित हो सोया हुना संसाद हो कहाना चाहित । कसे-प्रवाह के स्वादित्य को और मूलत बीच के किए से संसाद में का वाद प्रतिदित्त वर्षात्र मानते हैं, खेड़े:-

उत्पवते बार्युकासते व ॥ १६ ॥ (व्यक्ति स० १ वा० १) सवावृत्तिः प्रायात् सर्वार्वतित्रास्त्रत्ता ॥ २॥ (क्रमें-साथ का कारम

क्रैतरांत में क्ये-कात के विकास, स्वित्ति, मानाद, कथाय मीर मोग में बीव कारण कतामां सह है। इतका संसंव विकृति हो (कदाय मोग में माना कारणों में है। इतका संसंव विकृति सर्वित्त समेर वरके कहा बाम मं कदाम ही कर्म-क्या का कारण है प्रतेक प्रदार है पर चन का क



किन किन साधनों की अपेका है ?

वैनशास्त्र में परम पुरवार्थ-मोश वाने के तीन साधन वतलाये हुए है:--(१) सस्मग्दर्शन (२) सम्मग्जान और (३) सम्पक्षारिच । कही कही ज्ञान और किया दो की ही मोक्ष का साधन कहा है। ऐने स्थल पर दर्शन की जान का स्वरूप-झान का विद्याय-समझ कर उससे अदा नहीं दिनते। परम्बु यह प्रदन होता है कि देविक दर्शनों में कमें, ज्ञाम, योग और भवित इन चारों को मोक्ष का साधन वाना है, फिर जैन बर्धन में तीन या वी ही साधन क्यों कहे गए। इसका समाधान इन प्रकार है कि भैनदर्शन में जिस सन्यक चारित्र की सन्यक जिया कहा है उसमें कर्म और योग दोनों मानों का समावेश हो काता है। बद्रोंकि सम्बक् खारित्र में भनीनिग्रह, इन्द्रियक्य, किसद्गृद्धि, सममाय और उनके लिये किये जाते वाले उपायों का समावेडा होता है । मनोनियह, इन्द्रियजय आदि सारिवक यस ही कर्म-मार्ग है और विल-इंदि तया उसके लिये की जाने वाली सहा. विश्व ही दोगमार्ग है। इस तरह कर्यमार्ग और योगमार्ग का समिल्ला ही सम्यक् चारित्र है। सम्यक् बर्रान ही मिनतमार्ग है, क्योंकि भवित में यहा का अश प्रधान है और सम्यक दर्शन की सदाहर ही है । सन्यम् जान ही जान मार्ग है । इस प्रकार जैन-दर्शन में बतलाये हुए मोक्ष के तीन कायन अस्य दर्शनों के सब माधनों का समय्यय है।



साता का प्रहण न होना हो उत्तरण थांछ है। परन्तु इत्तरण स्वात सहन है। किसी विवय का बाधक प्रमाण वहां माना बाता है तो धन पिवय को बानन की दार्वित रक्ता है और अप्त सायों बोजूर होने वर उसे प्रहण कर न सके। उदाहरणार्ध-क्रेंब, निहु के घड़ को बेल सकती है, यर जिल समय प्रकार, स्वात सार साया परने पर की वह स्वाहण कर के से कैस, निहु के घड़ को बेल सकती है, यर जिल समय प्रकार, स्वात सार साया परने पर को वह स्वित कर के म

हाइयाँ सभी भौतिक है। उनकी प्रशु-प्राप्तित हाते यहिन सिन है। वे मीतिक स्वापों में से भी रम्म, निकटवर्ती और निपत विकारों को द्वी करण-क्रमर से भाग सकती है। मुसपदार्तिक पात्र साहि सावनों की बड़ी दला है। वे सभी तक भौतिक प्रदेश में हो कार्यकारी निव्ह हुने हैं। इस्तित्य उनका सम्मीतिक-ध्रम्पत-सालमा को अन्य सकता । सन्, सीतिक होने पर भी इत्तियों की अधेशा अधिक शास्त्यवान है, स्वार्तिक प्रदेश कर कार्यकों के स्वरूप से सम्पत्त वांत्र किरता है-तक उनमें पात्र स स्वार्तिक वांत्र स्वार्तिक कार्यक्र काल प्रदर्शन स्वार्तिक प्रदेश स्वार्तिक वांत्र स्वार्तिक कार्यक्र काल प्रवृत्ति पात्र स प्रदेश की स्वार्तिक स्वार्तिक कार्यक्र काल प्रवृत्ति की स्वार्तिक । प्रदेश सिन सीत्रा स्वार्तिक स्वार्तिक काल प्रवृत्ति की स्वार्तिक । प्रदेश सिन सीत्र स्वार्तिक स्वार्तिक काल प्रवृत्ति की स्वार्तिक । प्रदेश सिन सीत्र स

"इतिश्रामा हि चरना स्त्रान्तर्गर्गानी है तक्षम हरीन प्रमा मानुगर्गानामा न

इस्तियं बज्बल सन से आता वो को स्पृत्यों न सर देती हुई बात है कि अतिहास स्टान सर्ग करने व क्रिस स्पेन से बेतान है कि सी कब सीरन हो जना के व हिसों भी बातु बा अतिहास नहीं होता । इसने सह है कि बाहुरी विवसी में बीड़ सराने साने करियर सन



मानवा जीवत है। जिस समय बेतनाव प्रशिक्त का विकास होने स्थात है उसकी व्यक्ति होती है—यस समय कराय प्रशित का तिरोमाय रहता है। सभी बेतन-प्रक्ति बाले प्रशित कर वर्ष प्रक्ति के सिराम के सिर

यह देवा जाता है कि किसी वत्तु में कब प्रक दारित का प्रामुंक होता है तथ उवसे दूसरी बिरोधियो धारित का तिरो-गाव हो जाता है। वरण्तु को धारित तिरोहित हो जाती है कह सबा के किये नहीं, किसी क्षम अनुकृत निमित्त मिलने पर किर भी उक्ता प्रामुक्तां वह जाता है। 1 इसी प्रकार जो दारित प्रामु-प्रांच हुई होती है वह भी सबा के लिये नहीं। प्रतिकृत निमित्त मिलने हैं। उसका तिरोगाव हो जाता है। प्रवाह जायो पानो के मलामें को सीवित । वे गरमी चाले हो पाय कर में वाला है। होती है। किर दौर्य आदि निमित्त मिलने हो पानी क्षम में बरवते हैं और अधिक गीत्रस्व प्रायत होने वह स्वस्वकर्य को छोड़ बस्ते कर्म में प्रतर्थ को प्रायत कर लेते हैं।

इसी तरह घदि जहरूव-चैतनरव दोनों शक्तियों को किसी एक मुक तरवगत मान के, तो फिलाब्या हो स ठहर सकेगा । करोकि चेतात्व समित के धिकाल के कारण जो आर चेता (आयो) किससे जाते हैं वे ही गय, बद्दाच शक्ति का विकास होने पर फिर जड़ हो जायेंगे । जो पायाण आदि प्रायं आत अह क्य में दिलाई देते हैं वे क्यों चेतात्व हो जायेंगे और चेता कर क्यों दिलाई देते हैं वे क्यों चेतात्व हो जायेंगे और चेता कर से में दिलाई देते हैं वा समुख्य, प्रमु-पक्षी आदि प्राणी कभी



ट ही भाग)	_
, Mi	त १
वीवशारियों के देह की दिल्ला करन	iñ
शीववारियों से देह की दिल्ला के कि ना बर करें बहती। वे और पीतिकवारियों है कि ना बर करें	1 %
La Life Hatt, tand ad Bot " . E Lin Bo	भो
	र के
Ala Mildietta 7 did Pr	15 व्य
म नाम पाया है, उनको स्रोहरू के कि	.7271
कों जातवीशायन कोन हैं है कि के कि के कि	में जो
में अपने आवित्वारों हे के	और न
Enifem uinte mit pront	,रहरणों
में अपने आदित्यारी है के कि का कर के हैं के का कर के हैं कि का कर के कि का कि का कर के कि का कर के कि का कि	सहरका
पुरा समाधान पुनर्जाम 😹 🍃 =	ो उन्न में
सारक्ष से लेकर जामकः क्षेत्र	की उन्नमें
A A DE CONTRACTOR AND A STATE OF THE ASSESSMENT AND ADDRESS OF THE ASSESSMENT ADDRESS OF THE A	(में उन्होंने
विका की कहि के ?	ं की अवस्था
परिचाम नहीं कर करते	वार्वे सीख ली
BY SER OF STREET	वर्ष की स्वस्था
हुव ताव कर बालक का है, के बातक (यहा की कि है दे हों बरियास नहीं कह बसं बरा कुछ भी काम नहीं का परिवास कहें तो है।	सात वर्षकी
Arrest Dr. Will May 1	क्या कि, इस्मीन
क्षो क्या क्षोपना करे हैं निर्माण करे	करना पढा, कि
and Grant and State and St	बराबर ज्ञाम नहीं
many is stilled	र कम तेरह शाया
nin un viel met	१२ वें जनमी हुई
यदि यह कर्ड का	त्या से एक नाटक
7 27 x	ना में बई-माटक
1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -	ilw .
क्यांठ मात	1 1
के बहुन्त	- 4
~ '	

असर डालक पर गर्मावस्या में ही पड़ना शुक्र भी सामने बही प्रदम होता है कि बालक को ऐ

विज्ञेष क्या ? यहां तक देला जाता है कि कि विसाओं की दिल, जिस बात यह बिलक्ल ही म बातक सिद्यहस्त हो जाता है। इसका कारण की परिस्थिति हो नही यानी जा सकतो। वयोगि न्यिति और बराबर देश चाल होते हुए भी आ में जिलार स मर्तन की जुराई देली जाती है। म यह परिनाम बातक के सब्युत साम ततुओं का यह शंका होती है कि बालक का देह माता-शीलित से बना होता है, किर चनमें अधिश्रमान् श्चालक के मस्तिष्क में आये कहां से ? कही कहीं सी ज्ञानशक्ति बालक में देशो जाती है हही, पर हैं, कि ऐसा मुयोग वयों चिला? विसी किसी का काता है कि माता-पिताकी येग्यता बहुत गडी च श्चतके सी ब्रयन्न करने पर मी सहका गेंबार ही र यह सबको विदित ही है कि एक साम-मुग हुए ही बासक भी समान नहीं होते । माता-दिशा हरा है ने वर भी एक साधारम हो रहता है औ men me men fi bei mi four ebe in mi

बासक की योग्यता माता-विता से बिहरूल जुदा होती है। ऐसे अनेक उदाहरण देखे जाते हैं। बिस्कुल अपद होते है और सड्क पूरा शिशित

संमोग नवीं हुआ ? और इसका क्या समाधान

वता है। एक की इक्छा सकत होता है और इबरे की असवत । को ग्राहित प्रवान प्रहाबीर में, जुड में, ग्रकरावार्य में में, बहु उनके माना-चिताबों में ने थी। है स्ववाद की प्रतिमा के किस उनके मुक्त मिलाओं में ने थी। है स्ववाद की प्रतिमा के किस प्रतिमा के स्वाद कारण मही, वर्षों के देवचान्न मूर्ति के हैं प्रवास की की प्रतिमा के स्ववाद मार्गित के हैं व्यवाद मार्गित के हैं कि इसरे सित्यां के स्वाद और की शिवाद में, फिर बचा कारण हैं कि इसरे सित्यां का लोग ना सकत की सिन्यां और है सकता, चार्मित की लागी के सिन्यां में में प्रतिमा की सित्यां में में भी। अच्छा, और नी कुछ प्रामाणिक स्वाहरणों की मुनियं।

सही, परानु से अपना उद्देश अवदय सिद्ध कहंगा-यह मादनं मंनुष्य के हुदय में जितना यह अकटा सकती है उतना यह अग्य कोर्ट पायना नहीं प्रकटा सकती । यह ची नहीं कहा जा सक्या कि उतने भावना निक्या है; वधीकि उसका आधिमांव नैतानिक और सर्वेदिति हैं। विकासवाद मंग्ने हो चीतिक रचनाओं को देश कर जह तस्वी पर स्वा किया गया हो, पर उसका विषय बेतन था यन सकता है। इन सब सातों पर स्थान देने से यह माने बिना संतोध नहीं होता कि सेतन एक स्वान तरह है। यह जानते या अनवासने जो अस्छा दूरार सम्में करता है उसका चल, उसे स्थेया अनवासने जो अस्छा दूरार असे पुनर्जन्म के बक्कर में यूनका पहला है। बुद्ध सात्रान् में ची मुन्नाम्य माना है। पथना निरोदय त्वारो स्वस्त प्रजेश निर्देश सम्बक्षकृत पूर्वजन्म को मानता है। यह पुनर्जन्म का रावीतार

आहेंसा की कसौंटी

स्विरत्न थी अगरश्चम्बन्नी महाराश्च

चारे बंग पर्य हो, चारे कोई जाय पर्य हो पहि गहराई के ताब कायवा, चिन्ता हो। यानत किया जाए तो एक बात व्यस्ट विश्वत 'हैंगी कि प्रत्येक पर्य का मान या हृदय महिका में हो रहा हुआ है। हुमारा रारोर दिनाम ही कायान चारेन हो, जब बुक वर्ग में ही जोर काज-चौड़ा भी चर्चों महो, जब तक उत्तमें दिन काम काता पहुता है, दूबर उर-टक करता है, तभी तक बहु वर्गोर करता है और प्रकृत वर-एक पान इरन्त करता है। तभी तक बहु वर्गों है करते मर हुमारा मधिकार रहता है। कियु वर्गों ही हुबब को हुस्तन के गरा भी गहरब हुई, हुबस का स्थरन करा-धोरेर के तिच् ची पका कि पड़ामारी नाक्त मारीर सहता बंगा होना हो है। कियु की स्वस्त है। कियु की पका

हुदय, तरीर में डोटी-ती जगह रफता है-किर भी तारे राहोर का उत्तराशीरत, सम्मुण प्राण्यानित, यशी में है-किरत है । हुदय का उत्तराशीरत होता और रणत को डोक-डोक फेटता रहेता शी प्राप्त की प्राटार रहेता आरिर रहेता । यदि हुदय मुम्स हो मान, असकी हुस्तत बद हो जाय, यह कान करना छोड़ दे तो क्या घरोर रह महिता प्राप्त कार रह कानाथी। सरीर तान तक रहता है यह तम मारमा वसमें रहती है। जारमा के निकल जाने के बाद प्रारोर प्रस्तान की स्वार्त कारों के विश्वास चलते हैं और जिनके कवम देखकर आज हम चलते हैं वे कहते हैं कि जब तक दारीर में आत्मा है तभी तक दारीर, घरीर है। आत्मा अस निकन जाती है ती यह मिट्टी का देश है। मृतपूर्व के हरिटकोण है भसे हो स्यूल भाषा में उसे करार कहते रहें। तो जो बात इस शहीर के सम्बन्ध में रेखते हैं और सोचते हैं, वहीं धर्म के सम्बन्ध में भी है। कोई वर्ष श्तिना ही केंचा क्यों न हो, उसका विवादान्ड कितना ही अप और घोर वया न हो, तरस्या किननी हो तीय वर्षों न ही सीर ऐमा जान पड्ता हो कि, दुनियाँ भर का बोझ उस धर्म मा क्यांक्र में अपने अपर ओड़ लिया है, किन्तु जब तक उसमें महिसा की मावना रहेगी, शीवों के प्रति दया का शरमा बहुता रहेगा तथी तक वह धर्म वह विधाकाण्ड वह तप और वह परीपकार धर्म की कोदि में गिना अध्यक्त । लगी तक वस्य भी धर्म है, बान भी धर्म है नवकारती से लेकर छः महीने तक की तपस्था आदि कियाबाब्द बी धर्भ है । यदि उसमें से अहिमा निकल जायती किर वह धर्म नही रहेगा, धर्म की लाज रहेगी । वहां एक क्य में शधर्म ही होगा ! अहिंसा मूल में रहती चाविए किर चाहे वह चोडी हो वा ज्याडा हो । स्वृत्राधिक की बात यहाँ नहीं है । यहाँ तो यह बात है कि शहिता का बरा भी शंदान रहे तो किर वहाँ धर्म नहीं रह सबता। हवारा भीवन धर्ममय और विशट तय बनता है सप अहिसी

कें[ता वा वर्षत्र विद्या है, उसे सारवसी वृत्रा है। वृत्रा भी है~ ऐसा मा भगवतो अहिमा जा मा भीदाण विव सरचं।'

खता तो तावान है वह तत करत होता ? तो सबसे बड़े पावाम, अवत बंद है और उससे अवर विकार-वानमात्रों का वहां वहां है। आरम-वैरका, को सबसे बड़े पावान है, आपर हो तो बेंदे हैं, हमो जानेर के अवस तो विकासताम है दिस्तु दुर्चाय के अमार्व काल से हिता का वर्ष पका है। बाजा लबात पहिन रक्ता है और यह वर्दी गंब से तीज तक पढ़ा हुआ है। किए आस्म-वैदना के बेजी हो तो कि ही ? कत: बुत आस-वैदान के दर्धन करना है तो दिसा के बात वर्दी का स्तारम होगा। जितने अभी में यह कम होता जायमा, उसने हो अशी में आसा के दर्धन होते आयों और उतने ही बंधों में किए सम्बास

المراجع وورده مستدة مستداله مره والمراجع المراجع

महीं। किसी सास समय को अरूरत महीं। बुकान में ग्रेटे हो सब भी 'सतकी पुत्रा करो, मकान में भी उसी को शामने रखी। आदि ही करा-सी देर के लिए भी ओहराज न होने तो। जीवन के प्रत्येक सम में सीर प्रत्येक काम्यार में ग्रोहता की ग्रांतिक करो। अपनी मनोवृत्तियों की, अपने कभी को, अहिला को तराजू पर हो तोलो। अहिसा के

प्रति गहरी और आर्यह-गरी बावना विश्व में उत्पन्न करा। इस प्रकार हर जातह और हर समय उसकी पुत्रा होनो बाहिए। बादायी समस्त वह जो जैसे में एक बहुत बड़े वार्टीनक ही चुने हैं सीर जिनकी विवासकाराएँ एक्सीर रूप में हमारे सामने आई हैं, बीरे

तो भारमा को शाँको त्यांल कर बार्ते को । वे बोले --अहिंसा भूतानां जगित विवित्तं श्रह्म परमम् । --बहारवयम्पुरति

मह परमजहा, परमेश्वर, परभारमा कीन है रिहाँ है शिक्षेत्र कित कप है दिस अश्वावको के उल्लर में आवार्य करते है-इस संसार के आणियों के लिए साधारण प्राणियों के लिए भी और की विश्वाद साधक है उनके दिए भी साधारण प्राणियों के लिए भी और की

बिशिष्ट साधक है उनके लिए भी साधात वर्षम्यता भीतुमा है। अबि उसकी वजानना नहीं कर शके, तेवा नहीं कर सके तो प्राप्तान की उदातना या सेवा करने के लिये जो तुम चाने हो तो अवियेत ही सकता है, भारित हो सकतो है, किन्तु सक्वी ववासना एयं तेवा नहीं हो सकती !

शहिता को जब भगवान कहा है भी वह अपने आद में स्वतः अनन्त हो गई । वर्षीय को श्रायान हता है. वह अस्त होता है। दिसका अन आध्या वह श्रयवान केता ? जिमको शीम बेठ गरे वह और कुछ को ही. कि न्यू भगवान कहा है । क्वता । आधा में अन्त श्री कुछ को ही. कि न्यू भगवान कहा है। क्वता । आधा में अन्त श्री कहा भो मां श्री के नियं उनने के प्रायंक गुम की भो अपने इस्ता है। भगवान होनों के नियं उनने के प्रायंक गुम की भो अपने इस्ता है। भगवान होनों को नियं उनने के प्रायंक गुम की भो । वस यह मान-गुज अनश्व-असीम जन साता है तसी स्तावान् राजा सरता है। इसी प्रकार सारित्र में जब अनन्तता जा खातों हैं राजि गुन, बीचे और दूसरे प्रत्येक गुज अध अनन्त जन जाते हैं हैं राजि गुन, बीचे और दूसरे प्रत्येक गुज अध्यक्त बन जाते हैं स्वायक को प्रवादक स्वरूप की मानित होतों है। आईत्या जब मन्यान् हैनायक हुई, नो अनन्त है और जब अनन्त होतों उत्तक हुने द्वारक्ष होते के में साराच्या जोवन जान्य वार्त है और न कह पाते हैं। केवल-गुजे प्रवादक के पूर्ण क्या को जानते तो है किन्तु माणे है हारा पूर्णत प्रवादक में निर्मा कर होते होता है किन्तु माणे हैं हारा पूर्णत प्रवादक में निर्मा करित का स्वादक स्वादक होते हुए भी विसों से द्वारा मही कहा जार सकत, तो मूस सेसे को तो कहना आ विसों से द्वारा मही कहा जार सकत, तो मूस सेसे को तो कहना आ

किर को प्रोहता की बिराट झांकी हमारे सामने आई है और रगरी कही वह शांकी है कि सहाव है दूतरों दे सामने म आई ही ! वह इसनी विशान भीर विस्तृत झांकी है, जो हमारे लिए सो बड़ी से - १ कारा । प्रशास नाम पहले हैं और ज्ञाहनों को बातें करते हैं जान परता है बड़ी बारीकी में यून कर बते वर । सबह किरहीने पड़ता हु बड़ा बार्गिंग हु है वे बतलाने हैं कि—पह ही क्स जाना ह कहा गया है। महासमूद में से एक ही बूट बाहर क्रेंश गया है। यह अनन्तर्वा शाम ही वहा गया है। यह अन्यत्वी काश और एह बूंद की, बी आत्त्री में आया है, जनत्त्वमा में है। बह पूरा पहा भी नहीं नया; समझा भी नहीं तहीं विस्तार में है। बह पूरा पहा भी नहीं नया; समझा भी नहीं (बरतार में कुछ बोड़ा-मा बड़ा और समझा गया है, वह मी र गुजा की कहा की बास करा हिर थी की कुछ समारायी जी हार हो समापाय नहीं जा सकता हिर थी की कुछ समारायी जी हार्य है कुछ की बहुत कहीं बार के जी का कुछ समारायी जी हार्य का तानार विश्व करी वात है और उने आपको ग्रेंट के सार उत्त विधार महिवा है त्यहर को आपको समझना है अन्त हर सम्बद्धा है।

W E. s

क ना है कि आ को मानव बनना है या दानव बनना है? जब् मनुष्य के सामने मानवता और दानवता में से किसी एक को चुन सेने का सवाल नदा होता है तब अहिमा सामने आ कर लड़ी हो बाती है। अगरत-अननत काल से यह मंदरच हो मन में बरपन्न नहीं हुआ!

अनादि काल से प्राणी वानवता के कुवच पर शटक रही है

भीर वही-कही तर दानवता के आवेश में इतनी हिंसा की कि जमीन को निरोह प्रोणियों के लुन से तर किया । फिर भी उसे यह शकरप नहीं आया कि म मानव यम् या दानव वर्न् ? यह जीव एक दिन उस बदस्या में भी पढ पदा कि बाहर में जरा भी हिंसा नहीं का, उस एके द्विय और नियोद दशा में कि जहां अपना रक्षण करना भी अपने किए मुक्किल हो गया। बहाँ तो यह सकत्प आता ही वया कि मुझे मानव बनना है या दानर ? राक्षस बनना है या इम्सान ? मंतार चक में भटकता हुआ यह बाजी किस-किम गति एवं स्थिति में नहीं वहा है ? इस असीम समार में जितनी भी गति-हियतियाँ योगियाँ है, उन सब में एक-एक बार नहीं, अनात-अनन्त बार यह गया, रहा, मचर किसी भी स्थित में यह संकल्प नही जागा कि मही बनना नमा है-मानव या दामव ? जिस दिन आरमा ने सानते यह प्रदन सदा होता है कि पृश्ले क्या बनता है, उसी समय अहिंसा सामने आती है और कहती है-वृक्षे इस्तान बगना है ती समें स्थीकर कर मेरा अनुसरण कर, मेरे घरणों की पूजा कर मेरे सर्गों पर अपना जीवन उत्सर्ग कर।

अपनी जिन्दगी को यदि इन्मानियत के महान सचि में डालना है और मानवता के महान स्वरूप को प्राप्त करना है तो समझ ले हुआ। के दिना मानव नहीं बन सकता। इन मिट्टी के देर की आहार का किया और छोड़ दिया। इसके केने और छोड़ देने से सत्तत भार आहे। सब सहिता के मान सामेंगे,प्रेम के मान आगेंगे

न हो नवान दूसरों की बिन्टनी को समझने की विद्व स्तिता जानेगी रेशित्र में इस्मानियत आयगी और जितना-जितना अहिता िशार पर अमानवत आववा आर अवस्था जार वाया। उतनी ही भीतर प्रतबत्वेतना तथा ईश्वरीय ज्योति जायती जायती । मिशे रुवी प्रत्यन् चेनना अगेगी सभी दुरहर्म और वाप. सी ने तर बोर में घेरे कह हैं, शहरह झात खड़े होंगे। आनव, का भारत यह कह हा अटपट आप जरू है। कि भी हमी मुझे कटिनाई हो कि भे व्या करें, तब भारतान् गारि की प्राप्ता की यह स्वाच्या कुछ शहना स्वन्ताएगी !-

सारम्यत्वसूत्राता, सम्म सूबाड वासमी । पिहिमासबहस दतहस, पादबहम म सग्रह ॥

–হলত লুখ মত ধন্যাত 🤇 मुतार घर के प्राणियों को सात्री स्नामा के ल्यान समार

क्षी बहिता की द्यारचा है, वही अहिता का बारव और कहाबाख है और यही अहिना की महान क्योंटी है : जिल दिन जिल यही है सरने आप में जो जीने वा जीयनार तेजार बंदा है सही सीने का कृतात आव अ जा जाल वर्ग आध्यात वर्ग जाता है जाता आवाह हुनाई। इंदिहार कहन्न जात ते हुनाई। है नियं घी हैगा, तेर झादह हुनाई। के श्रीवन की वनवार करने की वानवना जाएंगी हुगरी की रिगार हों को अपनो जिल्लामी है समावदेखेंगा और समार दे तह आसी ्रा अवस्था करा विकास करा करा करा स्थापना करा क री सामका में सेटी जायंत्री सामग्रा के सम्मान स्थापना करा स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना नार कोनमानहरित के देशने तत्त्वामान और किए के देवता कि ार कारामानदा व अवस्था है, इसमें कोर दुन से कोई सीतक पुनक वादी केर हो करान है, इसमें कोर दुन से कोई सीतक शार की है जो बीज क्या त्यानी है बन पुनारे वा को स्टारी की भारत महा ए जानामा प्रतिकृति प्रतिकृति । अहारता मार स्थाप है, मार्थी मार्थित है के मार्थित महिलाई । स्थाप कर मेर्थ सहित्स दलांद है (मार्था अन्यास के दिल के कीन हुमारी की सरी को है बार से इनम् है कि कि सम्मान की दिल के कीन हुमारी की सरी को है बार से कृत्य कृत्य वार करणात्रा प्रत्यात्र करणात्र्याः करणात्र्याः वार स्वतास्यः कार्याच्याः सर्वते वार वार्यं क्षणां कर्त्यः क्षणात्रः वो अस्ति क्षणात्रः वार स्वतास्यः कारा बार अपना करू कर करके है क्या करके है कि कर कर है है सह सक्त करियों कर करके हैं क्या करके हैं कि कर कर है है सह धूयतो धर्मसर्वस्य धृत्या चैवावधार्यताम् । आत्मनः प्रतिकृष्ठानि, परेषां न समाचरेत् ॥

प्रमं के रहाय को मुनो और जितने भी मत-मताना है, तब को साँ मुनो कही इधर-उधर कामं-काने से प्रमं माना मही है। दुवर के प्रमं को भी मानुम करों। यर तब वानों का निभोड़ एक ही है कि प्रमं को भी मानुम करों। यर तब वानों का निभोड़ एक ही है कि प्रमं को भी मानुम करों। तब तब वानों का निभोड़ एक ही है कि प्रमं के प्रमं के प्रमं करने, मुद्दान प्रमं करात है। इस का मानुम करात है। इस प्रमं का निभाव करात, मुद्दान पहुँचना, बरट वहुँचना सादि सुध इसरों के लिए प्रशं त करों। यहां सब से यहां वर्ष है अपना साम में विवर्ध करात है। यो अपनित के सहस् पाव भो व्यक्ति के सहस् पाव भो व्यक्ति के सहस् पाव को व्यक्ति के सहस् पाव की व्यक्ति के सहस् के सात है। यो सात में प्राप्त के कोने का स्वार्ध मानुस के स्वार्ध के सात की व्यक्ति के स्वार्ध के स्वार्ध का स्वार्ध वालि की व्यक्ति के स्वार्ध के स्वार्ध के सात की व्यक्ति के स्वार्ध के स्वार्ध के सात की व्यक्ति के स्वार्ध के स्वर्ध के स्वार्ध के स्वर्ध के स्वार्ध के स्वार्ध के स्वार्ध के स्वार्ध के स्वार्ध के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वार्ध के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्

फिल साम संसार की यह दुवंदात है। यही ग्रेम जब दूसरों के लिए फर में हाम रुपेया, करका की धारा में बहेगा और समस्टि के क्य रे केंग्रा जायमा तो गही अहिंगा के सांचे में दलता शाध्या ।

रे हेन्ता जायता तो वही अहिसा के सांचे में दलता शावना । त्री आदमी अवने शन्यर बन्द हो गया है, स्थापों से शिर गए। बीर जिले अपनी ही जरूरतें और चीजें बहर । यूण माकूप होती हूं भीर उनकी प्रति के लिए दूमरों की जिन्दगाँ की लापरवाही करता है बीर वेसी लावरवाही करता है जैसी एक नहाँ बाज बादवर । नाम मी बिए एक ब्राइवर है। उसने नशा कर लिया है वह भीटार में बैठ काता है और पूरी रवनार में मोटार छोड़ देता है । सब मोटर दोड़ रही दें और ड्राइबर की मान नहीं है कि इस रास्ते पर दूसरे भा रिलने वाले हैं।इसरों ■ जीवन भी इस सड़ पर यूस रहे हैं, व ने ते वहीं हो है मेर को दार वसकी साम के का पर पूर्ण प्रवृत्त करें देश हैं और भोटार वसकी सोचतम वेय के साथ वीकी जर रही है ! रेवा यह बुद्धकर सहवा और हैमानवार बुद्धकर है ? महीं, क्रमी नहीं। इसी प्रकार की समुख्य अपने शिए स्वर्ध या बासना का पाला बदा हेता है और अवनी जीधन-गाडी को उत्पुक्त एवं ते ब पिति हैं छोड़ देता है कि दूसरे श्रीयन कुचले जा रहे हैं, मर रहे हैं. रिसी बसे सन्तर मी चिता नहीं है वह मन्द्य सी सरका मन्द्र RET E 1 गाडी की के प्रवाद में की डी पर की है दुर्घटनाया सत्तर ही

गार्डी को तेन प्रनार म कार पर का हु ह्याराया सत्तर हा ति हा है अतः अमें के काश घर के नाना माहिए। जिस मोरार पाडो में ने कम समा हो बचा उस गाडो को वाकाने का ब्रोकार किस स्वर ती है? से कहान गार्डी कामारा उपनोध है। कीवन की गारी को भी गाम का चेक सामार्जी । गाम कर के सामने पर क्षीयन-पाडो रवद भी कुर्तात रहती है और इसरों को भी कुर्तात रकती है। हुई, तो कोई इस्वर सीच कमकर बोटार बना हुई है, नरा नहीं हुआ।

रक्षा है और दिमाय को नरोताना रक्ष कर चला रहा है और मोटार को जैसे तसे महते-भारते ठिकाने वहुँचा देना मात्र ही उसका संक्ष्य नहीं है, किन्तु महक यर किसी को किसी प्रकार का नुक्रहान भी नहीं होने देता और समुझल दिकाने वर्ड्य जाना है तो वही सरवा और होजियार ड्राइवर है। किर भी मन्दय-मन्द्य है, कमी मूल हो जाती है, अस्तु उसर्व बचाने का पूरा प्रवाल करने वर भी कीई फेंट में आ ही गया या जब सामने कोई आदा और उसने बेह लगावा मगर बेरू फेल हो गया और गाडी नहीं दकी, तो ऐसी

ही तो आव भी जीयन की गाड़ी लेकर चल रहे है। गाड़ी की घर से बाहर न निकाल कर केवज घर के गैरेज में बन्द का देना, ही मोटर गाडी का उपयोग नहीं हैं। मोटार का उपयोग तो मैदान में बलाना है। किन्तु चलाने का उचित विवेश रहना चाहिये। इसी प्रकार जीवन में भी मन की बन्द करके मुला दी, जीवन की सारी इरहतें बाद कर वो और शरीर को एक गांम-विण्ड बनाकर कि तिस्वा लाहा है, सूर्वें की तरह निष्क्रिय पड़े रहना कोई धर्म नहीं है। महाबीर कहते है-जीवन को चलाने की मनाई नहीं है। ग्रह्म हो तो उस रूप में गाडी की बलाने का हक है और साधु हो

स्थिति में कहा सकता है कि वह उस हिसा के याप का भागी

तो सभी बलाने का हक है किन्तु बलाते वयत नशा मत करो सेमान स बती । मस्तित्व की साफ और सरीताजा रक्लो । स्थाल रक्लो कि जीवन की यह गाडी किसी से टकरा न जाय। व्यथं या अनुधित हद से किसी को कुछ नुकसान न पहुँच जाय।

तो इन सब बातों को ध्यान में रख कर ही जीवन की गाड़ी

मानो चाहिए। फिर मी कदाचित पूज हो जाव और हिसा हो पितो संस्य हो सकते हो, किन्तु अन्ये वन कर चलाजोगे तो सम्य मी से सकते :

एक बार तीक्षम ने स्तावात से प्रश्न क्या । उन्होंने अपने ही जिए ती किए पूछा-स्तावन ? जीवन में कहीं जिए तहीं किए ती का में कहीं जिल करों, ऐसी चाह बताइए वर्षीक बौजन वादमव है । खतरे दि भी पार कातत है ।

" -:-मो¦सडे रहो । ''क्कुसडे सहे भी पाव सगता है कि

ं - अच्छा, बंद जाओ ।

-पडे पड़े भी पाँच रुपता है। -तो मीन प्रारम कर हो । चूप रही। बीकी मता । सामी

" बोर्ग यहाँ जीवन का अर्थ है ? किन्तु चैन-धर्म के समाधान सरसे की यह बद्दित नहीं हैं। मध्यम् मुहत नहीं कहते कि स्वसने से बाद समाता है तो कर हो जानते । इस पर भी पाय कमे सो बैठ जाओं और रिकर धर्मर जाओं और इस साह भीवन को समाय कर हो। सारमानके धर्म में सम्बद्ध साधर वह नहीं हैं, को प्रधर गांधिरें कहे और प्यार एक कहर को पुद्मित को । बाद पाय गांध साथ! सन्नी अधिर हों। साम प्राची की स्वस्त पाय गांध साथ! है कि समुन्त । तेरी निष्यती सगर ५० वर्ग के निर्म् ने ती ५० और १०० वर्ग के दिग ने तो १०० वस और ज़बाद गर्म के दि तर ज़बाद गर्म पुरे कर, किस्तु तुल क्षात्र का स्थात दश दिल्ल

> त्रयं भरेत्रयं भिद्रः त्रयकार्ये प्रशंगणः । त्रयं मृत्रयां संस्थाः, यायकस्य संस्थद्रे ॥

-451 - 14 - 6 11 -

उपयुंदर माया के द्वारा वर पान महाश्वार का मतार के म सामही को बोधम सम्बद्धा है कि प्रायोध कारा प्रमाप्त के कारा क है हा क्याने में पराना रचना, विश्वक रचको । क्या हो सा बंदर बात नहीं हैं। गार रह मार्को हो गार विशेक कार्या । सामहा बोजना है तो भी मही दार्ग हैं। विशेक के साथ माशा, दिसे साथ बोली। फिर बाव कर्म गहीं बंधीने। याव क्या माविश्वक है

कत, विवेक ही सहिता की बगोटी है। जहाँ विवेक है अहिता है ओर जहीं विवेक नहीं है कही अहिता भी नहीं है। हि या यक्तावूर्वक काम करते हुए भी यवि कभी हिता ही बाव त हिता नहीं होगी। अनुवाध हिता नहीं होगी।

रे पार, रेर प्रानिक परीक्षा बोर्ड के पाठवकम में निर्वारित ृत्यों ना प्रतिकृत्य विन्त्रवार है। £.54 द्यीयङ् रुग्द राष कार कर रहेक बन्दक है। बद्दाल कर्न **⊶**/1 प्रति कर दिए। ०-१० १३ तन्त्रवित्तव सूत्रव् च्च कर हेरता १-१६ २१ क्वतालस्य नृतस् 9-50 ाः करवंशाः १-३० १४ दस्तावर स्तोत 8-58 Profe कर (पर्वत १-६० २६ देन बड़ी झांडी 0-5. CALLIN ES ET 8-54 रेर कारने हत्या १११ ई का कार १००० देव वाहुत मास्तीत 1-4 े हिंदी बर पह करते हैंदे की इसामूच्य 1-00 क्षेत्र कर किछ करते हुई बहुबड़ी हुंबई 8-40 क्षेत्र गर क्षेत्रका के विव हर्द बागा 1-04 لعالم أوامة 4-60 । १ श्वास्त्र दृष्यालोक 1-34 t-s. 12 ci estelles gan Betie main mil ofte gg ereite ba de ¥-40 9-13 As this sides will tak 99-0 15-0 Author ad Les ands 0-31 ा होता का (क्ट्रेसाकोट क्रांते)। 1: sages (5 245159) (-14 11 4 654 5 44 6:46